ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

वर्षः 67 | अंकः 10 | अक्तूबर 2016

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2073 मार्गशीर्ष की अमावस्या

लगेगी-28.11.2016 सोमवार दिन 3.20 बजे

उतरेगी-29.11.2016 मंगलवार सायं 5.47 बजे

सम्वत् 2073 पौष की अमावस्या

लगेगी-28.12.2016 बुधवार प्रातः 10.36 बजे

उतरेगी-29.12.2016 गुरुवार दिन 12.22 बजे

सम्वत् 2073 माघ की अमावस्या

लगेगी-26.1.2017 गुरुवार रात 5.01 बजे

अर्थात् 27.1.17 शुक्र. को सूर्योदय से पहले

उतरेगी-27.1.2017 शुक्रवार रात 5.36 बजे

अर्थात् 28.1.17 शनि. को सूर्योदय से पहले

धर्म स्थापना दिवस : संभराथल, फतेहाबाद, अबोहर, -23.10.2016 वार रविवार, कार्तिक बदी अष्टमी।

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

सह संपादिका
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 8059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित व्यवस्थापक के अतिरिक्त सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक सदस्यता : ₹ 100
आजीवन सदस्यता : ₹ 1000

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-56	4
सम्पादकीय	5
केसो जी कृत साखी छन्दा की 'मुकाम की शोभा'	6
जाम्भाणी साहित्य में वर्णित कृष्ण चरित्र	7
मरूप्रदेश में वाचिक अनुशासन के अग्रदूत-वील्होजी	12
नेपाल में नौ बीसे	16
नाथ पंथ एवं जम्भवाणी	18
श्री वील्होजी की वाणी : परिचयात्मक मूल्याङ्कन	20
बधाई सन्देश	23
गुरु जाम्भोजी : वैचारिक क्रांति के अग्रदूत	24
आनदेव को चित्त जम्भेश्वर उर ध्यान	26
आलमजी कृत हरजस (राग सुहब)	27
हरजस (राग धनासी)	27
बिश्नोई लोकगीत	28
सद्गुरु जाम्भोजी और आर्थिक विकास	29
वन्य जीव और उनका संरक्षण	30
गुरु जम्भेश्वर शोधपीठ स्थापित	31
बाल कविताएँ	32
समाचार विविध	33

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सबद 56

"दोहा"

दियो भण्डारो रूपै ने, वस्यो खिंदासर गांव।
जीया तो जुगती भली, मूवा मुक्ति सिधाव।

धरणोक गांव से हटाकर रूपे को खिंदासर गांव में बसाया तथा सिंवर गोत्र रखी। वहां पर भण्डारे का कार्य रूपे को सौंपा और कहा कि जीवन तो युक्ति से व्यतीत होगा और मृत्यु पर मोक्ष मिलेगा। ध्यान रहे कि उस समय चौबीस जगहों पर सदावृत भण्डारे चला करते थे। जिसमें जन साधारण की सेवा होती थी।

प्रसंग-24 दोहा

जमात कहै सुण देवजी, सुपात्र कहो विचार।
कुपात्र अरू दान को, निर्णय करो निरधार।

एक समय जमाती लोग सम्भराथल पर एकत्रित हुए और जम्भदेवजी से प्रार्थना करते हुए कहा-हे देव! आप हमें सुपात्र और कुपात्र के बारे में बतलाइये तथा हम किसको दान दे और किसको न दें। इसका भी निर्णय कीजिये। तब गुरु जाम्भोजी ने यह सबद सुनाया-

सबद-56

ओ३म् कुपात्र कूं दान जु दीयो, जाणै रैण अंधेरी चोर जु लीयो।
चोर जु लेकर भाखर चढ़ियो, कह जिवड़ा तै कैने दीयो।

भावार्थ- कुपात्र को दिया हुआ दान निष्फल ही होता है। जैसे अंधेरी रात्रि में चोर ने ही मानो धन चुरा लिया है धन लेकर पर्वत पर चढ़ गया हो। वह धन न तो वापिस ही प्राप्त कर सकते और न ही आपने अपनी खुशी से सुपात्र को दिया है, इस संसार को छोड़कर जीव अब आगे पहुंचेगा तो उससे पूछा जरूर जायेगा, तब वह कहेगा कि मैंने अपने जीवन में बहुत दान दिया था किन्तु उससे फिर यह भी पूछा जायेगा कि तुमने दिया तो अवश्य ही परन्तु किसको दिया। यदि सुपात्र को दिया है तो देना है किन्तु कुपात्र तो जबरदस्ती छीन के ले जाता है तथा आपके अन्न धन का वह दुरुपयोग करेगा तो उस पाप के फल में भी तुम्हारा भाग होगा तथा आपका अन्न धन खाकर शुभ कर्म करेगा तो उसमें भी आपको भाग जरूर मिलेगा।

दान सुपाते बीज सुखेते, अमृत फूल फलीजै।
काया कसोटी मन जो गूंटो, जरणा ढ़ाकण दीजै।

इसलिये दान तो सुपात्र को ही देना चाहिये। वही दान फूलता-फलता है और अमृतमय बन जाता है। जिस प्रकार से अच्छी साफ सुथरी जोताई गुड़ाई की हुई उपजाऊ भूमि में समय पर बोया हुआ बीज अनन्त गुण वाला हो जाता है। उसी प्रकार से सुपात्र को दिया हुआ दान भी। जिस सज्जन पुरुष ने अपनी काया को तपस्या रूपी कसौटी पर लगा दी हो, उस कसौटी-पारख में काया खरी उतरी हो तथा मन को एकाग्र कर लिया हो। संतोष धारण कर लिया हो। मन को एकाग्र करके जो ईश्वर ध्यान में मग्न होता हो अर्थात् चंचल मन को स्थिर कर लिया हो, अजर जो सदा ही जलाने वाले काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष, ईर्ष्या आदि जला दिया हो तथा उनकी राख पर भी संतोष, शांति, दया, कारुण्य रूपी ढक्कन लगा दिया हो, ताकि फिर कभी प्रगट न हो सके। ऐसे ही गुणों से सम्पन्न सुपात्र हो सकता है। यही सुपात्र की परीक्षा है। ऐसे लोगों को दिया हुआ दान अमृतमय फल वाला होता है।

थोड़े मांहि थोड़ेरो दीजै, होते नाह न कीजै।
जोय जोय नाम विष्णु के बीजै, अनन्त गुणां लिख लीजै।

सुपात्र अधिकारी को तो आपके पास यदि कम है तो भी उसी में से थोड़ा ही दीजिये, पर्याप्त है किन्तु पास में अन्न, धन, वस्त्र आदि होते हुए ना नहीं कहना चाहिये। यदि सुपात्र कभी अपनी आवश्यकता पूर्ति हेतु आता है तो आप अपना सौभाग्य ही समझये। इसी प्रकार से सुपात्र कुपात्र का निर्णय करके आप के द्वारा सुपात्र अधिकारी को दिया हुआ दान विष्णु परमात्मा के अर्पण हो जाता है। वही विष्णु समर्पण दान अनन्तगुणा विस्तार वाला हो जाता है, तो उसे स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। वह सुफल अमिट हो जाता है। **साभार - जम्भ सागर**

सम्पादकीय

जांभाणी मेलेः श्रद्धा व संस्कृति के संगम

मेले जांभाणी संस्कृति ही नहीं अपितु भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। यदि इन्हें संस्कृति के पोषक, परिमार्जक और संवाहक कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा। पारस्परिक मेल-जोल, धार्मिक और सांस्कृतिक समझ के लिए तो ये मेले सुनहरे अवसर होते हैं। यदि सामाजिक संगठन की दृष्टि से देखा जाए तो मेले सर्वोत्तम माध्यम होते हैं। कहने का अभिप्राय है कि मेले कोई सैर-सपाटे करने के लिए नहीं होते बल्कि इनका उद्देश्य अत्यन्त गहन व बहुमुखी है। बिश्नोई समाज व संस्कृति में मेलों को अत्यन्त ही महत्व दिया गया है। हमारे समाज में यह परम्परा अत्यन्त ही प्राचीन भी है। गुरु महाराज के वैकुण्ठगमन के पश्चात् ही मुकाम का फाल्गुनी मेला प्रारम्भ हो गया था। थोड़े समय बाद वीलहो जी ने मुकाम का आसोजी मेला व जांभोलाव के मेले प्रारम्भ किए। अब तो यह परम्परा बहुत आगे बढ़ गई है। जन्माष्टमी, धर्म स्थापना दिवस, निर्वाण दिवस, खेजड़ली शहीदी मेला के साथ-साथ हर अमावस्या पर स्थान-स्थान पर मेले लगने लगे हैं, परन्तु सबसे विशाल मेले मुक्तिधाम मुकाम में फाल्गुनी और आसोज की अमावस्य को लगने वाले मेले ही हैं, जिसमें पूरे भारतवर्ष से लाखों की संख्या में लोग पहुंचते हैं।

निश्चित रूप से मेलों की संख्या के साथ-साथ मेलों में जाने वालों की संख्या भी बढ़ी है। आज प्रचार-प्रसार, यातायात और सुख-सुविधाओं में वृद्धि हुई है, जिसका प्रभाव इन मेलों पर भी पड़ा है। परन्तु चिन्ता का विषय यह है कि श्रद्धालु बढ़ रहे हैं परन्तु उस अनुपात में श्रद्धा नहीं बढ़ रही है। मेले में जाने वाले श्रद्धालु इन मेलों में निहित गहन उद्देश्यों से अनभिज्ञ होते हैं। इसलिए ये मेले मात्र औपचारिकता बनने लगे हैं। आज समाज में जो दिखावे का दौर चला है, उसका प्रभाव इन मेलों पर भी पड़ रहा है जबकि श्रद्धास्थल किसी आत्मप्रदर्शन का नहीं अपितु आत्मावलोकन का स्थान होता है।

आत्मानुशासन किसी भी मेला व्यवस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक है परन्तु पिछले कुछ समय से हमारे इनमें से यह लुप्त होता दिखाई दे रहा है। और तो और यज्ञ में आहुति देते समय भी हम संयम व धैर्य नहीं रखते। एक-दूसरे के ऊपर से घी नारियल को फैंक-फैंक कर यज्ञ में डालते हैं। भगवान का ऐसा अपमान शायद ही कहीं और दिखाई दे। इससे एक-दूसरे के कपड़े भी खराब करते हैं। मेले में हम किसी तरह घी-नारियल को यज्ञ की ज्वाला तक पहुंचाना ही अपना कर्त्तव्य मानते हें उसके पश्चात् पूरा दिन इधर-उधर की बातें करते हैं, धार्मिक-सामाजिक चर्चा व कार्यक्रमों में आज किसकी रूचि है?

कुछ इसी तरह के अधैर्य और असंयम का परिचय हम भंडारे व विभिन्न संगठनों के कार्यक्रमों में देते हैं जो गहन चिन्ता का विषय है। यदि समय रहते हमने इन सब बातों को गंभीरता से नहीं लिया तो हमारे इन मेलों का मूल स्वरूप विकृत हो जाएगा और इनकी सार्थकता पर भी प्रश्न चिह्न लग जाएगा। आओ हम इसी आसोज मेले से संकल्प लें कि मेले में हम उसी भावना से जाएंगे जिस भावना से हमारे पूर्वजों ने इन्हें प्रारम्भ किया था।

केसो जी कृत साखी छन्दां की 'मुकाम की शोभा'

ओ निज तीरथ तालवो, जोति सही नित श्याम की।
देव बराबर कोई नहीं, महिमा घणी मुकाम की।
महिमा तो घणी मुकाम सोहे, पेड़ियां पग दीजिये।
झलरां जमाती छांजा, देख रचना रीझिये।
होम जप जश जहां कीजै, ध्याविये पूरो धणी।
जिसो ध्यावै तिसो पावै, तालवो तीर्थ सही।1।
चोकी बणी मुकाम की, श्याम सपेत पीली बणी।
कारीगर मेल मिली, छीट वरणी अति सोहवणी।
वणी चोकी मंझ तीर्थ, ज्ञान चर्चा अति घणी।
जहां करै चोहलर पंछियां, मुकुट शोभा भली बणी।
चौतरे अति चूंप दीसै, भूरज शोभा अति घंणी।
गुगल की महकार आवै, चोतरे चोकी बणी।2।
खिड़की पालक देहरे, सूल सदा अति सोहणी।
हरि हजूर दीसे भली, थिरकी थानि सुहावणी।
थिरकी थांनी सुहावणी नै, जहां चांदणी चहुं दिशा।
झलके जंजीर देव सुरगां, जोति जहां विसो विसां।
छा जातो छाजै ताल बाजै, काज हरि सेयां सरे।
दीसै अति सुहावणी, खिड़की खालक बारणे।3।
कली विराजे कांगरा, सोभा मुकुट बखाणिये।
रूंखां बलि रलि आंवणां, श्याम सही जित जाणिये।
जाणिये जित श्याम सतगुरु, पात हरि जन पेखणां।
इण्डो तो मुकुटि मुकाम सोहे, देव दरगे देखणां।
कलश अरू त्रिशूल झलकै, भांत हरि मेले मिली।
देख शोभा कहे केशो, कांगरे सोहै कली।4।

भावार्थ- यह अपना तीर्थ तालवा मुकाम है जहां पर विष्णु श्याम सुन्दर की ज्योति जगमग हो रही है। देव के जैसा और दूसरा गुरु कोई दिखाई नहीं देता उन्हीं देव का अन्तिम मुकाम ही यह मुकाम है जिसकी महिमा बहुत ही अधिक है। अपनी महिमा से मुकाम शोभायमान हो रहा है। सर्वप्रथम दर्शन के लिये पेड़ियों पर पैर दीजिये। जब पैड़ी पर पैर देकर आगे बढ़ेंगे तो आप नीचे झुककर ही आगे बढ़ पायेंगे। सर्व प्रथम आप मन्दिर के झुके हुए छाजे के दर्शन करेंगे। वैसी दिव्य रचना को देखकर प्रसन्न होइये। वही छाजे के नीचे बैठकर हवन करें तथा पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर का ध्यान करें। जैसा ध्यान करेंगे फल भी वैसा ही प्राप्त होगा, ऐसा दिव्य तीर्थ मुकाम तालवा मानें।1। मन्दिर के चारों तरफ चौकी बनी हुई है जो श्वेत श्याम एवं पीले रंग के पत्थरों से बनी हुई है। चतुर कारीगरों द्वारा पत्थरों की जोड़ाई की गई है। जिससे चित्र विचित्र रंगों में शोभायमान हो रही है। इस प्रकार से तीर्थ के मंझ में चौकी बनी हुई है। जहां ज्ञानी भक्तजन बैठकर ज्ञान चर्चा कर रहे है, वहीं चौकी के चारों तरफ वृक्षों पर बैठे हुए पक्षी भी मानों ज्ञान चर्चा करते हुए किलोल कर रहे है। मन्दिर के मुकुट की शोभा तो देखते ही बनती है। चबूतरे पर बहुत सारी चूंप चमक दमक दिखाई देती है। सम्पूर्ण मन्दिर एक गढ़ की भांति दिखाई देता है। वहीं पर हवन में होमे गये गूगल की महकार आ रही है। इस प्रकार से चोतरे की चौकी बनी हुई है।2। चारों तरफ जंगलों की खिड़कियां तथा मुख्य द्वार के किवाड़ों पर सुरक्षा की दृष्टि तथा सुन्दरता के लिये सूल लगाई गई है वे अति शोभायमान हो रही है। निज मन्दिर के अन्दर हरि स्वयं ही मानों समाधी के रूप में दिखाई देते है ऐसा सदा ही स्थिर रहने वाला थान समाधी शोभायमान हो रही है। ऐसे दिव्य थान पर चारों तरफ से सूर्य की किरणें आकर प्रकाश करती है। इसी प्रकार से चांदनी रातों में भी चारों तरफ से चांदनी आकर दिव्य आलोक से समाधी जगमग हो उठती है। उस समय ही शोभा देव स्थान स्वर्ग की शोभा से भी कहीं अधिक होती है। मन्दिर में सदा ही अडिग ज्योति रहती है। इसलिये शत प्रतिशत स्वर्ग का ही देव स्थान है। प्रात: सांय आरती के समय में ताल मृदंग घंटे घड़ियाल शंख

आदि बजते है। हरि की प्राप्ति हेतु भक्त जन सेवा करते है। इस प्रकार से खिड़की द्वार आदि अति शोभायमान होते है जो मन को मोहित कर देते है।3। मन्दिर के अन्दर पत्थरों की सूक्ष्म खुदाई करके जो कांगरे उकेरे गये है, दिव्य चित्रकारी की गई है वह तो अनुपम ही है। मुकुट की शोभा तो वह कलाकारी ही बता रही है। ऐसे दिव्य भवन में अन्तिम मुकाम श्री देव ने किया है देवजी पहले कभी वृक्षों के नीचे ग्वाल बालों के साथ विश्राम किया करते थे। वही श्याम आज यहीं मन्दिर में समाधी के रूप में विद्यमान हुए है। यहीं पर श्याम सतगुरु को जानकर हरि के भक्तजन पवित्र भावना से वहां दर्शन करके जीवन को सफल बनाये। ऐसा दिव्य मन्दिर हरि के अनुरूप ही बना है। मन्दिर के मुकुट पर स्वर्ण कलश चढ़ाया गया है जो अति सुन्दर है, मन्दिर की सुन्दरता को ओर आगे बढ़ा रहा है। कलश उपर उठा हुआ देखता हुआ मालूम पड़ रहा है मानों देव को स्वर्ग में देख रहा है और यहां पर भक्तों को संदेशा दे रहा हो। इस प्रकार से मन्दिर का कलश तथा त्रिशूल मिलकर श्याम पीत रूप से झिलमिल हो रहे है। अनेक भांति के लोग मेले में आकर एकत्रित होते है। शोभा देखकर प्रसन्नता का अनुभव कर रहे है। केशोजी कहते है कि शोभा देखते है जो मन्दिर के कंगारों के रूप में विद्यमान है।4।

साभार- साखी भावार्थ प्रकाश

बेटियाँ नहीं महफूज़

जब घर-घर दरिन्दे जन्म लेने लगे तो बेटियाँ कैसे महफूज़ रह पायेगी।
सोचा नहीं था कि कभी इस कदर मानवता पशुता से बदतर हो जाएगी॥

समाज का एक तबका आज भी औरत को ही दोषी ठहराता है।
इसकी वजह वो औरत का पहनावा व अंग प्रदर्शन बताता है॥

सभ्यता, शालीनता जरूरी है, पर क्या ये ही तर्क शोभा पाते हैं।
उन मासूमों की क्या गलती, जिनके अंग विकसित ही नहीं हो पाते हैं॥

क्यों हर बार, औरत को ही दोषी ठहराया जाता है।
पुरुषों की गलत मानसिकता का सच क्यों नहीं सामने आता है॥

बस इसी कारण बेटियों के जन्म पर मातम तो कहीं कोख में ही मारा जाता है।
कहीं हमारी बेटी के साथ भी ऐसा न हो जाए, यही भय हर मां-बाप को सताता है॥

तो कुछ मां-बाप इसी कारण बेटियों का छोटी उम्र में विवाह रचाते हैं।
अब उनकी बेटियाँ महफूज़ रह पाएंगी, यही ख्वाब वो सजाते हैं॥

पर आजकल तो विवाहित स्त्री भी कहाँ महफूज़ रह पाती है।
घर-घर बैठे दरिन्दों की वह भी कई बार शिकार हो जाती है॥

समाज में ऐसी घटनाएं देख हमारे सिर शर्म से झुक जाते हैं।
अफसोस इस बात का, फिर भी ये लोग मनुष्य कहलाते हैं॥

जनता जब तक ऐसे लोगों के प्रति सख्त रवैया नहीं अपनाएगी।
तब हैवानियत औरत के प्रति मानसिकता नहीं बदल पाएगी॥

अगर समाज इसी तरह केवल औरत को ही गलत ठहराएगा।
तो बेटियों की सुरक्षा का प्रश्न मात्र प्रश्न ही रह जाएगा॥

दीपिका थापन पुत्री श्री सुरेन्द्र थापन
गांव- 2 एन.पी. (ढाणी), तह.- रायसिंह नगर,
जिला श्रीगंगानगर (राज.)

जाम्भाणी साहित्य में वर्णित कृष्ण चरित्र

आज वर्तमान भागवत धर्म का उदय यद्यपि महाभारत काल में ही हो चुका था और अवतारों की भावना देश में बहुत प्राचीन काल से चली आ रही थी, पर वैष्णव धर्म के साम्प्रदायिक स्वरूप का संगठन दक्षिण में ही हुआ। वैदिक परम्पराओं के अनुकरण पर अनेक संहिताएँ, उपनिषद्, सूत्रग्रंथ इत्यादि तैयार हुए। सम्पूर्ण भारत में स्वामी रामानन्द ने रामभक्ति धारा का प्रचार-प्रसार किया। वहीं सगुण भक्ति की काव्यधारा में कृष्णभक्ति को प्रतिष्ठित करने के लिए विक्रम संवत् की 15वीं व 16वीं शताब्दी में वैष्णव धर्म के प्रचार का जो आंदोलन चला, उसके प्रवर्तन का प्रमुख श्रेय वल्लभाचार्य को दिया जाता है।[1]

मध्यकालीन काव्यधारा में श्रीकृष्ण काव्य का महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। भारतीय धर्म साधना में कृष्ण का विलक्षण व्यक्तित्व रहा है। साथ ही पुराणों में पर्याप्त कथाओं का केन्द्र होने का श्रेय भी उन्हें प्राप्त है। श्रीकृष्ण को विष्णु के अवतार के रूप में मानकर उनके विविध क्रिया-कलापों का वर्णन भागवत पुराण तथा महाभारत मे प्रमुख रूप से किया गया है। महाभारत में योगेश्वर कृष्ण का राजनीति विशारद महान् योद्धा के रूप में चित्रण हुआ है।

जिस प्रकार हिन्दी साहित्य के मध्यकाल में कृष्णभक्ति को विविध सम्प्रदायों में श्रीकृष्ण के स्वरूप का चित्रण पूर्णानन्द, परब्रह्म, पुरुषोत्तम, निकुंज बिहारी, ब्रजेन्द्र कुमार, राधा-कृष्ण, राधा प्रमुख, श्री कृष्ण ईश्वरों के ईश्वर आदि रूपों में मिलता है।[2] उसी परम्परा में विक्रम संवत् की सोलहवीं शताब्दी में प्रवर्तित 'बिश्नोई पंथ' में भी विविध स्वरूपों में उल्लेख मिलता है।

जाम्भाणी साहित्य में वर्णित कृष्ण चरित्र :- मध्यकालीन भक्तिकाव्य में प्रवर्तित बिश्नोई पंथ मूलत: निर्गुण मतावलम्बी है। लेकिन निर्गुण पंथ-सम्प्रदायों में मानी जाने वाली सामान्य विशेषताओं से बिश्नोई पंथ की मान्यताएँ कुछ भिन्न हैं। निर्गुण-निराकार विष्णु के उपासक बिश्नोई पंथ में चूँकि अवतारवाद को मान्यता मिली, विष्णु के विभिन्न अवतारों को स्वीकार किया गया। इसलिए अवतारों से सम्बन्धित काव्यों की रचना इस पंथ में हुई।

अवतारों में भी श्रीकृष्ण की स्थिति इस पंथ के साहित्य में विशिष्ट है। पंथ प्रवर्तक गुरु जाम्भोजी का अवतार श्री कृष्ण (विष्णु) अवतार माना जाता है-

लोहट है नन्दराय, जसोदा हांसा भई,
मरुस्थल है बिरज भौम, पीपासर बिरज सही।
पीपासर बिरज है सही नै, वचन के प्रतिपाल,
किसन कवल के कारणै, जम्भ लियो अवतार।[3]

इसलिए इस पंथ में कृष्ण से सम्बन्धित रचनाओं की स्थिति विशिष्ट है, तथा विशेष रूप से रचनाएँ मिलती हैं। इस सभी की एक विशेषता यह है कि जहाँ एक ओर श्रीकृष्ण का मथुरा, वृन्दावन से सम्बन्धित बालग्वाल एवं किशोर रूप चित्रित हुआ है, वहीं महाभारत बाल रूप भी जाम्भाणी साहित्य में उल्लेखित और चित्रित हुआ है। इन्हें हम निम्न रूपों में समझ (जान) सकते हैं-

1. बाल-ग्वाल रूप :-

जांभाणी साहित्य में श्रीकृष्ण के बाल-ग्वाल रूप में एक साधारण बालक से लेकर अलौकिक (लीलाधारी) महापुरुष तक के प्रमाण मिलते हैं। संतकवि आलम जी (1530-1610 सम्वत)[4] श्रीकृष्ण के बाल ग्वाल रूप में ग्वालों के साथ गायें चराने व वृन्दावन में मुरली वादन करते हुए रूप का दृश्य देखने की इच्छा जीवन पर्यन्त रखते थे। वहीं दूसरे पदों में वे यशोदा व नन्द बाबा के लाडले चंचल-चतुर कृष्ण के नटखट रूप को चित्रित करते हैं।

'बाल स्नेही बाल है, अति पियारों पीव,
हरिमुख देखण ही कै कारणै तरसे है मेरो जीव।
नंद रो नागर कान्हवो, चंचल चतुर सुजाण।
मेरो मन हरजी सांवलौ, जाको हरि मुरली सूं प्राण॥[5]

बाल ग्वालों के साथ गायें चराते हुए मुरली वादक श्रीकृष्ण के स्वरूप को कवि पदम ने इस प्रकार चित्रित किया है कि -

'वृन्दावन में धेनु चरावै, भड़ बाल्यां रे साथे।
बन्शी बजावै कामण मोहै, जीमें उण रे हाथे।[6]
मोर मुकुट कानां बिच कुण्डल, कटि पिताम्बर धारी।
श्याम मनोहर मोहे मुनिन कूं, मुरली मधुर उचारी।[7]

श्रीकृष्ण के बाल रूप वर्णन के अन्तर्गत गोकुल-वृन्दावन, माता यशोदा, नन्द बाबा, माखन रोटी, दही खाना व सारा दिन गोपियों और ग्वाल-बालों के साथ गायें चराते हुए हँसना-खेलना आदि वर्णित हुए हैं।

2. लीला-रूप:-

जाम्भाणी साहित्य में श्रीकृष्ण के लीला स्वरूप में भक्तों के उद्धार, दुष्टों के संहार के साथ-साथ नंद-यशोदा, गोप-बालकों गोपियों तथा राधा के प्रति सम्बन्धों का भी प्राधान्य है। कृष्ण की व्रज लीलाओं के द्वारा कवियों ने समस्त सत्ता और चेतना के आगार, अद्वैत ब्रह्म के आनन्द स्वरूप की व्याख्या की। ब्रज-वृन्दावन की ये लीलाएँ किसी बाह्य उद्देश्य से नहीं की गई हैं, कृष्ण के सहज स्वाभाविक आनंद रूप के प्रस्फुटन हेतु भी की गई थी। इन रचनाओं में राधा के प्रति सम्बन्धों के साथ-साथ धरती को छेदकर कालिये नाग को नाथना, गोवर्धन पर्वत धारण करना, कंस वध तथा अन्य राक्षसों का दमन करना आदि वर्णित है। जम्भवाणी में लीला रूप का चित्रण स्वयं गुरु जांभोजी ने इस प्रकार किया है -

कन्हड़ होयकर बंसी बजाई, गऊ चराई।

धरती छेदी काली नाथ्यो, असुर मार किया क्षयकारी।।[8]

श्रीकृष्ण की बाललीला का वर्णन पदम भगत रुक्मिणी-मंगल आख्यान काव्य में इस प्रकार करते हैं -

माखन चोर ग्वालन को खायो, लोग हँसे घर हानौ।

जमुना तीर धेनु चरावै, कांधे कांमर वैर कान्हौ।।[9]

बालपणां की बाणज भूल्यो, चोर-चोर दध खाता।

आई किसी कुंज की गोपी, हाथ पकड़ ले जाता।।[10]

दूसरे आख्यान काव्य-कथा अहंमनी में डेल्हजी ने श्रीकृष्ण द्वारा मथुरा में जाकर कंस वध की लीला का वर्णन इस प्रकार किया है-

मथुरा जाय न मारीयों कंस, इण हाथ थारो छेद्यो वंस।[11]

बालरूप में श्रीकृष्ण द्वारा ग्वालों को अद्भुत लीला दिखाते हुए गोवर्धन पर्वत को बिना किसी घबराहट नाखून पर धारण करना कवि पदम ने गाया है -

गिरि गोवर्धन नख पर धारे,

जद नहीं कंप्या थारा हाथ।[12]

संतकवि कान्होजी (सम्वत् 1500-1580) विरचित छंद में कुंज बिहारी रासलीला कारी एवं गोवर्धन धारी श्रीकृष्ण का चित्रण द्रष्टव्य है -

कुंज बिहारी किसन, लाल वनरावन रचण।

गोवरधन उधरण, पिंड पालन निसतारण।[13]

इन लीलाओं के वर्णन में कवियों की तल्लीनता लीला के सुख में है। समस्त लीलाएँ श्रीकृष्ण रूप का स्पष्ट स्मरण कराती हैं। 'जम्भवाणी में स्वयं गुरु जाम्भोजी ने कृष्ण लीला का असम्भव कार्यों के हो सकने का उल्लेख किया है।'[14]

3. लोक रक्षक/लोक उद्धारक रूप :-

निर्गुण पंथ के सगुण रूप का औचित्य भगवान् की कृपालुता में प्रकट होता है। भक्तों पर कृपा करना श्रीकृष्ण का सहज स्वभाव है। भक्तों की सहायता करने के लिए वे स्वयं आतुर रहते हैं।[15]

जाम्भाणी साहित्य में श्रीकृष्ण के अनुग्रह क्षेत्र की कोई सीमा नहीं है। श्रीकृष्ण की भक्तवत्सलता सिद्ध करने के लिए गुरु जाम्भोजी एवं उनकी परम्परा के अधिकांश संतकवि बारम्बार प्रह्लाद, गज, द्रौपदी, सुदामा, व्रजवासी आदि के प्रमाण देने में नहीं थकते हैं। करुणामय का शील स्वभाव कैसा अद्भुत है? 'भक्तों पर जब-जब भीड़ पड़ती है और वे उनकी शरण में जाते हैं, तभी श्रीकृष्ण अपना चक्र सुदर्शन सँभालते हैं। भक्तों की लाज रखने में वे कोई ऊँच-नीच का विचार नहीं करते हैं।'[16] इसी क्रम में जाम्भाणी संतकवियों ने बार-बार श्रीकृष्ण की वत्सलता और दीनबन्धुता, कुलरक्षक/मर्यादा रक्षक की सप्रमाण पुनरावृत्ति करके प्रशंसित किया है।

द्रौपदी की पुकार - अब मेरी सुणियौ अरज मुरार

परबस भई सभा में केसव द्रोपती करत पुकार।[17]

आत्म निवेदन सुनते ही श्रीकृष्ण-

चमक उठै जदु नायक रमतां, द्रौपती की सुणी पुकार।

चक्रसुदरसन करगै धारै, गरुड़ भये असवार।।[18]

उदोजी अडिंग ने सवईया प्रभु वंदना में गज मोख प्रसंग का उल्लेख इस प्रकार किया-

पील हूँ की टेर सुन देर नहीं लाए प्रभु'

चकर तै फंद काट, गज मोख किया है।[19]

श्रीकृष्ण ने जल में डूबती रुक्मिणी के भी प्राण बचाए थे।

जद रुकमणी जल डूबण लागी, याद किया बनवारी,

करो ध्यान मन मांय, रुकमणी, आये श्रीकृष्ण मुरारी।।[20]

इनके अतिरिक्त गोवर्धन धारण लीला में श्रीकृष्ण द्वारा

करुण वचन की पुकार सुनते ही सभी को धीरज देने और गिरिराज को उठाकर ब्रजवासियों को शरण देने का उल्लेख भी लोक रक्षक रूप ही है।[21]

सबद सं. 67 में गुरु जाम्भोजी ने कहा था कि द्वापर युग का सोलह हजार गोपियों का उद्धार श्रीकृष्ण रूप ने ही किया था।

सौल्हैं सहंस नवरंग गोपी, भोलम भालम टोलम टालम।
छोलम छालम, सहजै राखीलो म्हे कन्हड़ बालो आप जती।।[22]

4. विष्णु रूप:-

श्रीकृष्ण परब्रह्म होते हुए भी विष्णु के पूर्ण अवतार कहे गए हैं। विष्णु के सम्पूर्ण अवतारों में से श्रीकृष्ण अवतार जाम्भाणी साहित्य में अधिक महिमामय माना जाता है। जिस प्रकार जय और विजय के जन्म-जन्मांतर के लिए विष्णु ने वाराहादि अवतार धारण किए, उसी प्रकार श्रीकृष्ण ने वासुदेव का अवतार लिया और दन्त वक्र और शिशुपाल के रूप में जय और विजय का वध किया। जिन आदि ब्रह्म हरि के सुर, नर, नाग, पशु-पक्षियों के सहित धरती के उद्धार तथा सुख के लिए गोकुल में प्रकट होने का वर्णन है, उन्हें स्पष्ट रूप से क्षीर समुद्रशायी, पीताम्बर, मुकुटधारी, विष्णुरूप में उपस्थित किया गया है, जिनके वक्ष पर भृगु रेखा शोभित होती है और जिनके हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म विराजते हैं।

(1) **हो समर्थ के समर्थ, सब ईसन के ईसा।**
निरुधार आधार भक्त बछल जगदीसा।।[23]

(2) **अकथ कथा म्हारे स्याम की, काहू तै कथी न जाय।**
निरजत सिरजत साहिबौ, सहजै रह्यों समाय।।[24]

कालिया उद्धार के वर्णन में, प्रहलाद, द्रौपदी, गजराज आदि के उद्धार का उल्लेख भी जाम्भाणी साहित्य में विशिष्ट रूप से किया गया है। रुक्मिणी-मंगल रचना में पद्म भगत ने तो श्रीकृष्ण को तीन लोकों का राजा तक चित्रित किया है-

देवी नन्दन कंश निकंदन, तीन लोक का राजा।
रुकमण ने विश्वंभर सोहे, सरै हमारे काजा।।[25]

राधा-कृष्ण के प्रेम-प्रंसग व विवाह वर्णन में भी कृष्ण के विष्णु अवतारी होने का उल्लेख मिलता है। वहीं राधा को लक्ष्मी का अवतार भी माना गया है। राधा के साथ-साथ रुक्मिणी को भी कवियों ने कमला का अवतार बताया है और श्रीकृष्ण के मुरली वादन को लोकव्यापी और लोकोत्तर में भी प्रभावशाली चित्रिण किया है। 'श्रीकृष्ण के आध्यात्मिक क्षेत्र से सम्बद्ध ब्रह्म, नारायण, विष्णु आदि के रूप को स्वीकार करते हैं, वे श्री कृष्ण को पूर्णावतार होने के कारण सर्वोच्च देवता मानते हैं।[26]

पुरीयन में द्वारावती सोहै, गंगा गोमती राजे।
कृष्ण समान देव नी दूजो, भृगु लात उर छाजै।।[27]

5. महाभारत के नीति कुशल एवं व्यवहारवादी कृष्ण :-

जहाँ पर हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में कृष्ण कवियों ने, श्रीकृष्ण जीवन के कोमल अंशों को अपने काव्य का विषय बनाया है, वहीं जाम्भाणी साहित्य में श्रीकृष्ण के कमलकान्त अंशों, वात्सल्य और सख्य रूप के साथ-साथ महाभारत के नीति कुशल एवं व्यवहारवादी कृष्ण का भी उल्लेख मिलता है। संतकवि डेल्हजी विरचित 'कथा अहमनी, सुरजनजी रचित ''दस अवतार के दोहा'' केसोजी गोदारा कृत ''कथा-बहसोवनी व सुरगारोहणी' आदि काव्यों में श्रीकृष्ण के महाभारत स्वरूप का वर्णन कवियों ने कुशलतापूर्वक आख्यान एवं प्रबन्ध काव्य के रूप में वर्णित किया है। वहीं 17 वीं सदी के कवि आनन्द ने भी 'कौरवां पाण्डवां का महाभारत' रचना में दोहो छन्दों में इसी परम्परा को आगे बढ़ाया। आनंद कवि ने महाभारत क्षेत्र में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा टिटिहरी पक्षी के अण्डों की रक्षा किये जाने का वर्णन किया है। कौरवों और पाण्डवों में भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें अनेक योद्धा मारे गए। श्रीकृष्ण ने एक ढाल से अण्डों को ढ़ॉप कर सुरक्षित रखा।

संतकवि केसोजी गोदारा से कथा बहसोंवनी में - सहदेव और अर्जुन के साथ लंका गमन, वीरोचित न्याय एवं श्रीकृष्ण के संकेत से जरासंध का वध आदि वर्णन के साथ-साथ श्रीकृष्ण द्वारा स्वयं मण्डप बनाना, स्वर्ण यज्ञ, दान, धर्म और पाण्डू राजा का उद्धार आदि का वर्णन कवि ने बोलचाल की लोकप्रिय उक्तियों में करके श्रेष्ठ आख्यान काव्य परम्परा का एक आधार प्रस्तुत किया। बिश्नोई पंथ के हजूरी कवि डेल्हजी (1490-1550 सम्वत्)[28] रचित आख्यान काव्य 'कथा अहमनी' में भी नीति कुशल एवं व्यवहारवादी कृष्ण का उल्लेख मिलता है। ''जैसा कि रचना के नाम से विदित होता है कि यह कथा अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से सम्बन्धित है।

चूँकि महाभारत में कृष्ण केन्द्रीय भूमिका में थे, इसलिए इस रचना में श्री कृष्ण का विस्तारपूर्वक उल्लेख व वर्णन मिलता है।[29]

6. कुशल योद्धा :-

श्री कृष्ण के कुशल योद्धा स्वरूप का चित्रण भी जाम्भाणी साहित्य में पर्याप्त छदों एवं पदों मे मिलता है। श्रीकृष्ण की सेना द्वारा धनुष-बाण खींचना तथा शिशुपाल की पराजय।

धरती धरण धूज कर कंपी, सोज करें सुलतान।
झालि गयो बाणां अति पति सो,
धनुष मांहि भयमान।।[30]

युद्ध विजय पर श्रीकृष्ण की स्तुति का बखान -

सर्व देवता अस्तुती कीन्हीं, श्याम ही श्याम पुकार।
धनुष धार करुण कर उठे, पदम तणां आधार।।[31]

संतकवि सुरजदास जी पूनियां एवं कान्होजी ने भी श्रीकृष्ण के कुशल योद्धा रूप का चित्रण विशिष्ट रूप से किया है।

असुरा तण ज प्राणज बील सु, और जाल सब तूटा।
मथुरा मल्ल अखाड़ा जीत्या, देव द्वारिका दीठा।।[32]

सन्दर्भ ग्रंथ :-

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ., 159
2. सम्पा. डॉ. नगेन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास, अध्याय 5
3. कृष्णानन्द आचार्य : अमर ज्योति मासिक पत्रिका, वर्ष 64, अंक 8-9, पृष्ठ सं. 9
4. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी : जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य, भाग 2, पृष्ठ सं. 605
5. सम्पा. कृष्णानन्द आचार्य : पोथो ग्रंथ ज्ञान, पृ. सं. 306, प्रकाशक, जाम्भाणी साहित्य अकादमी
6. वही, पृष्ठ सं. 503
7. वही, पृष्ठ सं. 502
8. सम्पा. कृष्णानन्द आचार्य : जाम्भा पुराण पृष्ठ सं. 358, प्रकाशक जाम्भाणी साहित्य अकादमी
9. सम्पा. कृष्णानन्द आचार्य : पोथा ग्रंथ ज्ञान, पृष्ठ सं. 507, प्रकाशक जाम्भाणी साहित्य अकादमी
10. वही, पृष्ठ सं. 546
11. वही, पृष्ठ सं. 477
12. वही, पृष्ठ सं. 561
13. वही, पृष्ठ सं. 394
14. सम्पा. कृष्णानन्द आचार्य : जम्भसागर, पृष्ठ सं. प्रकाशक जाम्भाणी साहित्य अकादमी
15. ब्रजेश्वर वर्मा : सूरदास पृष्ठ सं.119, लोक भारती प्रकाशन, संस्करण सातवाँ 2004
16. वही पृष्ठ सं. 120
17. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी : जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य, भाग 2, पृष्ठ सं. 906
18. वही पृष्ठ सं. 907
19. सम्पा. कृष्णानन्द आचार्य : पोथा ग्रंथ ज्ञान पृष्ठ सं. 379, प्रकाशक, जाम्भाणी साहित्य अकादमी
20. वही, पृष्ठ सं. 502
21. ब्रजेश्वर वर्मा : सूरदास पृष्ठ सं. 121, लोक भारती प्रकाशन, सातवां 2004
22. सम्पा. कृष्णानन्द आचार्य : जाम्भा पुराण पृष्ठ सं. 284, प्रकाशक जाम्भाणी साहित्य अकादमी
23. सम्पा. कृष्णानन्द आचार्य : पोथो ग्रंथ ज्ञान पृष्ठ सं. 379, प्रकाशक जाम्भाणी साहित्य अकादमी
24. वही, पृष्ठ सं. 367
25. वही, पृष्ठ सं. 503
26. सम्पा. डॉ नगेन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ सं. 181, प्रकाशक नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
27. सम्पा. कृष्णानन्द आचार्य : पोथो ग्रंथ ज्ञान, पृष्ठ सं. 564, प्रकाशक जाम्भाणी साहित्य अकादमी
28. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी : जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य, भाग 2, पृष्ठ सं.
29. रामस्वरूप : अमर ज्योति मासिक पत्रिका, वर्ष 64 अंक 8-9, पृष्ठ सं. 53
30. सम्पा. कृष्णानन्द आचार्य : पोथो ग्रंथ ज्ञान, पृष्ठ सं. 546, प्रकाशक, जाम्भाणी साहित्य अकादमी
31. वही, पृष्ठ सं. 547
32. वही, पृष्ठ सं. 503

रामस्वरूप जौहर, शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
फोन नं. 09782005452

'कथा सच आखरी विगतावळी' की समालोच्य विवेचना

मरूप्रदेश में वाचिक अनुशासन के अग्रदूत- वील्होजी

मध्यकालीन भारत में जहाँ एक ओर राजनीतिक अस्थिरता थी, बाह्य आक्रान्ताओं के आक्रमण व अत्याचार भी तो दूसरी ओर धार्मिक एवं सामाजिक मोर्चे पर भी स्थितियां विकट थी। जड़ता और विचलन के साथ ब्राह्मणवादी पोंगापंथी की प्रचुरता व प्राधान्य था। आम व अशिक्षित जनमानस त्राहिमान था। इसी दौर में उत्तर मध्यकाल में बदलाव की बयार दृष्टिगत हुई। वह थी सनातन परम्परा में भक्ति आन्दोलन और इस्लाम में सूफीवाद।

रियासतों में बंटे मरूप्रदेश में महात्मा जम्भेश्वर जी ने बिश्नोई पंथ प्रवर्त्तन कर धार्मिक पुनर्जागरण में और मानवता को नूतन दिशा देने में भी अग्रगण्य भूमिका अदा की। जांभोजी ने संकटापन्न जनमानस को सुगम जीवन शैली की ओर प्रवृत्त किया। कालान्तर में जांभोजी के निर्वाण के पश्चात् नूतन पंथ किञ्चित् शैथिल्य और वैमुख्य के कगार पर था कि वील्होजी नामधारी संन्यासी ने बिश्नोई पंथ की बागडोर थामी। बिश्नोई पंथ के इतिहास में वील्होजी का स्थान निर्विवाद और अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यदि पंथ प्रर्वत्तन का श्रेय जांभोजी को है, तो प्रचालन वील्होजी के जीवन से संभव हुआ।

महात्मा वील्होजी सर्वतोमुखी प्रतिभा से सम्पन्न व्यक्तित्व थे, तो बहुआयामी कृतित्व के स्वामी भी थे। अपने समाज सुधार प्रक्रमों से उन्होंने बिश्नोई पंथ की मद्धम होती लौ को पुनः प्रकाशित किया। प्रभावी धर्मोपदेश और राजदण्ड के बल से गति प्रदान की। इतना ही नहीं उन्होंने प्रभूत मात्रा में साहित्य सृजन किया। प्रचलित लोकभाषा में प्रेरणास्पद और बोधगम्य साहित्य की रचना से समकालीन समाज की महनीय सेवा की है। बिश्नोई पंथ के साहित्य को लिपिबद्ध करने का श्रेय भी वील्होजी को प्राप्त है।

अनन्त सबद सतगुरु कहा, बरस पच्यासी परवांण।
नाथैजी के कंठ रहा अता, लिखया वील्ह सुजांण॥

जांभाणी साहित्य के प्रामाणिक ग्रंथ "पोथो ग्रंथ ग्यान" में रचनाकार परमानंद जी बणियाल की पूर्वोक्त उक्ति से स्पष्ट परिलक्षित होता है। महात्मा जाम्भोजी प्रणीत वाणी और उनके श्रीमुख से उच्चरित अन्यान्य ज्ञानराशि कंठस्थ व श्रवण परम्परा में ही विद्यमान थी। इस दृष्टि से साहित्य को श्रेणीबद्ध करना, लिप्यान्तरण कर अंकित करना पंथ की महान सेवा है।

जीवट का जयघोष देखिए, जिजीविषा की परिणिति भी कि चेचक के प्रकोप से बाल्यकाल में ही नेत्र ज्योति से वंचित हो जाने वाला बालक कालान्तर में संकल्प शक्ति के बूते समाज-सुधार का हरावल सेनापति सा बन जाता है। साथ ही सृजनधर्मिता की मिसाल बनकर समकालीन साहित्याकाश में छा सा जाता है।

वील्होजी की गुरु जांभोजी में अनन्य आस्था थी। जोकि निःसंदेह चमत्कृत सी करती हैं और कल्पनातीत भी हैं। उनकी आध्यात्मिक अनुभूतियों की पराकाष्ठा देखिए... सचमुच दिव्य सी है कि - श्री गुरु के समाधिस्थल तालवा ग्राम में हवन-ज्योति व शबदवाणी पाठ से उनके नेत्र चक्षु पुनः खुल गए। तत्क्षण ही उनके मुखारविन्द से साहित्य का स्रोत फूट पड़ा -

''गुरु तारि बाबा, बोह दुख सह्या,
सरण्य विण्य गुरु की, करि-करि करम कुफेरा।"

यही काव्योद्गार जांभाणी साहित्य में ''साखी कणां की" के नाम से प्रसिद्ध है और धार्मिक आयोजनों में प्रथमतः गेय भी।

तालवा ग्राम में आस्था के अनिर्वचनीय अनुभव से वील्होजी के अतिशय संसर्ग में रहे नाथोजी ने विश्नोई पंथ की परम्परानुसार अभिमंत्रित जल (पाहल) देकर धर्म दीक्षा प्रदान की।

बस यहीं से प्रारम्भ पा गया पंथ पुनर्जागरण प्रक्रम। जो कि उनके स्वर्गारोहण पर्यन्त अहर्निश अनवरत रहा। इसके साथ ही निरन्तर रही उनकी प्रभावी-प्रेरक व बेबाक साहित्य साधना।

साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो, वील्होजी एक साथ दो स्तरों पर सक्रिय रहे हैं, समभाव समर्पित भी।

प्रथमतः वे बिश्नोई पंथ प्रणेता जांभोजी की वाणी को यत्र-तत्र-सर्वत्र से संकलित करते हैं, संग्रहीत करते हैं और क्रमशः लिपिबद्ध अक्षय धरोहर का रूप दिए जाते हैं। तो द्वितीयक मोर्चे पर गुरु जांभोजी की ही परम्परा को क्रमिक गति देते हुए अग्रिम साहित्य का नवसृजन भी किए जाते हैं।

वील्होजी के साहित्यिक सृजन संसार में, उभय पक्षों पर समभार दृष्टिगत होता है।

प्रस्तुत शोधपत्र में वील्होजी विरचित ''कथा सच अखरी विगतावळी'' की वर्तमान सामयिक विवेचना का प्रयास है। साथ ही साहित्यिक प्रभाव उत्पादकता के विश्लेषण का सम्यक उद्यम भी है।

जैसा कि पूर्वोक्त कृति के शीर्षनाम से ही स्पष्ट है कि - वस्तुत: सत्य वर्णों का लोक भाषाई विन्यास है। यह कृति न केवल बिश्नोई पंथ के जीवन में प्रेरणा का सञ्चार करती है, अपितु समकालीन समाज को सत्य-निष्ठा के संकल्प परिपालन हेतु प्रवृत्त करती है।

भाषाशास्त्रीय दृष्टिकोण से ''कथा सच अखरी विगतावळी'' अतीव प्रासंगिक है, प्रभावी और महत्त्वपूर्ण भी। परमानंद जी बणियाल द्वारा सृजित ''पोथो ग्रंथ ग्यान'' जिसे कि जांभाणी साहित्य में सर्वोच्च सम्मान प्राप्त है। इसमें वील्होजी की पूर्वोक्त कृति संकलित है। मूलत: पचास छंद (दोहे) अद्यावधि प्राप्य हैं।

कथा सच अखरी विगतावळी'' सच्ची, खरी और दो टूक बातों से साराबोर है। वाचिक शुद्धि की प्रतिबद्धता से ओत-प्रोत भी। आलोच्य रचना में वील्होजी ने लोक व्यवहार में सत्य के अनुशीलन पर बल दिया है। तो असत्य व मिथ्यावाचन का प्रबल प्रतिरोध भी किया है। आम जनमानस बहुधा अतिरेक व अज्ञान से सत्य वाचन से प्रमाद कर बैठता है और अनायास ही सत्य भाषण की अवज्ञा भी। उन लोगों के लिए वील्होजी ने कहा -

''साचौ नांव विसन को, सतगुर कह्यौ स साच।
गुरु सोई सति बंदिए, जिंह की अबचल वाच।।''(1)

अर्थात् भगवान श्री विष्णु का नाम ही सत्य है। ऐसा सतगुरु श्री जांभोजी ने पूर्णतया उचित, सम्यक और सत्य निर्दिष्ट किया हैं हमें उसी सतगुरु की वंदना करनी चाहिए जो स्वयं संपूर्ण हो और जिनकी वाणी अविचल हो।

सत्य वदन की प्रतिष्ठा लोक में होती है तो परलोक में महिमा भी, - दूहा दृष्टव्य है -

सांच पियारौ साम्य दरि, सति साच दीवाण्य।
सुगर सभा सो वांचरै, जिंह सांच सू— पिछाण्य।''(2)

अर्थात् न केवल लोक में, बल्कि परलोक में भी सत्य समान रूप से प्रिय है। स्वर्ग का दीवानखाना सत्य से सुसज्जित है। जिस प्रकार विद्वानों की सभा में सत्य सम्मान पाता है। परलोक में भी व्यक्ति की पहचान पूर्वकृत सत्कर्मों से ही होती है।

एक अन्य दूहे में वील्होजी मिथ्या भाषण के अवगुणों से आगाह करते हैं, ध्यातत्य हैं कि -

''गुर फुरमायौ साचौ बोलणो,
कूड़ बोल्यै अवगुणा घणो। (4)

अज्ञान और आत्म-श्लाघा से वशीभूत होकर, प्राय: लोक प्रकृतिगत क्रियाओं की मिथ्या व भ्रामक प्रस्तुति करते हैं। तत्संबंधी सूक्ति दृष्टिपात योग्य है कि -

''आंधी झांख कहै औबाल्य, ओगण होय इह बोल्य आल्य।
बाव पुंवण जे कहौ विचारि, साचो आखर और संसारि।।(5)

ग्रीष्म की धूल से सनी आंधी और प्रचण्ड झंखाड़ को देखकर, बहुधा लोग ऐसे कहते सुने जाते हैं कि '' बलै है आंधी ब्हाजै।'' पर वे अल्पज्ञ अवगुण से अभिशप्त हुए जाते हैं। बल्कि इसके स्थान पर ये कहा जाए कि - द्रुतवेगी पवन प्रवाह से अंधेरा छाया है, सर्वथा सम्यक होगा। यही शाश्वत सत्य भी है।

वर्षा जैसी प्राकृतिक परिघटना का ब्यौरा भी, भाषिक प्रमाद में दिया जाता है। नश्वर मनुष्य प्रकृति का नियन्ता सा बन बैठता है -

''एक एक नै कहै अभेव, तीं कितक वरसायो मेह।
कह वरसायौ उंमक ठांय, कूड़ संग्य वुहाहा जाय।।(6)

अर्थात् परस्पर पृच्छा संवाद व मौसम की जिज्ञासा में, लोग प्राय: पूछे जाते हैं कि ''तुमने वर्षा कहाँ की ? और प्रत्युत्तर भी दिए जाते हैं कि ''मैंने अमुक स्थल पर बारिश कराई है।'' वील्होजी के कथनानुसार ये लोग मिथ्या वादन करते हैं। भला एक व्यक्ति वर्षा करने-कराने की सामर्थ्य रख सकता है? भला एक व्यक्ति वर्षा करने-कराने की सामर्थ्य रख सकता है ? ऐसे प्रसंगों पर, वील्होजी ने संगत शब्दावली के प्रयोग का दिग्दर्शन किया है -

''हेक हेम नै पूछै भैव, तूं कित थौ जदि बूठौ मेह।
मेह मही थो उंमक ठांय, साधु साचा उंबोलाय।।''(7)

अर्थात् ऐसा विशुद्ध वार्त्तालाप ही जिसमें सवाल हो कि -''बारिश के दरम्यान आप कहाँ थे ?''

और जवाब में यह कहा जाए कि ''वर्षाकाल में वह पृथ्वी के फलां स्थान पर था।''

जल के प्रवाह का प्रबोधन भी कम प्रमादपूर्ण नहीं होता-

दोहा देखियेगा कि,

वूहौ कहै ज वाहलौ, कुहों कहै जै खाळ।
पाणी वुहौ जो न कहै, बोलै कूड़ो आळ।।''(8)
आई वुही नदी कहंति, कूड़ तणा संग्य वुहा जंति।
आयौ वुहौ कहै ज पाणी, ते लाधी सतगुर की वाणी।।''(9)

नाले और कुएं के बहने की बात कहकर, नदी के बहने का वक्तव्य देकर, अज्ञानी लोग असत्य कथन करते हैं बल्कि पानी बहने की बात सच्ची है। जो ऐसा कहता है उसने सद्गुरु की वाणी को आत्मसात कर लिया है।

उसी प्रकार प्राणियों की जैविक क्रियाओं का चित्रण प्राय: भ्रामक व अर्द्धसत्य से आवृत्त होता है। वील्होजी के अनुसार –

''गाय पीवी आ कूड़ी वाच, गाय पाणी पीयो साच।''(10)
''पाणी पीयो कहै विचारि, साचौ आखर और संसारि।''(11)

''गाय पी ली।'' यह असत् कथन है बल्कि ''गाय ने पानी पिया।'' सत्य है। फलां प्राणी या नामधारी ने जल सेवन कर लिया है, ऐसा विचारपूर्वक कहना ही सच्चा अक्षर है, स्वीकृति योग्य भी।

वील्होजी की दृष्टि में खेती–किसानों के वृतान्त विशुद्ध भाषा में प्रस्तुतेय हैं, बानगी पर निगाह डालिएगा कि –

''कहै जे काढ़े खळ काढ़, गुर उपदेस न मांनै राढ़।''(14)
''काढ़ उघाड़ि काढ़यौ अंन, साच नु वड दरगै मन।''(15)

कृषिजन्य फसल के निस्तारण को ''खळा काढ़ने'' की संज्ञा देने वाला मूर्ख गुरोपदेश की अवहेलना ही करता है। जबकि खलिहान साफ करके अन्न निकालने की बात ही सत्य–भाषण की श्रेणी में आती है।

भ्रामक अर्द्ध सत्य लोक जीवन में किस कदर व्याप्त है, पथ तथा पथिक का उदाहरण प्रासंगिक होगा –

''पंथ कीत जहिसी उंपुछाय, ओह पंथ जायसी उंम गांव।''(16)
''पूछै कंवण गांव को पंथ, कूड़ नै पड़ियै उंबौलंत।''(17)

मार्ग कहाँ जाएगा ? के प्रत्युत्तर में अमुक गांव जाएगा। समग्र प्रश्नोत्तर ही वाचिक त्रुटि है।

वील्होजी के अभिमत में, पूर्वोक्त कथन अपराध सम हैं। बल्कि कथनीय तो यह होना चाहिए कि – ये रास्ता कौन से गांव को है।

कथा सच अखरी विगतावळी में – वील्होजी वस्तुत: वाचिक विभ्रम के उन्मूलन के पक्षधर प्रतीत होते हैं। सम्यक वदन और भाषिक शुद्धि के हिमायती भी। प्राणिमात्र द्वारा उदर पोषण–पूर्ति हेतु अन्न व तृण भक्षण के संबंध में अग्रांकित छंद विचारणीय हैं –

''साढ़िऊंठअर घोड़ा घोड़ी, चीनां कहैतांमा मति थोड़ी।''(22)
''चीनूं दांणौ चीनूं घास, गुरवाणी साची प्रकास।''(23)

सांढ (ऊंटनी) ऊंट और घोड़ा–घोड़ी चर लिए कहने वाला अल्पमति है बल्कि दाना अथवा घास चर लिया है समीचीन है।

वाचाल जन बहुधा विलंब से आशंकित होकर अथवा उतावलेपन के आग्रह में सर्वशक्तिमान ग्रह सूर्य की अवज्ञा करते प्रतीत होते हैं –

अ) "राति थकी कहै ऊगौ सूर, कूड़ा बोल्या धरम होय चूर।"(26)
ब) "दीसै सूर कहै संझ पई, पाप पोटी सीरि करि लई॥"(27)
स) दीह हुवै नै दीह कहै, सांझ पई कहै संझि।"(28)

जो जन रात्रिकाल रहते सूर्योदय कहे, सूर्य दिखने पर भी सांझ हो जाने की बात कहता है। असत्य वचन से धर्म विमुख होकर पाप का भागी बनता है। जबकि दिन को दिन कहने का माद्दा रखने वाले लोग ही धर्म प्रतिपालक हैं।

कवि वील्होजी, कर्त्ता और करण को यथोचित मान देने के पक्ष में थे। साधन और साध्य के अन्तर को रेखांकित करतीं काव्योक्तियां विचारणीय हैं –

''गाडो गाडी हांक्या कहै, कूड़ा आखर लीयै वहै।''(29)
''बळद भरया कहै मतहीण, ना गुर मीन्यौ न पायौ दीन।''(30)

गाडा और गाडी को चलाओ, कहने वाला भ्रामक वचन बोलता है। बैलों को चलाओ, यह कथन सम्यक है। उसी प्रकार बैल भरे के स्थान पर बोरियाँ लादी कहना युक्तियुक्त होगा। घाणी चूरना, आटा पिसना, गाय दुहना इत्यादि कथन भी नितांत असंगत है। सत्य का मुमुक्षु इनके स्थान पर क्रमश: – तिल चूरना, अनाज पीसना और गाय का दूध दुहना अभिकथनों का उपयोग करेगा, जो कि संगत है और तार्किक भी।

एक सूक्ति दृष्टव्य है, जो नीर–क्षीर विवेक का निर्धारण सी करती है –

"कहै पीलाणौ घोड़ा ऊंठ, सुरति वीहूणां बोलै झूठ।"

अश्व और उष्ट्रों को पिलाणो कहना भाषिक अत्याचार

की श्रेणी में आता है। बल्कि उनकी पीठ पर काठी बांधो कहना उचित है, अनिवार्य भी।

"बासण भीतरि वसत ज थाय, तींह वसत को ठांव कहाय।"(47)

"जो जो कहै वसत को ठांव, मांहि वसत को कहिये नांर।"(48)

पारिवारिक जीवनचर्या में अधिकांश लोग वाचिक अनुशासन का उल्लंघन प्राय: करते पाए जाते हैं। उनको सन्मति सीख देते हुए कवि वील्होजी कहते हैं कि – किसी पात्र में कोई वस्तु रख देने मात्र से वस्तु का बरतन नहीं हो जाता। उन्हें चाहिए कि बर्तन में अमुक वस्तु है।

वणिक – जनों को व्यापार के मायने बताते हुए वील्होजी की लेखनी तराजू की भांति संतुलित हो उठीं है, मिसाल देखिएगा –

"जैह वोपारि तोलणी, वाखर पूरो तोल।
ओछो द्यै पूरौ कहै, अतरौ कूड़ न बोल।" (49)

और भाषाई विशुद्धि के आग्रह में अपनी कृति "सच अखरी विगतावळी में अन्तिम छंद का विवेच्य युग्म शब्दों के अनावश्यक प्रचलन पर केन्द्रित करते हैं और कटाक्ष भी कि –

"जीमौ-जूठो न्हावो-धोवो, साचो राखौ झूठ विगोवो।
सूतो पड्यौ जूंपांणी लूणी, एक सत्य एक अलख विहूणी।"(50)

अर्थात् जीमना-जूठना, नहाना-धोना, सोया-पड़ा और नमक-पानी में एक शब्द सत्य है, दूसरा विभ्रम। वील्होजी वस्तुत: समानार्थी प्रतीत होने वाले असत्य कथनों की त्याज्यवृत्ति पर बल देते हैं, तो दैनन्दिन जीवन में अकाट्य सत्य के अनुसरण का अग्रह भी करते हैं। उनके अनुसार –

''खोजी खोज्य विगति सूं लहै, साच झूठ का वीहरा लहै।''

सुपथ को संकल्पित राही सर्वदा विगतवार अन्वेषण करता है, तथ्य आधारित अनुसंधान भी और अंतत: सत्य व झूठ का ब्यौरा पा लेने में सफल रहता है। सत्कर्म की थाह भी।

सत्रहवीं सदी में, उन्होंने सत्याचरण पर बल दिया तथा भाषिक गरिमा की प्रतिष्ठा हेतु पुरजोर प्रयास किए। वाचिक शुद्धि में सत्य की अंगीकृति हेतु "सच अखरी विगतावळी" का सृजन अपूर्व साहित्यिक देन मानी जाने योग्य है। वे पहले कवि व साहित्यकार थे, जिन्होंने दैनन्दिन जीवन में भाषायी अनुशासन पर सृजन का साहस दिखाया। दूसरे शब्दों में कहें तो प्रेरणा-पुञ्ज प्रदीप्त किया।

वास्तविक अर्थों में "कथा सच अखरी विगतावली" सच्चे शब्दों की अटूट व अनुपत शृंखला है। भाषा शास्त्र की मंजूषा भी। सृजनधर्मी साहित्यकार और दूरदर्शी सामाजिक नेतृत्वकर्त्ता के रूप में वील्होजी, सदा-सर्वदा स्मरणीय रहेंगे। उनकी प्रखर आभा का परिचय पाकर समकालीन रियासती शासक वर्ग ने उन्हें अनेक ताम्र-पत्रों से सम्मानित किया।

उपाधियों-पदवियों के अलावा भी, तत्कालीन विशाल व शक्तिशाली मारवाड़ रियासत से "खूंटा-कोरडा" नामक राजाज्ञा भी प्राप्त हुई। लोकोक्ति से बने इस राजदण्ड का प्रयोग, वील्होजी ने विश्नोई पंथ प्रचालन और विस्तार कार्य हेतु बखूबी किया। पंथक मेल-मिलाप को सुदृढ़ करने की दिशा में उन्होंने महनीय योगदान दिया, जो कि अतुल्य है... अविस्मरणीय भी।

समाज सुधार के महान् महारथी और साहित्य के चिर साधक वील्होजी, अपनी जीवनयात्रा के अन्तिम पलों में भी सृजनरत रहे। साहित्य के प्रति आत्मीय लगाव को चिर परिणिति कहें या चमत्कारिक पराकाष्ठा – स्वगुरु के प्रति सर्वस्व समर्पण भी –

"बल्य जाऊं जाम्भ जी रै नांव नै,
साधां मोमीणां रौ प्राण आधार।
तूं जांहरै हिरदै वस्यौ,
तेरा जन पुंहता पार।"

उक्त काव्योक्तियों का नाद करते – सृजन का उद्घोष करते हुए लोक से प्रयाण कर गए। ध्यातव्य यह कि अंतिम समय में सृजन पूर्णता को प्राप्त बाईस दोहों की साखी ''उमावड़ो'' शीर्षक से अति प्रसिद्ध हुई और आज भी उनके अनुयायियों की जीवन दिशा है। उन अनुपम-अद्वितीय-अद्भुत वील्होजी को...

शतश्च नमन् और कोटिश्च वंदन !

संदर्भ :

1. पोथो ग्रंथ ग्यान- श्री परमानंद बणियाल
2. जाम्भा पुराण- स्वामी कृष्णानंद आचार्य
3. वील्होजी की वाणी- श्री कृष्णलाल देहडू
4. बिश्नोई पंथ और साहित्य- डॉ. बनवारी लाल सहू

- शंकरलाल बिश्नोई
वरि. अध्यापक (संस्कृत)
गांव देवसर (भोजाकोर), तह. लोहावट, जोधपुर (राज.)
मो. 9413509229

नेपाल में नौ बीसे

अकारण करुणा करने वाले जगद् आधार परमात्मा ने जगत सृजन करने की इच्छा की तब जल में से पृथ्वी प्रकट हुई। पृथ्वी पर सप्तद्वीप एवं सप्त समुद्र अवस्थित हुए। जम्बु द्वीप की सभी सत् शास्त्रों में मुक्त कंठ से महिमा की गई है। जम्बुद्वीप में भी अजनाभ खण्ड जिसे कालान्तर में भारत वर्ष के नाम से जाना गया, को परमात्मा के अवतरण का श्रेय प्राप्त है। इस विशाल भारतवर्ष के भू-भाग को कई भागों में विभक्त होते हुए मनीषियों ने देखा। वर्तमान भारत तो भारतवर्ष अथवा अजनाभ खण्ड का हिस्सा है।

परमपिता परमात्मा ने सृष्टि सृजन के लिए ईक्षण किया तब इस पृथ्वी पर चौरासी लाख जीवों का सृजन हुआ। इनमें मनुष्य परमेश्वर की सर्वोत्कृष्ट सृष्टि है। मनुष्य में विवेक की प्रधानता है। इस कारण मनुष्य को प्रबोध देकर आवागमन के चक्कर से मुक्त करने का भगवान ने निश्चय किया। यद्यपि वे सर्वत्र समान रूप से व्यापक हैं, यथापि मनुष्य अपने स्वभाव के कारण उस सर्वव्यापी परमेश्वर को अनुभव नहीं कर सकता। इसलिए उस करूणागार ने इस पृथ्वी पर अनेकानेक अवतार लिए। एक सौ आठ, चौसठ, चौबीस, अथवा "नव अवतार नमोनारायण" ये अवतार प्रसिद्ध हैं। वाराह, नृसिंह रामकृष्ण आदि अवतार धारण कर मनुष्यों को धर्म का मार्ग दिखाया।

भगवान की प्रतिज्ञा है कि जब-जब धर्म ह्रास होता है तब-तब मैं स्वयं अवतार लेता हूं। सत् त्रेता द्वापर में अवतार लेकर धर्म का रक्षण किया ही, किन्तु जब कलीयुग में लोग स्वधर्म से पतित होने लगे, शौचाचार हीन, क्रियाहीन, शील संतोष आदि सद्गुणों से हीन हो गये तब मरूभूमि में उन्होंने अवतार धारण कर भटके हुए लोगों को अपनी वेदवाणी शब्द वाणी से उपकृत कर सही राह दिखाया। जिन परमात्मा का कोई आदि अन्त नहीं वे मारवाड़ की धरती पर समराथल नामक धोरे पर विराजमान होकर 29 नियमों की एक आदर्श आचार संहिता बनाई। मनुष्य मात्र इसे धारण करे, भगवान की इच्छा थी। इसलिए वे हमेशा समराथल पर ही रहे ऐसा नहीं, अपितु " गये समन्दरा पार" समुन्दरों से पार तथा हिमालय एवं इससे भी पार जाकर भगवान ने अपने वचनामृत से समस्त मानव जाति को कृतार्थ किया। स्वयं भगवान श्री जम्भेश्वर जी ने अपनी शब्दवाणी में उल्लेख किया है। " फिर फिर दुनिया परखे लीयो"।

वास्तव में 29 नियम मानव धर्म ही है। इसे जो धारण करता है। वह बिश्नोई है। 20+9 "विंशती नवती बिश्नोई।" भारत में राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश मध्य प्रदेश सहित प्राय: सभी जगह बिश्नोई बहुधा निवास करते हैं, किन्तु नेपाल में भी भगवान जम्भेश्वर के सिद्धान्तों को मानने वाले लोग विद्यमान हैं। यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ। जम्भेश्वर भगवान के सिद्धान्तों को एवं भागवत आदि कथाओं के प्रचार-प्रसारार्थ इंग्लैण्ड, यूरोप, एशिया, गोल्फ कंट्री सहित लगभग 28 देशों में जाने का मुझे संयोग प्राप्त हुआ। जिज्ञासु मन होने के कारण नेपाल में बिश्नोई है सुना तो जिज्ञासा हुई जानने की। वैसे तो नेपाल कई बार जाना हुआ किन्तु इस बार एक खास उद्देश्य लेकर जाना हुआ। आधुनिक संचार माध्यम वाट्सअप, फेसबुक व अन्यान्य माध्यमों से जानकारी मिल रही थी। किन्तु यथार्थ सम्पर्क सूत्र नहीं मिल रहा था। अमर ज्योति के यशस्वी सम्पादक सम्माननीय डा॰ सुरेन्द्र बिश्नोई से सम्पर्क करने पर उन्होंने डॉ॰ अच्युत अर्याल जी काठमण्डू विश्व विद्यालय के सम्पर्क सूत्र दिये। जिस दिन रात्रि में लगभग 11:30 बजे मुझे श्री आर्याल जी का मोबाइल नम्बर मिला उसी समय रात में ही उनसे सम्पर्क किया तथा प्रात:काल ही नेपाल जाने कार्यक्रम बन गया। तत्काल दिल्ली से काठमाण्डू सप्ताह भर का कार्यक्रम बन गया। श्री अच्युत अर्याल जी, श्री विश्वनाथ श्रेष्ठ जी काठमाण्डू एयरपोर्ट पर मिल गये। मेरे साथ युवा संत श्री राजन प्रकाश जी जाम्बा भी थे। मुक्तिनाथ पोखरा आदि तीर्थो का संस्पृश भी हुआ। अस्तु जिस प्रकार भारत में हम बीस+नौ से बिश्नोई कहलाते है वैसे ही नेपाल में नौबीसे के नाम से पूरा इलाका विख्यात है। काफी विस्तृत क्षेत्रफल में व्याप्त इसको काशीखण्ड भी कहते हैं। हमारे अभिन्न हृदय श्री डॉ॰ अच्युत अर्याल जी, श्री अनन्त अर्याल एंव सारथी श्री शंकर जी के साथ हिमालय की सुरम्य उपत्यकाओं में अवस्थित 'अखण्ड हरिनाम संकीर्तन अमर निवास' दाप्चा पहुंचे। वर्षा के

कारण मार्ग अव्यवस्थित होने से कुछ सश्रम पद यात्रा करते हुए वहां पहुँचे। उस सुन्दर वैली का दृश्य देखकर रास्ते की थकान काफूर हो गई। काठमाण्डू से प्रात: भोर में ही प्रस्थान करके यथा समय नौबीसे पहुंचे, उस समय हवन चल रहा था। कुछ देर वैदिक मंत्रो से हवन होता रहा। तप्तश्चात् संत श्री राजन प्रकाश जी के साथ हमने जाम्भाणी परम्परानुसार शब्दवाणी से हवन किया। चूंकि शब्दवाणी के जानकार हम दो ही थे, सो यथा शक्ति हमने गुरुवाणी का मधुर स्वर में बोलना प्रारम्भ किया तब वहां के सभी लोग भाव विभोर हो गये। हवन संकीर्तन, आरती इत्यादि से निवृत्त होने के बाद अखण्ड हरिनाम संकीर्तन मंदिर के प्रबन्धक अध्यक्ष तथा नौबीसे के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के घनी,धीर गंभीर अत्यन्त स्नेह, सरलचित श्री वासुदेव काफ्ले, श्री विष्णु अधिकारी, श्री शंकर अधिकारी, श्री हरीबोल, गोरा पिल्ली आदि महानुभावों ने अति प्रेम पूर्वक वहां की संस्कृति के बारे में विस्तार से बताया। पहाड़ी इलाका होने के कारण प्राय: लोग मांसाहारी होते है, किन्तु नौबीसे के लोग बहुधा शाकाहारी हैं। मैंने जम्भेश्वर भगवान के बारे में पूछा। उन्होंने कहा यहां एक मन्दिर है। जगबैज्येश्वर के नाम से विख्यात है और काफी प्राचीन है। हमने दर्शन किये। मुझे आभास हुआ जगबैज्येश्वर जम्भेश्वर ही हैं। दीर्घकाल खण्ड के कारण अपभ्रंश हो गया लगता है। मैंने उन सभी सज्जनों से एक एक कर 29 नियमों के बारे में बताया। उन्होंने कहा सूतक 30 दिन रख पा रहे हैं। बाकी तो सभी नियम स्नान, द्विकाल, संध्या, अमावस्या व्रत, पानी छानना, नशा नहीं करना, झूठ ,चोरी, निन्द नहीं करना सभी पालन करते हैं।

वृक्षों की रक्षा भी प्राण प्रण से करते हैं। पीपल का पेड़ हर गांव में अवश्य होगा। हवन हरेक घर का नियम है। वहां जाने से ज्ञात हुआ कि नौबीसे के लोग स्वत: बिना प्रचार-प्रसार के गुरु महाराज के सिद्धान्तों को जीवन में अपना रहे हैं, पाल रहे हैं, मान रहे हैं। मैंने उनसे पाहल के बारे बात की श्री वासुदेव काफ्ले जी ने कहा कि पाहल तो नहीं जानते मगर कलश के जल से हवन के बाद सभी को पवित्र करते हैं। यह तो हमने भी देखा। रोटी बेटी का सम्बन्ध धर्मपालन करने वाले के साथ ही होता है। नशेड़ी, मांसाहारी तथा धर्ममार्ग से पातित के साथ नहीं होता। स्वयं श्री वासुदेव काफ्ले जी खुद अपने घर का बना भोजन करते हैं। किसी अन्य का छुआ हुआ नहीं पाते। उक्त अखण्ड हरिनाम, संकीर्तन विगत 35 वर्षो से अनवरत चल रहा है। वहां से कोई 10 किलो मीटर दूर एक गांव में गये। जहां पर लोक देवता का मन्दिर है। वहां एक पेड़ के नीचे गुरु जम्भेश्वर भगवान की मूर्ति है। जैसा हमारे यहां है वैसा ही फोटो वहा है। ऊपर लिखा है "विष्णु विष्णु तू भणरे प्राणी" मूर्ति में नीचे 1543 विक्रमी लिखा है इसके अलावा भी कुछ लिखा है जो विशेषज्ञों द्वारा ही पठनीय है। हम ठीक से पढ़ नहीं पाये।

कुल मिलाकर हमें प्रतीत हुआ है कि निश्चित ही गुरु महाराज कभी ना कभी यहां आये होंगे। अथवा लोग भारत से आकर यहां बस गये होंगे। खोज का विषय अवश्य है। बिश्नोई समाज की संस्था अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा अब केवल अखिल भारतीय ही नहीं,समय और परिस्थितियों को देखते हुए विश्व स्तरीय होनी चाहिये। महासभा से आग्रह है कि इस नौबीसे क्षेत्र में अपने विषय के जानकर विशेषज्ञों के विद्वानों को भेजकर अन्वेषण करें। यहां युवा विद्वान डॉ. अच्युत अर्याल, अनन्त अर्याल तथा अन्य कई उत्साही युवा सहयोग करने को तत्पर हैं, हम तो इनकी सेवा सहयोग, कर्तव्यपरायणता के कायल हो गये हैं। मेरा तो मानना है कि गुरु महाराज के सिद्धान्तों का प्रचार नौबीसे नेपाल में होना चाहिये। मैं एक बार संत मण्डली सहित पुन: वहां जाकर जागरण हवन सत्संग आदि के द्वारा उन पिपासुओं को लाभन्वित कराने की कोशिश करूंगा। वे सब लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मेरा सुझाव, "महासभा अखिल भारतीय नहीं "विश्वस्तरीय" हो और कार्य क्षेत्र बढ़ाना चाहिये। वैसे भी विश्व के प्राय: सभी देशों में बिश्नोई बंधु कम या ज्यादा संख्या में रहते ही हैं। आज हमारे संसार में आतंकवाद, अशांति, पर्यावरण प्रदूषण, वैमनस्यता, असहिष्णुता आदि बीमारियों सहित अनेकानेक विभिषिकाओं में संत्रस्त है तब गुरु महाराज के सिद्धान्त दुनियों को राहत दिला सकते हैं। ये कार्य विश्वस्तर पर महासभा के कार्यकर्ताओं को करना चाहिए। जैसे मैंने देखा, जाना सो लिखा है।

स्वामी शिवज्योतिषानन्द "जिज्ञासु"
'वेदान्ताचार्य'
श्री संन्यास आश्रम, महावीर सर्किल, गंज
अजमेर- 3055001
फोन नं. 0145-2631784
मो. 9983731329, 94147-3929

नाथ पंथ एवं जम्भवाणी

मूलत: समग्र नाथ सम्प्रदाय के उपास्य देव शिव ही हैं। अत: नाथ आदि नाथ शिव ही माने जाते हैं। मत्स्येन्द्र नाथ इनके प्रथम शिष्य हुए और गोरखनाथ इन्हीं के शिष्य थे। नाथों में गोरखनाथ का व्यक्तित्व सर्वाधिक आर्कषक रहा है। गोरखनाथ दृष्टियोग एवं कार्यसिद्धि के जनक रहे हैं।

इसलिये भारत के और अन्य बाहर के सिद्ध सन्तों ने उनको अपना भाव गुरु माना है। यद्यपि नाथ पंथ तो इनसे पूर्व भी था तथापि इस नाथ पंथ को व्यवस्थित एवं संगठित रूप देने का कार्य गोरखनाथ ने ही किया था। बाद में यह पंथ उन्हीं के द्वारा खींची गई रूपरेखाओं पर विकसित होता रहा। गोरखनाथ हठयोग प्रणाली के प्रवर्त्तक माने जाते हैं। जिसका सीधा प्रमुख सम्बन्ध शरीर और स्वास्थ्य की शुद्धता से है। नाथ सम्प्रदाय में साधना का मार्ग स्वस्थ ही है। नाथों को कान फाड़ना एवं मुद्रा पहनना आवश्यक है इसलिये कनफटा जोगी कहलाते हैं। जब तक वह इस क्रिया तक नहीं गुजरता वह ओघड़ ही कहलाता है। इस प्रकार इस क्रिया से गुजरने उपरान्त जोगी एवं सिद्धियों को प्राप्त कर लेने उपरान्त वह आयस कहलाता है। नाथ सिद्धों का काल नवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी के बीच माना जाता है। गोरखनाथ का कार्यकाल भी ग्यारहवीं शताब्दी के आरम्भ का माना जाता है। चूंकि इनके गुरु मत्स्येन्द्रनाथ का कार्य काल भी ग्यारहवीं शताब्दी का ही माना जाता है।

जम्भवाणी के तीन सबदों में जाम्भोजी ने गुरु गोरखनाथ के प्रति अत्यन्त प्रशंसा एवं श्रद्धा व्यक्त की जो निम्न है:-

1) गोरख दीठा सिध न होयबा, पोह उतरवा पांरू (24-5)
2) तउवा जाग न गोरख जाग्या अवर भी जागत जागू (87)
3) गोरख गुरु अपारां (93)

उपर्युक्त पंक्तियों से जाम्भोजी का अभिप्राय: एवं मंतव्य यही है कि गोरखनाथ अनेकों सिद्धियाँ प्राप्त सिद्ध पुरुष एवं अपार महिमावान गुरु थे, जिनकी योग साधना तथा सिद्धियों का कोई भी पार नहीं पा सकता है।

किन्तु इससे स्पष्ट नहीं होता कि वे गोरखनाथ जी को ही अपना गुरु मानते हैं। हमारे पुराने साम्प्रदायिक इतिहास में ऐसा कोई भी उल्लेख नहीं आता है। फिर भी जांभाणी साहित्य के वर्तमान लेखकों में स्वामी ईश्वरानंद जी, स्वामी ब्रह्मानंद जी, स्वामी सच्चिदानंद जी आदि के अनुसार श्री जाम्भो जी ने 12 वर्ष की आयु में जगंल में गुरु गोरखनाथ जी से दीक्षा ली थी। चूंकि श्री जाम्भोजी ने स्वयं अपने श्री मुख से कहा है कि मेरे गुरु ज दिन्ही सिख्या, सरब अलिगंण फैरी दिख्या (91) अर्थात् मेरे गुरु ने मुझे धर्म आचरण और ज्ञान की शिक्षा दी और दीक्षा के रूप में इसी शिक्षा को लोगों में बार-बार बांटने की आज्ञा दी है। सम्भवत: गोरखनाथ उनके मनसा गुरु रहे होंगे। यद्यपि जाम्भोजी को स्वयं सर्वज्ञ होने के कारण गुरु दीक्षा लेने की आवश्यकता ही नहीं थी जैसा कि उन्होंने सबद 2 में कहा है कि "कुण जाणे मेह ग्यानी के ध्यानीं" फिर यही बात श्री जाम्भोजी ने सबद 67 में भी दोहराई है फिर कि "कुंण जाणै म्हे केवल न्यानी -कुंण जाणै म्हे ब्रह्मज्ञानी" फिर सबद 72 में भी कहा "केवल्य न्यानी थलसिरि आयो" फिर भी गुरु प्रथा कायम रखने के हेतु तथा लोकवत आचरण को कायम रखने हेतु गुरु मर्यादा कायम रखी है। इस प्रक्रिया से जाम्भो जी के व्यक्तित्व एवं महत्व को किसी प्रकार की कोई हानि नहीं हुई। चूंकि राम एवं कृष्ण आदि अवतारों ने भी तो गुरु महिमा कायम रखी थी।

श्री गुरु जाम्भोजी जी तो स्वयं विष्णु के अवतार के रूप में प्रगट आये थे वे स्वंय योगी थे जैसा कि सबद 97 में कहा है कि "जुगा जुगा को योगी आयो सतगुरु सीध बताई" अर्थात् (श्री जाम्भोजी) युगों-2 के योगी के रूप में आकर मुक्ति की सीध बता रहे हैं। सबदवाणी के सबद 85 एवं 93 इस धारणा को और भी स्पष्ट करते हैं कि योगशास्त्र विद्या क्रम से गुरु जाम्भो जी एवं गोरखनाथ दोनों का योग अवतारी होना तथा मिलन एवं संवाद होना सर्वथा संभव भी है। हो सकता है कि गोरखनाथ जी ने जाम्भो जी से मिलने हेतु योग विद्या बल से ऐसा शरीर धारण किया है। इस सम्बन्ध में महर्षि कणाद लिखते हैं कि अयोनिज भी शरीर योगियों के होते हैं तथा महर्षि कपिल का भी कथन है कि योगी अपने संकल्प मात्र से किसी भी प्रकार की देह रचने में सक्षम होते हैं।

श्री स्वामी ब्रह्मानंद जी ने अपनी पुस्तक श्री जम्भदेव चरित्र भानु में श्री जाम्भोजी एवं श्री गोरखनाथ जी के संवाद बारे में लिखते हैं कि आप तो साक्षात् निरजंन के अवतार हैं और मैं दत्तात्रेयावधूत हूँ जो कि अब गोरखनाथ के नाम से प्रसिद्ध हूँ। राम अवतार के समय के अगस्त्य मुनि के नाम से व कृष्ण अवतार के समय दत्तात्रेय के नाम से प्रसिद्ध था। आप तो सर्वज्ञ हैं आपका गुरु कौन हो सकता है तथापि लोकवत आचरण, गुरु महिमा की दृष्टि से एवं कोई निगुरा ना रहे। इस अभिप्राय से मुझे गुरु मानकर इस गुरु मर्यादा का पालन करते

हुए मैं आपको गुरु दीक्षा एवं यह भगवी टोपी देता हूँ। मैं केवल विद्यता का प्रेरक एतदर्थ शरीर धारण करके आया हूँ ताकि आपके दर्शन करूं। तब श्री जाम्भोजी ने कहा- मैं आपको भली प्रकार से जानता हूँ और फिर प्रणाम किया, तब गोरखनाथ जी प्रस्थान कर गये।

श्री गुरु जाम्भोजी जी गोरखनाथ द्वारा वर्णित अनेकों शब्दों में योग विद्या की इन प्रणालियों का उल्लेख भी किया है तथा अनेकों शब्दों में योग के नाम पर फैले पाखण्डों की ओर लक्ष्य करते हुए जनसाधारण को सचेत किया है। जाम्भोजी के कार्यकाल से पूर्व भी राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय विशेष रूप से प्रचलित था। सबदवाणी के 21 सबद तो विशेष रूप में केवल नाथों के प्रति ही कहे गये हैं। उस समय नाथों की प्रतिद्वन्द्विता के बावजूद बिश्नोई सम्प्रदाय विशेष रूप से तेजी से फैल रहा था इसलिये समय-समय पर पर नाथ सम्प्रदाय के विशेष एवं सुप्रसिद्ध नाथ-जोगी एवं आयस जाम्भोजी से टकराने हेतु आते रहते थे। यद्यपि जाम्भोजी ने किसी भी धर्म या सम्प्रदाय को बुरा नहीं बताया और ना ही शास्त्रों में इनकी निन्दा की। बल्कि धर्म व सम्प्रदाय के नाम पर फैले पाखण्डों और पाखण्डियों को लताड़ लगाई, क्योंकि ये लोग धर्म-कर्म और सिद्धों के नाम पर पाखण्ड करते, जीवों की हत्या करते और करवाते हुए भौतिक लाभ प्राप्त करते हुए अपनी झूठी सिद्धियां एवं स्वार्थ साधते थे। अनेकों देवी देवताओं की पूजा करवाते थे। लोगों को जति तपस्वी, खेचर-भूचर, खेत्रपाल चौंसठ जोगीन, बावन बींरू, डाकण, साकण, बेताल भूत-प्रेत-पितर आदि को पूजवाने हेतु प्रेरित करते थे। तत्कालीन सूफी-दरवेश-पीर-जति- आयस फकीर-मुल्ला पुरोहित-ज्योतिषी आदि सब इसी प्रकार की कूटविद्या से लोगों को भरमाए रहते थे। ऐसे पाखण्डियों को जाम्भोजी ने फटकारते हुए सबदवाणी द्वारा धर्म के असली तत्व को समझाने की सफल कोशिश की थी।

इस प्रकार जाम्भोजी ने अनेकों जोगियों, जतियों, संन्यासियों, फकीरों, आयसों आदि को सबदों द्वारा चेताकर अपना अनुयायी बना लिया था। जैसा कि सबद 61 में घोड़ा चोली बालगुदाई का नाम आया है। एक दूसरे सबद 38 में लक्ष्मण जति का नाम आया है। एक अन्य सबद में बालकनाथ कमलनाथ जतियों का उल्लेख है। जो कुछ समय के लिये जाम्भोजी के समकालीन रहे थे। सुप्रसिद्ध योगी पृथ्वीनाथ-लक्ष्मणनाथ एवं जसनाथ जी तो जाम्भोजी के समकालीन ही थे। जाम्भोजी एवं जसनाथ का कई बार मिलन एवं संवाद बारे तो जसनाथी सम्प्रदाय के साहित्य में कई बार विस्तारपूर्वक वर्णन आया है। ऐसा वर्णन रामनाथ सिद्ध योगी ने किया है। इन सबको जाम्भोजी ने अच्छी फटकार लगाई थी जैसा कि सबद 38, 45 एवं 47 में आया हुआ है। हम ऊपर बता चुके हैं कि इक्कीस सबद तो जाम्भोजी जी ने आयसो के प्रति ही कहे हैं। इसलिये ऐसे शब्दों में जम्भवाणी एवं गोरखवाणी में समानता भी पाई जाती है।

-जयप्रकाश बिश्नोई
एडवोकेट
(पूर्व सम्पादक, अमर ज्योति)
270, डिफैंस कॉलोनी, हिसार

सादर निमंत्रण

बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस

23 अक्तूबर, 2016

सहर्ष सूचित किया जाता है कि बिश्नोई मंदिर, फतेहाबाद में 531वां बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया जाएगा। इस अवसर पर 17 से 23 अक्तूबर, 2016 तक साप्ताहिक जांभाणी हरि कथा का आयोजन किया जाएगा, जिसमें परम पूज्य स्वामी राजेन्द्रानन्द जी (हरिद्वार) द्वारा कथावाचन होगा। कार्यक्रम रूपरेखा -

17 से 22 अक्तूबर, 2016	-	कथा समय : दोपहर 12.15 बजे से सायं 3.15 बजे तक।
22 अक्तूबर, 2016	-	रात्रि जागरण : रात्रि 9.00 बजे से
23 अक्तूबर, 2016	-	यज्ञ एवं पाहल : प्रात: 7.00 बजे
	-	मुख्य कार्यक्रम : प्रात: 10.00 बजे
	-	प्रसाद वितरण : दोपहर 12.30 बजे

इस कार्यक्रम में आप सादर आमंत्रित हैं।

- निवेदक : बिश्नोई सभा, फतेहबाद

श्री वील्होजी की वाणी : परिचयात्मक मूल्याङ्कन

...गतांक से आगे

डॉ. बिश्नोई ने सम्पूर्ण रचनाएं सानुवाद प्रस्तुत की हैं। प्रारम्भ में एक संक्षिप्त भूमिका भी लिखी है। पुस्तक के प्रारम्भ में कुछ नामचीन हिन्दी लेखकों की सम्मत्तियां भी प्रकाशित की हैं। इनके नाम हैं- 'मौलिक ग्रंथ- वील्होजी की वाणी' आचार्य कृष्णानन्दजी, अध्यक्ष जांभाणी साहित्य अकादमी।

'भूमिका' डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई (लेखक स्वयं)

'गुरु जांभोजी एवं उनकी वाणी का प्रतिबिंब है: वील्होजी की वाणी' डॉ. सोनाराम बिश्नोई, जोधपुर

'संत वील्होजी: आख्यानकार के रूप में' ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल, जयपुर।

'जांभाणी काव्य परंपरा का उज्ज्वल ग्रंथ है: वील्होजी की वाणी' डॉ. भवर सिंह सामोर, चुरु।

'एक समग्र ग्रंथ: वील्होजी की वाणी' सुभाष बिश्नोई (आर.ई.एस.), बीकानेर।

'प्रस्तावना' प्रो. भूपतिराम साकरिया, वल्लभ विद्यानगर (गुजरात)

'सम्पादकीय' डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई (स्वयं)। पृष्ठ 1 से 42 तक उक्त सामग्री है। पृष्ठ 43 से सानुवाद वाणी प्रारंभ होती है जो पृष्ठ 265 पर अंत होती है।

आगे कई परिशिष्ट हैं जिनमें कई महत्त्वपूर्ण जानकारियां हैं। पुस्तक में कुल 265 पृष्ठ हैं। आकार 23"क्र36"/16 डेमी है। पृष्ठ, छपाई-सफाई बहुत अच्छी है। मूल्य 100 रुपये है। धर्मप्रचारार्थ अकादमी इस पुस्तक को कम दामों पर विक्रय करने तो तत्पर रहती है। इसका प्रकाशन व लोकार्पण अभी हाल ही में 15 अप्रैल, 2016 को जोधपुर में हुआ है। लेखक, सम्पादक, प्रकाशक सभी धन्यवादाई हैं। इस मूल्यांकन को पूरा करने के पूर्व कुछ बातें पाठालोचन व कुछ बातें अर्थ की और कर लें। डॉ. कृष्णलालजी बिश्नोई राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान से जुड़े विद्वान हैं और जन्मजात परंपरा से बिश्नोई हैं। इनके पूर्वज केसोजी देहडू जांभोजी महाराज के पाहळ पीकर बनने वाले शिष्य थे और आज भी इनके वंशजों में बिश्नोई- संस्कार दृढ़ता के साथ विद्यमान हैं।

मैं संपूर्ण वाणी पर केन्द्रित न होकर सीमित स्थानों से ही उदाहरण देकर अपनी बात कहूंगा। साखी क्रमांक 9/16 का पाठ इस प्रकार प्रकाशित हुआ है।

हूर कसूर मन्य मोहुणी, सर पर साध सुजाण।
जामण मरण जुरा नहीं, नित नवला न्हाण ॥16॥

सही पाठ पहली पंक्ति का इस प्रकार होना चाहिए

हूर- क सुर मन्य मोहुणी, सर पर साध सुजाण।

डॉ. बिश्नोई ने इसका अर्थ इस प्रकार दिया है

'वहां पर अप्सराएं देवताओं का मन मोहने वाली हैं, और वहां पर साधु सज्जन भी हैं। वहां पर जन्म, मरण और वृद्धावस्था नहीं है। वहां हमेशा ही युवावस्था रहती है।' पृष्ठ 80

उक्त अर्थ में प्रथम पंक्ति के 'सर पर' पदांश का अर्थ गायब है। वास्तव में इस पदांश का प्रयोग ही इस पंक्ति का अर्थ -गौरव है। इस पंक्ति में 'सुर देवता वाचक न होकर 'शूरवीर' वाचक है। राजस्थानी वीर रस के दोहों में बारबार उल्लेख मिलता है कि रणक्षेत्र में लड़ते हुए शूरवीर के कानों में चारणों के उत्साहवर्द्धक शब्द पड़ते हैं कि मरने पर स्वर्ग की अप्सराएं तुम्हारा वरण करने को तैयार हैं। अत: मरने से डरो मत। जीत जाओगे तो जगत में यश व राज्य प्राप्त करोगे। अत: पूर्ण शूरवीरता से लड़ो। कुल का नाम उज्ज्वल करो।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौंतेय युद्धाय कृतनिश्चय: ॥

-श्रीमद्भगवद्गीता 2/37

यदि मर जाएगा तो स्वर्ग की प्राप्ति होगी, जीत जाएगा तो भूमि को भोगेगा। अत: दृढ़ निश्चय करके युद्ध करने को उठ खड़ा हो।

कवि ने 'जुरा' शब्द काम लिया है। जरावस्था, वृद्धावस्था की उत्तरावस्था है और जरावस्था में भोग विष सम लगने लगते हैं। शरीर जीर्ण-शीर्ण हो जाता है जबकि मन वैसा का वैसा रहता है। स्वर्ग के सुखों का जरावस्था में भोगना असंभव है। अत: स्वर्ग में न जन्म है, न मरण है और न जरावस्था है।

'न्हाण' का मुझे किसी भी शब्दकोष में युवावस्था अर्थ नहीं मिला। 'नवला' नवेला शब्द है। इस नवेले के साथ 'न्हाण' का अर्थ आनंद ही उपयुक्त है। अर्थात् स्वर्ग में नित्य नया-नया आनंद मिलता है।

इस छंद का समग्र अर्थ होगा- स्वर्ग में शूरवीरों के मनों को मोहने वाली अप्सराएं हैं। इससे भी अच्छी बात है कि वहां सज्जन और बुद्धिमान लोग भी हैं। वहां न जन्म होता है, न मरण होता है और न वहां जरावस्था ही शरीर को व्यापती है। इसलिए वहां रहने वाला जीव नित्य नये-नये आनंद भोगता है।

त्रैविधा मां सोमपा: पूतपापायज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकमश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्॥
ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते॥

-श्रीमद्भगवद्गीता 9/20-21

साखियों में ही साखी क्रमांक 10/2 को लेते हैं।

बाबो जांबू दीपे प्रगट्यौ, चौहचकि कियो उजास।
अपदीठौ केवळ कथै, जिंह गुर की हमै आस॥

इसका अर्थ डाक्टर साहब ने इस प्रकार किया है- श्री गुरु जाम्भो महाराज जंबूद्वीप में प्रगट हुए हैं जिससे चारों ओर प्रकाश हो गया है। वह गुरु हमने स्वयं देखा जो सत्य वचन कहता है और उन गुरु से हमें बड़ी आशा है।'

इस साखी में 'अपदीठौ' 'केवळ' एवं 'हमै' शब्द ऐसे हैं जिन पर ही सारी साखी का अर्थ निर्भर करता है। बिश्नोई पंथ में यह प्रसिद्ध है कि जब वि.सं. 1673 चैत्रवदी एकादशी को रामड़ावास में वील्होजी ब्रह्मलीन होने लगे तब उन्होंने यह 'उमाहा' अथवा 'उमावड़ौ' नामक साखी कही और जांभोजी महाराज की महिमा गाई। जांभोजी महाराज सं. 1593 में विष्णु स्वरूप को प्राप्त हो गए। अत: इस साखी में प्रयुक्त शब्द 'हमै' वह गुरु हमने स्वयं देखा जो सत्य वचन कहता है और उस गुरु से हमें बड़ी आशा है' का वाचक नहीं हो सकता। वील्होजी बिश्नोई समाज में जांभोजी के परमधाम पधारने के आठ वर्ष पश्चात् सम्मिलित हुए। अत: न तो इन्होंने उनको देखा और न उनके श्रीमुख से उनके प्रत्यक्ष वचन सुने। अत: इस पंक्ति का वर्तमानकालीन अर्थ कदापि नहीं हो सकता।

वस्तुत: 'हमै' राजस्थानी का शब्द है और 'अबै' अर्थात् 'अब' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। मुहता नौणसी ने अपनी ख्यात व मारवाड़रा परगणां री विगत में इस शब्द का प्रयोग पदे-पदे किया है। अत: इसका सही अर्थ 'अब' है।

वील्होजी कहते हैं 'अब मुझको उस ही गुरु की आस है जिसका वर्णन मैंने किया है'।

अपदीठौ का अर्थ होगा 'जांभोजी महाराज स्वयं द्वारा अनुभूत केवळी ज्ञान कहा करते थे। केवळी ज्ञान शब्द भी पारिभाषिक है और यह जैन दर्शन से संतों में आया है जिसका तात्पर्य है - 'समस्त ज्ञानावरण का समूल नाश होने पर प्रकट होने वाला निरावरण ज्ञान 'केवल ज्ञान' है। यह आत्ममात्र सापेक्ष होता है। यह समस्त द्रव्यों के त्रिकालवर्ती सभी पर्यायों को जानता है। अतीन्द्रिय कहा गया है। दूसरे शब्दों में आत्मा की ज्ञानशक्ति का पूर्ण विकास या अविभवि केवल ज्ञान है।' (-भारतीय दर्शन, पृष्ठ 118, षष्ठ- संस्करण, ले. डॉ. अजित शुकदेव शर्मा, सम्पादक डॉ. नन्दकिशोर देव राज, प्रकाशक उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ)। अद्वैत वेदान्त तो आत्मा को ही ज्ञान स्वरूप मानता है। जिस क्षण जीव को अपनी आत्मा का यथार्थ बोध हो जाता है, वह परमात्मस्वरूप हो जाता है। हो जाता नहीं, अनुभव करने लगता है। यही कैवल्यावस्था, मुक्तावस्था है।

एवं विदेहकैवल्यं सन्मात्रत्वमखण्डितम्।
ब्रह्मभावं प्रपद्यैष यतिनवितंते पुन: ॥568॥

अखंड सत्तामात्र से स्थित होना ही विदेह कैवल्य है। इस प्रकार ब्रह्म भाव को प्राप्त होकर यति फिर संसार चक्र में नहीं पड़ता। विवेक चूड़ामणि आचार्य शंकर विरचित।

वील्होजी ने यहां केवल शब्द का प्रयोग करके दिखाया है कि जांभोजी महाराज केवल महापुरुष थे और केवळी ज्ञान का कथन करते थे। इस छंद का समग्र अर्थ इस प्रकार होगा।

जांभोजी महाराज जम्बूद्वीप में प्रगटे जिन्होंने चतुर्दिक् ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाया। वे स्वयं द्वारा अनुभूत केवल ज्ञान (आत्मा ही परमात्मा है, दोनों में भेद नामक कोई वस्तु या तत्त्व नहीं है) कहते हैं। अब मुझको उन्हीं गुरु की आशा है। (वे ही मुझे अपना चरणाश्रय प्रदान करेंगे।)

इसी दसवीं साखी का पांचवां दोहा है-

भगवीं टोपी पहरतो, गळि कंथा दस नाम।
झीणी वाणी बोलतो, वरज्यौ (छ) वाद विराम॥10/5॥

इसका अर्थ निम्न दे रखा है- 'गुरु महाराज जांभोजी भगवी टोपी पहनते थे और उनके गले में जप माला थी। वे सत्य बोलते थे और वाद-विवाद करना मना करते थे।'

डाक्टर साहब ने 'कंथा' का अर्थ 'माला' किया है जो अर्थ नहीं, अनर्थ है। संत लोग गर्दन के नीचे कंधों से लगाकर पैरों की पिंडलियों तक एक चोगा पहनते हैं जिसको कंथा कहते हैं। (स्कंध-कंध-कंथ-कंथा) यह लम्बा झब्बा ही होता है और जांभोजी कंथा ही पहनते थे। वे अन्य साधुओं की भांति चादर वगैरह नहीं ओढ़ते थे। अत: इस साखीगत 'कंथा' का तात्पर्य माला न होकर वस्त्र विशेष है जिसको जांभोजी पहनते थे। बहुत से संत इस कंथे को फटे-टूटे चिथड़ों से बनाते हैं। बहुत से संत इसको गूदड़ी भी कहते हैं।

डाक्टर साहब ने 'दस नाम' क्या है, का कोई स्पष्टीकरण नहीं किया है। बिश्नोई ऐसा मानते हैं कि जांभोजी के पूर्व विष्णु के नौ अवतार हो चुके थे। यह उनका दसवां अवतार था और वे स्वयं विष्णु होते हुए भी विष्णु का ही नाम जपते तथा जपवाते थे। यहां 'दस नाम' दसवें विष्णु अर्थात् विष्णु स्वरूप स्वयं का ही नाम स्मरण करते थे, ऐसा अर्थ ग्रहण करना सर्वथा समीचीन है जैसा कि 10/4 साखी में कहा है- 'संभू रो सिंवरण करै, जोय जप सोई आप।' (जिस स्वयंभू का वे जप सुमरण करते हैं, वे स्वयं वही हैं।)

डाक्टर साहब ने 'झीणी वाणी' का अर्थ सत्य बोलते थे' किया है, यह भी चिन्त्य अर्थ है। साधुओं के लक्षण बताते समय अनेक स्थानों पर कहा गया है कि साधु को धीमी आवाज में बोलना चाहिए। ऊँची अथवा पुरुष-वाणी नहीं बोलनी चाहिए। यहां भी 'झीणी' का तात्पर्य 'मंद स्वर में मीठी वाणी बोलते थे' अर्थ विवक्षित है।

इसका शब्दान्वयी अर्थ होगा-

जांभोजी भगवे रंग की टोपी पहनते थे, गले में कंथा पहनते थे तथा उनके (मुख में) विष्णु का नाम रहता था। वे मृदु और मधुर वाणी बोलते थे तथा उन्होंने वाद-विवाद को विराम देने का उपदेश दिया है।

बत्तीस-आखड़ी का एक छंद और देखिए-

सेरा उठै सुजीव, छाण जल लीजियै।

दाँतण कर करै सिनान, जीवाणी जल कीजियै॥1॥

इसका अर्थ दे रखा है-

'कवि वील्होजी कहते हैं कि सुबह जल्दी उठकर पानी को छान कर लेना चाहिए, दाँतुन करके जीवरहित जल से स्नान करना चाहिए।'

इस छन्द में प्रयुक्त शब्द 'जीवाणी' पारिभाषिक है और जैन लोग इसका प्रयोग सर्वाधिक करते हैं। रामस्नेही- सम्प्रदाय में भी इस शब्द का उसी अर्थ में प्रयोग होता है जिसमें इसका जैन धर्म में होता है।

दोवड़ा (दुहरे, दो परते) गाढ़े कपड़े को दोनों हाथों में इस प्रकार पकड़कर जल में उतारा जाता है कि उसमें जल भर जाता है। पास में रखे घड़े में उसमें से रिसते हुए जल को भर लिया जाता है। फिर उस गलणे को (जल छानने को) पुन: जल में उतार दिया जाता है ताकि उसमें शेष रहे जल के सूक्षातिसूक्ष्म जीव पुन: जल में चले जाएं। इस प्रकार यह प्रक्रिया जब तक चलती रहती है तब तक कि घड़ा पूरा नहीं भरता। नदी, तालाबों में नहाते समय भी यही प्रक्रिया अपनाते हुए मैंने रामस्नेही संतों को देखा है। जीवाणी करने से जल के जीव मरते नहीं, फलत: हिंसा भी नहीं होती। यहां वील्होजी ने इसी 'जीवाणी' का उल्लेख किया है।

भागवत्कार कहता है-

'दृष्टिपूतं न्यसेत् पादं वस्त्रपूतं पिवेज्जलं।'

देखकर चलना चाहिए तथा वस्त्र से छानकर जल पीना चाहिए।

इस छंद का शब्दान्वयी अर्थ होगा-

प्राणी प्रात:काल उठे और जीवाणी करके जल को छाने, छने हुए जल से दातुन व स्नान करें।

पुस्तक की सभी रचनाएं सानुवाद हैं। कहीं-कहीं अनुवाद बहुत अच्छा है व कहीं-कहीं उसमें कुछ भूलें भी हैं। जांभोजी के शब्दों को मैं जितना समझ सका हूं, उसके आधार पर कहा जा सकता है कि डॉ. बिश्नोई की पुस्तक के बहुत कुछ अंश इस पंथ की विचाराधारा का प्रतिनिधित्व करती है। अत: यह पुस्तक पठनीय, संग्रहणीय व इष्ट मित्रों में वितरण करने योग्य है। इसका हार्दिक स्वागत किया जाना चाहिए तथा सभी को इसको अपने संग्रहों में रखना चाहिए।

-ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल
संपादक, रामस्नेही संदेश
60/60, राजपथ, मानसरोवर, जयपुर (राज.)
मो.: 9351503555, email-bks@emactool.com

बधाई सन्देश

केशवानंद पुत्र श्री रामेश्वर लाल धारणिया निवासी लखासर, जिला हनुमानगढ़ (राज.) ने सहायक अभियंता (यांत्रिक) परीक्षा में पूरे राजस्थान में प्रथम स्थान प्राप्त किया है एवं राजकीय सेवा में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मान भी प्राप्त किया। वर्तमान में आप सहायक अभियंता लिफ्ट खण्ड, इ.गा.न.प. में कार्यरत है।

प्रेरणा पुत्री डॉ. कृष्ण कुमार जौहर, निवासी मंगाली सुरतिया, जिला हिसार को 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' अभियान के तहत लोगों में जागृति लाने व प्रेरणा देने के लिए प्रदेश के खाद्यमंत्री कर्ण देव कम्बोज द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर नकद राशि व सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया।

संतोष सुपुत्री श्री सुरेन्द्र कुमार गिला निवासी जंडवाला बिश्नोइयान, सिरसा ने AIPMT द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रवेश परीक्षा में सफलता प्राप्त कर MBBS में प्रवेश प्राप्त किया है।

शशांक पुत्र श्री सुभाष चंद्र कड़वासरा, सहायक लेखाधिकारी, जिलाध्यक्ष, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा शाखा, श्रीगंगानगर का चयन निरीक्षक, केंद्रीय उत्पादकर के पद पर हुआ है। वर्तमान में आप तमिलनाडू में सेवारत हैं।

पूर्णिमा सुपुत्री श्री सुशील कुमार सिगड़ निवासी - जंडवाला बिश्नोइयान, सिरसा ने AIPMT द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रवेश परीक्षा में सफलता प्राप्त कर MBBS में प्रवेश प्राप्त किया है।

कमलेश रानी पुत्री श्री हवासिंह गोदारा निवासी महलसरा, हिसार ने बारहवीं कक्षा वाणिज्य संकाय में 93.8% अंक प्राप्त किये हैं।

शीतल पुत्री श्री अनिल कुमार ढुकिया, निवासी लालवास, जिला फतेहाबाद ने 10वीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में 10 सी. जी.पी.ए. प्राप्त किया है।

कपिल पुत्र श्री रमेश चंद्र गोदारा, निवासी कालीरावण, जिला हिसार ने 10वीं कक्षा में 91 प्रतिशत अंक प्राप्त किए है।

दिनेश पुत्र श्री सुभाष चंद्र, निवासी चारनोद, जिला हिसार ने 10वीं कक्षा की परीक्षा 91 प्रतिशत अंकों के साथ पास की है।

मांगीलाल पुत्र स्व. श्री बीरबलराम अग्रवाल, निवासी पोलास, जिला नागौर राजस्थान को पर्यावरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर माननीय जिलाधीश नागौर द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

आपकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

गुरु जाम्भोजी : वैचारिक क्रांति के अग्रदूत

जब हम सभ्यता के विकास के बारे में बात करते हैं तो पाते हैं कि सभ्यताओं के विकास का मतलब व्यक्ति का विकास ही है अन्य विकास उससे आगे के विषय है अत सभ्यताओं के मूल्यांकन की कसौटी भी व्यक्ति के विकास व व्यक्ति की स्वतंत्रता पर ही आधारित है। व्यक्ति ने अपने विकास में सबसे ज्यादा उपयोग अनुभूति व अनुभव का किया है। शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा के द्वारा संयुक्त या एकल रूप से महसूस की गई प्रतिक्रिया को हम अनुभव कह सकते हैं। जैसे ही मनुष्य अपना जीवन प्रारंभ करता है तो उसे जीवन की हर परिस्थिति में जो महसूस होता है वह उसके अनुभव के रूप में संचित होता रहता है। अनुभव के आधार पर धारणा का निर्माण होता है जिसे हम आगे आने वाली पीढ़ियों को धरोहर व विरासत के रूप में सौंप देते हैं। धारणा के दो आधार हो सकते हैं जिन्हें मैं विश्वास व विचार में विभाजित कर सकता हूँ । सबसे पहले हम विश्वास पर विचार करते हैं जिसे श्रद्धा या आस्था भी कहा जा सकता है। श्रद्धा व आस्था का कोई ठोस आधार नही होता है बल्कि विभिन्न तरीकों से इसे स्थापित ही किया जाता है ताकि लोग इस श्रद्धा व आस्था के आगे केवल नतमस्तक रहे और सोचने की क्षमता को क्षीण करता रहे। पुरातन समय से लेकर आज तक इसी विश्वास को तथाकथित धर्म गुरूओं व सत्ताधारियों ने हथियार के रूप में इस्तेमाल किया है। धर्म से लेकर सत्ता व आम जीवन में यही श्रद्धा व विश्वास स्वीकार्य है क्योंकि यह अंधा जो होता है जिससे व्यक्ति अच्छे व बुरे को जाने बगैर अंधविश्वास में जाता रहे व श्रद्धा व विश्वास से गौरवान्वित होता रहे। राजा को ईश्वर का दर्जा व तथाकथित पंडों व पुजारियों का मूर्तियों पर आधारित धर्म इसी अंधी श्रद्धा व विश्वास का जीवंत दस्तावेज है । बाद में यही अंधी श्रद्धा व विश्वास शोषण का माध्यम बन जाती है और आम आदमी स्वयं के शोषित होने का रास्ता खुद ही तय कर लेता है। इसी शोषण के व्यापार से जाति व वर्ण बनते हैं क्योंकि माध्यम तो आवश्यक है ही जिससे शोषण पीढ़ियों तक चलता रहे व शोषित होने वाला व्यक्ति इन व्यवस्थाओं में इतना रच बस जाये कि इस शोषण के लिए किसी को जिम्मेदार भी न ठहरा सके।

इस अंधविश्वास व शोषण से बचाव का एक ही उपाय है वह है विचार ! विचार जो पैदा होते ही स्वयं में क्रांति का एक बीज समाये होता है। इसीलिए हर धर्म ने हर सत्ता ने हर धार्मिक शिक्षक ने विचार को पैदा होने ही नहीं दिया व विश्वास व आस्था को हथियार बनाये रखा । यहां तक कि विचार की ताकत वाले मनुष्य को अधार्मिक व नास्तिक भी कहा गया । हर सत्ता ने आने वाली पीढ़ियों के लिए ऐसे पाठ्यक्रम तय किये जो श्रद्धा को ही बढ़ावा दे जिससे विचार सुप्त रहे व शोषण जारी रहे।

15 वीं शताब्दी में संभराथल धोरे पर एक विचार का उदय हुआ, जिसे हम विश्नोईज्म कहते हैं व उस विचार के अनुयायी होने से विश्नोई कहलाते हैं। जाम्भोजी मनुष्य को समझते हैं, उसकी परम्पराओं को जानते हैं, उसकी रूढिवादिता को पहचानते है, उसकी पुरातन से चिपकने के स्वभाव को परखते हैं व फिर उसी मनुष्य को इतनी मुश्किलों के बीच एक विचार दे देते हैं कि वह स्वयं निर्धारित करे कि सही क्या है ? गलत क्या है ? जाम्भोजी व्यक्ति को स्वयं में व दूसरे मनुष्य में ईश्वर के होने का आभास करवाते हैं, जीवों में, प्रकृत्ति में उस परम सत्ता की अनुभूत करवाते हैं तो यकायक ही व्यक्ति के मन व मस्तिष्क में एक क्रांति का उदय हो जाता है। यह क्रांति मन व मस्तिष्क में पैदा होते ही पुरातन जड़ धारणायें खंड खंड होकर बिखरने लगती है, मंदिर व मस्जिद में रखे प्रतीक बेमानी हो जाते हैं , अँधेर गहराइयों से एक नि:शब्द पुकार उठती है और पहली बार व्यक्ति को स्वयं के व्यक्ति व अद्वितीय होने का अहसास होता है। यह रूपांतरण जब धरातल रूप लेने लगता है तो सत्ताएं घबरा उठती हैं, तथाकथित धर्म गुरूओं के सिंहासन व पद अपना अर्थ खो देते हैं, मंदिर व मस्जिद केवल पत्थर की इमारतें बन कर अदब से खामोश हो जाती है। धर्म के नाम पर जड़ परम्पराओं को ओढे आदमी चादर की तरह फेंक देता है। प्रकृति संगीतमय हो जाती है व जीव जंतु अपना जीवतंता के अहसास से संवेदना की लहर गुंजायमान कर देते हैं। जगह जगह से लोग अपने अनुभवों व दृष्टिकोण को लिए संभराथल आते हैं व विमर्श करते है व अपनी धारणाओं को सही ठहराने की कोशिश करते हैं। जाम्भोजी किसी धारणा या दृष्टिकोण को गलत या भला बुरा कहे बगैर उस व्यक्ति

की हथेली पर एक विचार रख देते हैं कि वह स्वयं अपनी गलत व जड़ धारणा को छोड़ते क्योंकि यदि जाम्भोजी तोड़ते तो फिर वही श्रद्धा व विश्वास का खेल शुरू हो जाता। विचार की ताकत से आये हुए व्यक्ति के बंद कपाट खुल जाते हैं व उसकी स्वतंत्रता की राह भी। मनुष्य को उत्कृष्ट बनाने की इस जंग व संघर्ष को जाम्भोजी नये आयाम दे देते हैं जब वे उन स्वतंत्र मनुष्यों की जमात के साथ नारी की समानता, जल संरक्षण, जीवों की रक्षा,आडम्बरों का विरोध, ऊंच नीच का विरोध, जाति व वर्ण व्यवस्था की खिलाफत करते हैं। इन कदमों से जहां एक ओर मानव इतिहास में एक नये युग का उदय होता है वहीं वे स्वतंत्र मनुष्य सृजन की ओर कदम बढ़ाते हैं। उन्हीं मनुष्यों की नि:शब्द पुकार जब परमात्मा के लिए शब्द पाते हैं तो बरबस ही साखी फूट पड़ती हैं जिसमें स्वयं परमात्मा भी अर्थ पा जाता है। तथाकथित धर्म, पंडे, पुरोहित, काजी गौण हो जाते हैं व व्यक्ति व उसका कर्म प्रमुख हो जाते हैं। व्यक्ति की स्वतंत्रता की लड़ाई को जाम्भोजी बड़े ही विलक्षण तरीके से अंजाम देते हैं। संन्यास की पौराणिक धारणाओं का खंडन हो जाता है, संन्यास का मतलब घर छोड़ कर नारी से विमुख होकर कंदराओं में चले जाना तुच्छ हो जाता है व संन्यास की एक नया ही स्वतंत्र रूप निकल कर आता है। जाम्भाणी परम्परा में अनेकों ऐसे संत हुए जिन्होंने ग्रहस्थ को भी जीया व परमात्मा हेतु साखी भजनों का सृजन व मानवीय व कल्याणकारी कार्य करते हैं जिससे सभी विश्नोई पंथी ही अप्रत्यक्ष रूप से संत का दर्जा पा जाते हैं। जब हम जाम्भोजी में श्रद्धा व विश्वास की बात करते हैं तो यह श्रद्धा व विश्वास उस विचार के प्रति है जो जाम्भोजी ने हमें बताया व सदियों से हम उसी विचार से जीवन जी रहे हैं। जाम्भोजी ने परमात्मा की प्राप्ति के माध्यम को गौण कर दिया व व्यक्ति के पवित्र व सात्विक होने का विचार दिया, जिससे स्वयं में परमात्मा को अनुभव किया जा सके। जाम्भोजी ने एक तार्किक व्यक्ति की संकल्पना की जो हर विषय को तर्क की कसौटी पर परखे व आचरण करे ना कि ईश्वर के नाम पर ढोंगियों के जाल में निरी श्रद्धा व विश्वास से ही फँस जाये । जाम्भोजी मानवता के ईश्वर है क्योंकि वे इंसानियत को बचाना चाहते हैं , वे मंदिरों या मस्जिद में कैद नही होना चाहते बल्कि व्यक्ति के कर्म व दिलों में जिंदा रहना चाहते हैं। जाम्भोजी ईश्वर के नाम पर व्यापार के सख्त विरोधी है क्योंकि इससे मनुष्यों का शोषण ही होता है। आज जब बड़े बड़े मंदिरों व मक्का की भगदड़ में ऐसे धर्मांध मनुष्यों को मरते देखता हूँ तो यकीनन जाम्भोजी के विचार प्रासंगिक होकर जीवंत हो उठते हैं। जब बड़े-बड़े मठों व देवालयों के बाहर जीवन की खुशियों की भीख माँगते याचक समुदाय को देखता हूँ तो सोचता हूँ कि खुशियों का केन्द्र तो भीतर छिपा है और लोग बाहर भटक रहे हैं तो जाम्भोजी के विचारों की तार्किकता पर गौरवान्वित हो जाता हूँ। मंदिरों में प्रवेश के लिए मातृशक्ति को संघर्ष करते देखता हूँ व पोंगापंडितों को विरोध करते देखता हूँ तो याद आते हैं जाम्भोजी के वे नियम जो ना केवल मातृशक्ति को हवन से लेकर समस्त धार्मिक कर्मों की इजाज़त देते हैं बल्कि नारी को परिवार व समाज में श्रेष्ठ दर्जा देते हैं। जाम्भोजी एक अद्वितीय कार्य करते हैं जब वे कोई नई व्यवस्था नहीं देकर उसी पुरातन से ऐसे हीरे मोती निकाल कर देते हैं जो ना केवल पुरातन को सही ठहराने का काम है बल्कि नया का आमंत्रण व तार्किक स्वीकार्यता भी है । जब जब जाम्भोजी के नियमों व शब्दवाणी से होकर गुजरता हूँ तो एक हल्केपन के अहसास से भर जाता हूँ क्योंकि जाने अनजाने में जिन जड़ धारणा को ओढे हुए था वे उतर जाती है। एक मनुष्य होने के अहसास से गुजरता हूँ व स्वतंत्र होने का सुखद अनुभव भी ।

जाम्भोजी इस सृष्टि को बचाना चाहते हैं और बचाने की जिम्मेदारी स्वयं पर लेकर अवतारवाद को पोषित नही करते बल्कि जिम्मेदारी स्वयं मनुष्य को सौंप देते हैं। जाम्भोजी मनुष्य के कदम कदम पर उसे सावधान करते हैं और उसे सांसारिक जीवन के साथ अंदर की यात्रा की अद्वितीय साथ देते हैं। जाम्भोजी मनुष्य को ऐसी क्षमता देते हैं जिससे वह व्यवस्था बदल सके। जाम्भोजी आलोचना को व्यक्ति के कार्य सफल होने की प्रमाणिकता मानते हैं जिससे व्यक्ति विचलित नहीं हो। पोषित समाज, परम्परा, अवधारणा, लोक मान्यता से परे जब जाम्भोजी को जानने निकलता हूँ तो ऐसा लगता है कि जैसे जाम्भोजी किसी बुजुर्ग की तरह दुलार रहे हैं और मन मस्तिष्क में वैचारिक ताकत भर रहे हैं। यदि मनुष्य व सृष्टि को बचाना है तो जाम्भोजी को पदे पदे जानना व मानना होगा। वैचारिक संघर्ष व मतभेद अभी विश्व में और उभर कर आयेंगें तब समाधान सबदवाणी ही देगी, किसी मंदिर की या मस्जिद की चौखट नहीं ।

-संदीप धारणियां (एडवोकेट)

गंगानगर (राज.) फोन : 90018-03094

आनदेव को चित्त जम्भेश्वर उर ध्यान

गुरु जम्भेश्वर भगवान ने निराकार, निर्गुण भगवान आदि विष्णु की अराधना का मार्ग बताया

सबदवाणी में बार-बार विष्णु जाप बताया गया जिसको ही मोक्ष का मार्ग बताया

" विष्णु-विष्णु तू भण रे प्राणी पैके लाख उपाजूं।
रतन कायो बैकुण्ठे बासो तेरा जरा मरण भय भाजूं" तो बिश्नोई पंथ के लोग विष्णु की अराधना को छोड़कर जन्मे हुए जीवों की पूजा करते हैं तथा बिश्नोई साधु-संत व गायणा जानते हुए भी इनको बढ़ावा देते है। जाम्भोजी ने कहा है।

" जाणत भूला महापापी"

अर्थात् जो जानते हुए गलत कार्य करते हैं वे महापापी है। साधु संत माया के लिए आन देव (सती दादी, सता दादा, भोमिया जी, भैरू जी आदि) का जागरण लगाते है, आन देव के मन्दिर बनाते हैं, कलश स्थापना तथा प्राण-प्रतिष्ठा आदि करते हैं। भागवत कथा, गौ कथा, नानी बाई रो मायरो आदि को इन साधु-संतो ने आय का जरिया बना लिया है। जाम्भोजी तो यह बताते हैं "सांझे जमो सवेरे थापण" अर्थात् सांय काल आरती, साखी (जागरण) व सुबह होम बताया है जो प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है तथा जाम्भोजी के बताये अनुसार करना चाहिए।

जाम्भोजी ने कहा-

"जा मन मंत्र विष्णु न जप्यो ते न उतरिबा पांरू"

भगवान जम्भेश्वर ने जन्मे जीवों की पूजा को मना करते सबद संख्या पांच में कहा है।

" अइयालो अपरपर वाणी। म्हे जपां न जाया जीऊँ॥
नव अवतार नमो नारायण। तेपण रूप हमारा थीऊं,
जपी तपी तक पीर ऋषिवर कांय जपी जै तेपण जाया जीऊं॥
खेचर भूचर षेत्रपाला परगट गुप्ता, कायं जपीजे तेपण जाया जीऊं, बासंग शेष गुणिदां फुणिंदा, काय जपी जै तेपण जाया जीऊं, चौसट जोगिनि बावन बीरु कायं जपी जै तेपण जाया जीऊं, जपा तो एक निरालंभ शम्भू जिंही कै माई न पीऊं न तन रक्तू न तन धातु न तन ताव न सीऊं सर्व सिरजत मरत बिबरजत, तासन मूलज लेणा कियों अइयालो अपरपंर वाणी, म्हें जपा न जाया जीऊं।''

भावार्थः- जाम्भो जी ने बताया कि अपरंपर वाणी का जाप करो अर्थात् विष्णु भगवान का जाप करो, औरों की पूजा मत करो। जाम्भोजी कहते है जो नव अवतार हुए थे (मैनावतीयो, कामटीयो बाराही, नृरसिह बावन परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध) मेरे ही अवतार हैं अर्थात् विष्णु के अवतार है। इसलिए मूल (विष्णु) को खोजो -

"भल मूल सीचों रे प्राणी"

संन्यासी, तपस्वी, ऋषियों, पीरों, नभचर (आकाश में विचरण करने वाले) थलचर (जमीन पर विचरण करने वाले) खेत्रपाल, चौषट जोगनिया (बाईयाँ-माईयाँ) बाबा पीर (भैरूजी) आदि जन्मे हुए जीवों की पूजा मत करो। जपना है तो निराकार स्वयंभू (विष्णु) का जप करो। जिसके कोई माँ-बाप नहीं है, जिसके शरीर रक्त धातु-ताप और शीत कुछ भी नहीं है, जो सबका सृजन करता है तथा स्वयं मृत्यु से रहित है उसका जप करो, गुरु जाम्भोजी ने कहा है कि मेरी वाणी अपरंपर है मेरे शब्द असंख्य प्रमोदी है। अतः हे लोगों ! तुम जन्मे जीवों की पूजा मत करो अर्थात् गुरु जाम्भोजी ने जन्मे जीवों की पूजा करने के लिए मना किया है।

जाम्भोजी ने सबदवाणी के शब्द संख्या 42 में कहा है कि '**आयसा काहे काजे खेह भकरूड़ो सेवो भूत मसाणी**' हे आयस! किस कारण राख से भूरे होते हो और शमशान में भूत साधना करते हो।

गुरु जम्भेश्वर भगवान ने सबदवाणी के सबद संख्या 69 में कहा है कि **"भूत प्रेती कायं जपी जे यह पाखण्ड परमाणो।"** भूत प्रेतों को क्यों जपते हो ऐसा करना निश्चित रूप से पाखण्ड है। इसलिए बिश्नोई पंथ के लोगों को गुरु जाम्भोजी के कहे अनुसार व मोक्ष प्राप्ति के लिए भूत प्रेतो व जन्मे जीवों की पूजा नहीं करनी चाहिए।

- दाणुराम सारण
गाँव भोजासर (फलोदी), जोधपुर
मो. 9413650329

आलमजी कृत हरजस (राग सुहब)

अब झिल्य जा रे म्हारा पंथिया।
पथड़ै मत लाए वार, सनेसो म्हारो श्रीरंग नै कहिया॥1।टेक॥

पंथी दोय सुलखणां, सकळ कळा चंद सूर।
एह पटतर देह नै, हरि नेड़ा बसै कै दूर॥2॥

कोई यै बतावै हरि आंवतो, सांई म्हारो पांथलियां।
आरती वूठा मेह ज्यौं, पूजै मन रळियां॥3॥

निघनियां धनिवाळ हौ, आरती आरतियांह।
यौं हरि हमकूं वालहौ, ज्यौ चंद कमोदनियांह॥4॥

जां देसां फळ नां घटै, आवै स्यांम दिसाह।
जींऊ जो प्यारौ मिलै, पछम रो पतिसाह॥5॥

सेत दीप अैराक षंड, बसै पछंम रै देस।
सो जन पग पाहळ लेऊ, ल्यावै वांहु संदेस॥6॥

ढुल-ढुल घोड़ै साखती, आयो स्याम नरेस।
तिरलोकां रो पोखणौं, सुरनर सकळ नरेस॥7॥

आलमां जोति झिगमिगै, मेघाडंबर छाति।
कौड़ि तेतीसां रो पेखणौं, परसां निकळंक पाति॥8॥

1. हे मुसाफिर, अब रास्ते चलने की तैयारी करो, देर मत लगाओ, सतगुरु श्री जाम्भोजी महाराज को मेरा संदेश उसी रास्ते में कहना।
2. संसार में दो विशेष मुसाफिर चन्द्रमा और सूर्य हैं। हे मुसाफिर उनसे पूछना कि भगवान आपके नजदीक हैं या दूर रहते हैं।
3. अगर मुझे कोई यह बताए कि सतगुरु महाराज हमारे रास्ते पधार रहे हैं तो हम इस प्रकार प्रसन्न होंगे जैसे किसान वर्षा से प्रसन्न होते हैं और हमारी सब मनोकामनाएं पूर्ण होगी।
4. निर्धनों को जैसे धन प्रिय हैं और स्वामी सेवकों को प्रिय हैं ऐसे ही मुझे सतगुरु महाराज प्रिय हैं जैसे कमोदनी को चन्द्रमा प्रिय होता है।
5. उस देस में कुछ भी अशुभ नहीं होता जिस देस में भगवान आते हैं मैं तो तभी जीवित रह सकता हूँ जब मुझे पश्चिम का बादशाह अर्थात् जाम्भोजी महाराज मिले।
6. यह श्वेत दीप और अैराक खंड का निवासी है जो पश्चिम के देस मरूभूमि में निवास करते हैं। मैं उनके पैरों को धोकर वह पवित्र पाहल लेऊंगा, यदि कोई मुझे उनके आने का समाचार कहे।
7. वह स्वामी सजावट वाले घोड़े पर सवार होकर आया है, जो तीनों लोकों का भरण-पोषण करने वाला है। वह देवता और मनुष्य सबका स्वामी है।
8. कवि आलमजी कहते हैं कि उनकी ज्योति का प्रकाश आकाश में बादलों की घटाओं में भी हो रहा है। वे तेतीस करोड़ों को देखने वाले हैं ऐसे निष्कलंक स्वामी के चरणों को स्पर्श करो।

हरजस (राग धनासी)

अब न रहै गोपाल राय, तम विन मेरो जीवड़ौ न रहै॥1॥टेक॥

जब नहीं देखूं सांमी सुंदर कूं, यों तन विरह दहै॥2॥

ओस पियास न भाजै मेरे जीव की, मेघ मगन होय रहै॥3॥

योह पर पीर कूं न जानै मेरे जीव की, तम विन कुण जानै है॥4॥

जां तन लागी सोई तन जाणै, तांमां जिसी बहै॥5॥

सरण राखो प्रभु अपनै मन कूं, आलमो अरज कहै॥6॥

1. हे गोपाल, अब मेरा जीव आपके बिना नहीं रह सकता।
2. जब मैं श्याम सुन्दर को नहीं देखता हूँ, तब तक मेरे हृदय में विरह अग्नि दहकती है।
3. मेरे मन की प्यास ओस रूपी अन्य देवों से नहीं मिटती। परमपिता परमात्मा जो बादल रूपी हैं, उन्हीं से यह मिटती है।
4. मेरी इस पीड़ा को आपके बिना कौन जान सकता है।
5. जिसको चोट लगी है, वही उसकी पीड़ा को जानता है। जिसमें जैसी बीती है।
6. आलमजी कहते हैं- हे प्रभु, मेरे मन को आपकी शरण दो।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

बिश्नोई लोकगीत

विवाह के गीत (प्रथम दिन)

कठोड़ै सूं आया ए, सइयां मोरी बेड़िया?
ए तो कठोड़ै सूं आया रे, नारेल सोपारी ए, रूड़ी बाकळी?
एक तो रावतसर सूं आया रे, सइयां मोरी बेड़िया।
ए तो बीकानेर में झाल्या नारेल सोपारी ए, रूड़ी बाकळी।
ए तो हंस हंस आया रे, सइयां मोरी बेड़िया।
ए तो हंस-हंस झाल्या नारेल सोपारी ए रूड़ी बाकळी।
ए तो सगै-सगै कियो अळौच, नारेल सोपारी रूड़ी बाकळी।
ए तो कठोड़ै तो मैल्या ए, सइयां मोरी बेड़िया।
ए तो कठोड़ै तो मैल्या ए, नारेल सोपारी ए रूड़ी बाकळी।
ए तो झरोखा में मैल्या ए, मोरी बेड़िया।
ए तो आळीय में मैल्या ए नारेल सोपारी ए रूड़ी बाकळी ॥3॥

---❊❊❊---

चोखा सा चावळ पीळा होया, म्हारा भंवर निंवतरण।
गांव न जाणूं, नांव न जाणूं, किण घर जाऊं मोरी सइयां निंवतण?
गांव रावतसर नाव रामू जी जां घर जाई म्हारा भंवर निंवतण।
भाइड़ा में बैठया रामू जी निवत्या,
राव रसोवड़ै में बैठी सगी जी निंवती।
चोखा सा चावळ पीळा होया, म्हारा भंवर निंवतण।
गांव न जाणूं, नांव न जाणूं, किण घर जाऊ मोरी सइयां निंवतण?
गांव हिसार राजू जी, जा घर जाई म्हारा भंवर निंवतण।
भाइड़ा में बैठया राजू जी निंवत्या,
राव रसोवड़ै में बैठी बाई निंवती ॥4॥

---❊❊❊---

हसती दांत कै री पीडी ओ राज, मूंगै पीळे पाट बणी।
जां पर बैठी कमला बाई ओ राज, बाबा सेती अरज करै।
बाबा जी लिलोड़ी पिलाणो ओ राज, दिल्ली गढ़ गै मारगां में।
सामै मिलग्या रामू जी ओ राज, थे सगा जी सिध चाल्या?
घरै धीवड़ी कंवारी ओ राज, सेर सोनो ल्यावण चाल्या।
थे सगा जी पाछा घिर जावो ओ राज, सेर सोनो म्हें लायस्या।
हसती दांत कै री पीडी ओ राज, मूंगै पीळे पाट बणी।
जां पर बैठी कमला बाई ओ राज, दिल्ली गढ़ गै मारगां में।
सामै मिलग्या रामूजी ओ राज, थे सगा जी सिध चाल्या?
घरै धीवड़ी कंवारी ओ राज, सेर सोनो ल्यावण चाल्या।
थे सगा जी पाछा घिर जावो ओ राज, सेर सोनो म्हें लायस्या ॥5॥

---❊❊❊---

के तूं चांद सूरज राय जादा, सूरज राय जादा,
के तूं हाकम जी रो छावो ओ राज?
ना हूं चांद सूरज राय जादी, सूरज राय जादी,
ना हाकम जी रो छावो ओ राज।
म्हें सा कालू जी रा छावा राय जादी, छावा राय जादी,
धापी दे री कूखा बिरालो ओ राज।
के थारा डेरा हरिय बागां में राय जादा, बागां में राय जादा?
के थारा डेरा चम्पलै री डाळी ओ राज?
ना म्हारा डेरा हरिय बागां में राज जादी, बागां में राय जादी।
ना चम्पलै री डाळी ओ राज।
डेरा सै रामू जी जी रीं पोळ राय जादी, पोळ राय जादी।
जा घर धीवड़ी कंवारी ओ राज, कंवारी ओ राज।
थे क्यूं डरो म्हारा सगा जी, म्हारा सगा जी।
म्हें म्हारा बल कर आया ओ राज।
गाडो छल म्हें गुड़गो जी लाया, गुड़बो जी लाया।
ऊपर घाड़िया गाया गा घी रा ओ राज।
रोटी तो म्हें जीम रै आया, जीम रै आया,
पाणी तो म्हें जाय पीयस्या ओ राज ॥6॥

साभार- बिश्नोई लोकगीत

सद्गुरु जाम्भोजी और आर्थिक विकास

आर्थिक विकास का शाब्दिक अर्थ मानव का विकास है। मानव के विकास से अभिप्राय सामान्यता मानव के कल्याण, स्वास्थ्य, भौतिक पर्यावरण व आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता से लिया जाता है जिसमें मानव के जीवन में गुणात्मक सुधार हो और राष्ट्रीय कल्याण में वृद्धि हो। आर्थिक विकास मूलत: तथा प्राथमिक रूप से देश के लोगों से संबंधित होता है। देश के लोग ही राष्ट्रों की वास्तविक सम्पत्ति हैं। आर्थिक विकास से अभिप्राय परिमाणात्मक तथा गुणात्मक परिवर्तन (राष्ट्रीय उत्पाद तथा साथ ही जीवन की गुणवत्ता में सुधार जो राष्ट्रीय कल्याण में वृद्धि से संबंधित है) मानव विकास रिपोर्ट 2011 के अनुसार आर्थिक विकास मुख्यत: मानव विकास तथा लोगों के 'वरण के विस्तार' से संबंधित वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता में विस्तार से संबंधित है। आर्थिक विकास की अवधारणा व्यापक है जो अपने आर्थिक समृद्धि, सामाजिक क्षेत्रक विकास तथा समावेशी विकास को सम्मिलित किए हुए है।' 1. आर्थिक समृद्धि उत्पादन वृद्धि से संबंधित है। सामाजिक क्षेत्रक विकास मुख्यत: कमजोर वर्ग के विकास से संबंधित है तथा समावेशी विकास विकास का विवरणात्मक पहलू है।

मरू प्रदेश, आर्थिक परिस्थितियाँ और आर्थिक विकास

मध्य सदी में मरू प्रदेश में आर्थिक स्थिति सामान्य नहीं थी। सामन्ती लोगों द्वारा अत्याचार व भौगोलिक विषमताओं से उत्पन्न संकटों की मार! ऐसी स्थिति में जन-मन का धन पर प्रभुत्व न रहा। इन विषम परिस्थितियों में जन-मन के उद्धारक के रूप में उभर कर आए सद्गुरु जाम्भोजी, जिनके साथ ही आर्थिक उन्नयन का दौर शुरु हुआ। सद्गुरु जाम्भोजी ने धर्म की शाश्वत परिभाषा देते हुए कहा कि 'धर्म पुरुष सिरजीवै पुरु' अर्थात् धर्म वही है जो मानव के चहुँमुखी विकास के पथ पर अग्रसर होने में सहायक हो, जो आर्थिक विकास की अवधारणा का प्रतिष्ठामूलक रूप है। संवत् 1542 में भौगोलिक परिस्थिति जन्य संकट के प्रभाव से त्रसित लोग पशु आदि लेकर अन्यत्र पलायन करने को विवश थे ऐसी स्थिति में सद्गुरु जाम्भोजी ने त्रस्त लोगों की आर्थिक सहायता की व मरू की इन चिर स्थायी समस्याओं से निजात पाने की अवधारणा का प्रतिपादन 'बिश्नोई विचारधारा' के रूप में किया। सद्गुरु जाम्भोजी महाराज ने 'बिश्नोई विचारधारा' अवधारणा प्रतिपादित करते समय मरू की भौगोलिक व सामाजिक परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए मानव विकास के साथ मानव विकास में सहायक चरों के विकास को ध्यान में रखा। जाम्भोजी की अवधारणा सर्वग्राही रूपेण, मानव क्या चाहता हैं, पर आधारित न होकर उनकी आवश्यकताओं पर आधारित है। जिसके परिष्कृत रूप में विश्व विकास की भावना परिलक्षित है। ध्यातव्य है कि सद्गुरु जाम्भोजी द्वारा प्रतिपादित अवधारणा का मूल 29 नियम संहिता व उनके उपदेश है जिनके मूल में सद्गुरु जाम्भोजी 'जीया नै जुगती' अर्थात् जीवन यापन की युक्ति बताई। जो तत्क्षेत्रीय अशिक्षित रेय्यत में आत्मबोध का आधार बनी। जीया नै जुगती संदेश में मानव के अस्तित्व रक्षण से लेकर स्वास्थ्य, भौगोलिक, पर्यावरण व आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता को एक माला में पिरो कर जन-मन में उसे धर्म का आधार बना विकसित किया। मध्यकालीन आर्थिक उन्नयन की इस सुधारवादी अवधारणा का विकसित रूप हमें सद्गुरु जाम्भोजी के परम संदेशों में दिखता है। सद्गुरु जाम्भोजी ने सामाजिक सुख शांति और विकास के लिए पर्यावरण की विशेष महत्ता बतलाई। प्रकृतिजन्य उत्पादों को विकसित कर आर्थिक समृद्धि में वृद्धि पर बल दिया। सद्गुरु जाम्भोजी की अवधारणा का अत्यधिक महत्त्व व मान सामाजिक क्षेत्रक विकास में दृष्टिमान हुआ जिसमें गरीबी निवारण का स्पष्ट सार तत्व निहित है। साथ ही आय व सम्पत्ति के विवरण विषमता के निवारण का भी उचित प्रबंध किया है। यथा सद्गुरु जाम्भोजी ने परिश्रम करके उपार्जित अपनी हक की कमाई (हक हलालूं) प्रयोग लेने को बार-बार चेताया साथ ही उपार्जित आय का दशम् भाग जरूरतमंदों में देने का भी उपबंध किया। सद्गुरु जाम्भोजी ने कर्मवाद को मानव की श्रेष्ठता बताया है, बिना कर्म के परिवार को बिना दानो की भूसी और बिना रस के गन्ने के समान निरर्थक माना है, कर्म ही विकास का प्रथम अव्यव है। तत्कालीन परिस्थितियों में अशिक्षित रेय्यत को आत्मबोध से जागृत किया। स्वस्थ मनुष्य दीर्घायु तक सक्रिय रहकर देश के उच्च विकास में सहयोगी होता है। सद्गुरु जाम्भोजी ने बिश्नोई विचारधारा की आधार अवधारणा में ऐसे तत्व व परंपराओं का समावेश किया जो न केवल मानव हितकर है अपितु प्रकृति के घटकों के पोषण से परिपूर्ण है। जाम्भोजी ने तत्क्षेत्रीय प्राकृतिक प्रकोप का निराकरण सुदीर्घ, सुसंगत व अर्थपूर्ण योजना से इन बहुआयामी मरुस्थलीय खतरों के बावजूद मानव को प्रकृति से जोड़ निष्पादन किया जिसका परिष्कृत रूप वर्तमान में मरूधरा का हरियल प्रदेश के रुप में दृष्टव्य है। हम कह सकते हैं मरूभूमि जहां आर्थिक विकास के मूल अवरोधक तत्व मौजूद हैं जहां मानव जीवन के अस्तित्व के प्रतिकूल भौगोलिक अवस्था थी ऐसे में वहां के लोगों को प्रकृति जन्य आपात स्थिति में पशु आदि ले अन्यत्र पलायन को विवश होना पड़ता था। वहां सद्गुरु जाम्भोजी ने विकास की ऐसी अवधारणा का प्रतिपादन किया जिसमें प्राकृतिक व भौगोलिक आपदाओं के निराकरण के आधार तत्व समाहित किए।

- जय खीचड़
गांव मोडायत (बीकानेर) मो. 8302322778

वन्य जीव और उनका संरक्षण

वनों में रहने वाले पशुओं, पक्षियों तथा कीट-पंतगो को वन्य जीव कहते है। भारत जैसे विशाल देश में उच्चावच, जलवायु तथा वनस्पति संबधी विषमतओं के कारण वन्य जीवों में अत्यधिक विविधता पाई जाती है। भारत में 81,251 वन्य जीवों की प्रजातियां पाई जाती है जो विश्व की कुल प्रजातियों का 6.7 प्रतिशत भाग है भारतीय वन्य जीवों में रीढ़ बिहीन जीवों की 6500 प्रजातियां, कवचधारी प्रजातियों की 5000 प्रजातियां, मछलियों की 2546 प्रजातियां, पक्षियों की 2000 प्रजातियां, रेंगने वाले अर्थात् सरीसृप जीवों की 458 प्रजातियां, तेंदुए की 4 प्रजातियां तथा 60,000 से अधिक कीट-पंतगो की प्रजातियां है।

भारत के जंगले में रहने वाला सबसे बड़ा प्राणी हाथी है। कई शताब्दियों तक भारत के विस्तृत वन क्षेत्रों में बड़ी संख्या में हाथी रहते थे। परंतु वनों में ह्रास के कारण इनकी संख्या बहुत कम हो गई है। वर्तमान में हाथियों की संख्या असम तथा पश्चिम बंगाल के जंगलों में 6000, मध्य भारत के जंगलो में 2000 तथा दक्षिण भारत राज्यों कर्नाटक, केरल व तमिलनाडु में 6000 है। एक सींग वाला गैंडा दूसरा बड़ा पशु है, पहले यह उतरी भारत के विशाल जंगलों में बड़ी संख्या पाया जाता था। वर्तमान में इसकी संख्या घटकर1500 रह गई है। इसका वर्तमान निवास क्षेत्र असम तथा- पश्चिम बंगाल के जंगलों तक ही सीमित है। जंगली भैंसा असम तथा छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में मिलता है। इसी प्रकार शेर व चीते भी सीमित क्षेत्रों में ही मिलते है। बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु है। यॉक बर्फ में रहने वाला जानवर है जो हिमालय के ऊँचे भागों में रहता है। इसे सवारी तथा बोझा ढ़ोने के लिए प्रयोग किया जाता है। हिमालय के जंगलो में जंगली भेड़े बकरियां भी रहती है। हिरण भी भारत के जंगलो में बहुतायत में घूमता रहता था। परंतु अब इसकी संख्या कम पायी जाता, परंतु इसकी शरीर की बनावट में बहुत अधिक क्षेत्रीय भिन्नताए पाई जाती है। इसी प्रकार से चिकारा, अन्य पशु भारत के जंगलों में रहते है। पक्षियों के मामले में भारत काफी समृद्ध देश है। भारत मे पक्षियों की लगभग 2000 प्रजातियां है, जो यूरोप की प्रजातियों से तीन गुणा अधिक है। यद्यपि बहुत से पक्षी भारत के मूल निवासी है, तथापि कुछ पक्षी विदेशों से आए है। कुछ पक्षी शीत ऋतु में हर साल मध्य एशिया से भरतपुर (राजस्थान के पक्षी बिहार में अति और शीत ऋतु के समाप्त होने पर वापिस चले जाते है। भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर है जो अपने सुंदर पंखो के लिए विश्व विख्यात है।

भारत में वन्य प्राणी संरक्षण:-

भारतीय इतिहास में वन्य जीवों की सुरक्षा एक दीर्घ कालिक परंपरा रही है। ईसा से 6000 वर्ष पूर्व आखेट-सग्रांहक समाज में प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग पर विशेष ध्यान दिया जाता था। औश्र जीवों को विनाश से बचाने का प्रयास करते रहे है। हिन्दू महाकाव्यों, बौद्ध,जातकों, पंचतंत्र और जैन धर्मशास्त्रों सहित प्राचीन भारतीय साहित्य में छोटे-छोटे जीवों के प्रति हिंसा के लिए दंड का प्रावधान था। यह इस बात का पुष्ट प्रमाण है कि भारत की प्राचीन संस्कृति में वन्य जीवों का कितना सम्मान दिया जाता था। आज भी कुछ समुदाय वन्य जीवों के संरक्षण के लिए बिश्नोई समुदाय अनोखा उदाहरण है:- यह समुदाय पेड़-पौधो और जीव-जन्तुओं के संरक्षण के लिए महान् पर्यावरण विद् गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा बताए गए 29 नियमों का पालन करते हैं।

पर्यावरण असन्तुलन वन्य जीवों की घटती संख्या तथा 'ग्लोबल वार्मिग' जैसी ज्वलंत समस्याओं का समाधान सम्पूर्ण विश्व के वैज्ञानिक एवं पर्यावरण विद् आज वही बता रहे , जो गुरु जम्भेश्वर महाराज ने आज से साढ़े पांच वर्ष पूर्ण ही बता दिया थे।

इसी तर्ज पर महाराष्ट्र का मारे समुदाय मोरो(मयूरो) और चूहों की सुरक्षा में अब भी विश्वास करता है।

कौटिल्य के अर्थशस्त्र में कुछ प्रतिबंधो का वर्णन मिलता है।

तेजी से नष्ट होती जा रही है वन्य जीवों की प्रजातियों को बचाने के लिए भारत सरकार ने अनेक प्रावधान किए:- 1972 में 'वन्य जीव सुरक्षा कानून' बनाया गया। इस कानून से वन्य जीवों की सुरक्षा को कानूनी रूप मिल गया है। जम्मू कश्मीर को छोड़कर सभी राज्यों ने इस कानून को स्वीकार

कर लिया है। जम्मू-कश्मीर में इसी तरह का अपना कानून पहले से है। इस अधिनियम के दो मुख्य उद्देश्य है। अधिनियम के तहत अनुसूचि से सूचीबद्ध संकटापन्न प्रजातियों को सुरक्षा प्रदान करना तथा सहायता प्रदान करना तथा नेशलन पार्क, पशु विचार जैसे संरक्षित क्षेत्रों को कानूनी सहायता प्रदान करना। इस अधिनियम को 1991 में पूर्ण तथा संशोधित कर दिया गया जिसके तहत कठोर सजा का प्रावधान किया गया है। इससे कुछ पौधों की प्रजातियों को बचाने तथा संकटापन्न प्रजातियों के संरक्षण का प्रावधान है।

देश में 92 नेशनल पार्क और 492 वन्य प्राणी अभयारण्य है ये 1057 करोड़ हेक्टेयर भूमि पर फैले है

अभयारण्य और राष्ट्रीय उद्यान में बहुत सुक्ष्म अंतर है। अभयारण्य में अनुमति के बिना शिकार करना मना है, लेकिन चराई और गौ-पशुओं का आना-जाना नियमित होता है। किंतु राष्ट्रीय उद्यानों में शिकार और चराई पूर्ण तय वर्जित होते है। अभयारण्यों में मानवीय क्रियाकलापों की अनुमति होती है। लेकिन राष्ट्रीय उद्यानों में मानवीय हस्तक्षेप पूर्ण तथा वार्जित होता है।

उपरोक्त तथ्य से विदित होता है कि वन्य जीव संरक्षण में हर मानव को बिश्नोई समुदाय व महाराष्ट्र के मोरे समाज की तरह पर्यावरण व वन्य जीव संरक्षण की तरफ अपना कदम उठाना चाहिए।

मदन लाल
विस्तार प्रवक्ता 'भूगोल'
राजकीय महाविद्यालय, भटट्कला (फतेहाबाद)
मो. 94677-40884

गुरु जम्भेश्वर शोधपीठ स्थापित

अत्यन्त ही हर्ष व गौरव का विषय है कि जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में 'गुरु जम्भेश्वर पर्यावरण संरक्षण शोधपीठ' की स्थापना की गई है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति व राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री कल्याण सिंह ने पीठ स्थापना का अध्यादेश जारी किया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आर.पी. सिंह ने परीक्षा नियंत्रक व गणित विभाग के प्रोफेसर डॉ. जेता राम बिश्नोई को इस पीठ का निदेशक नियुक्त किया है। डॉ. जेता राम जी ने बताया कि इस पीठ के उद्देश्य इस प्रकार हैं -

अध्ययन एवं शोध के आधार तथा प्रमुख क्षेत्र

1. जाम्भोजी के साहित्य का अध्ययन, विश्लेषण, सम्पादन व प्रकाशन।
2. वेबसाईट द्वारा जाम्भो जी की शिक्षाप्रद वाणी को इण्टरनेट के माध्यम से उपलब्ध कराना ।
3. जाम्भोजी के प्रकृतिनिष्ठ पर्यावरण संरक्षण मॉडल का अध्ययन। विशेषत: ग्रामीण परिवेश में जल संरक्षण, वन व वन्य जीव संरक्षण तथा प्रकृतिनिष्ठ जीवन पद्धति का वर्तमान वैश्विक समस्याओं के समाधान में योगदान।
4. जाम्भोजी के जीवन-दर्शन से ग्रामीण-विकास, पर्यावरण संवर्धन एवं प्राकृतिक स्रोतों के विकास पर अध्ययन एवं शोध।
5. जाम्भोजी द्वारा प्रतिपादित सरल , समन्वयवादी एवं नैतिक मूल्य-आधारित जीवन दर्शन का मानव कल्याण के सम्बन्ध में अध्ययन एवं शोध।
6. जाम्भोजी के सामाजिक सद्भाव तथा सामाजिक समरसता सम्बन्धी विचारों का समाजोत्थान में योगदान।
7. जाम्भोजी के दर्शन का अन्य संत-महात्माओं के विचारों के साथ तुलनात्मक अध्ययन एवं शोध।
8. जाम्भोजी की परम्परा के संत कवियों के साहित्य का पाठ-वैज्ञानिक सम्पादन व प्रकाशन।
9. जाम्भोजी की परम्परा की हस्तलिखित पांडुलिपियों का संरक्षण।
10. भाषा-विकास तथा भाषा शास्त्रीय दृष्टि से जाम्भाणी साहित्य का अनुशीलन।

पीठ स्थापना के लिए महामहिम राज्यपाल राजस्थान व कुलपति प्रोफेसर आर.पी. सिंह का हार्दिक आभार व निदेशक नियुक्त होने पर प्रोफेसर जेताराम जी बिश्नोई को अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

जसोदा हरि पालने झुलावै

जसोदा हरि पालने झुलावै।
हलरावै दुलराई मल्हावै
जोइ सोइ कछु गावै॥

मेरे लाल कौ आउ निंदरिया
काहैं न आनि सुवावै।
तू काहैं नहिं बेगहिं आवै,
तोकौं कान्ह बुलावै॥

कबहुं पलक हरि मूंदि लेत हैं,
कबहुं अधर फरकावै।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि,
करि करि सैन बतावै॥

इहि अन्तर अकुलाइ उठे हरि,
जसुमति मधुरैं गावै।
जो सुख सूर अमरमुनि दुरलभ
सो नंदभामिनि पावै॥

पालनैं गोपाल झुलावैं।
सुरमुनिदेव कोटि तैंतीसैं
कौतुक अम्बर छावैं॥

जाकौ अन्त न ब्रह्मा जानै
सिवसनकादि न पावैं।
सो अब देखौ नन्दजसोदा,
हरषि हरषि हलरावैं॥

हुलसत हंसत करत किलकारी
मन अभिलाष बढ़ावैं।
सूर स्याम भक्तनि हित कारन,
नाना भेष बनावैं॥

– **सिद्धि वशिष्ठ**
हिसार

अगर मां होता यमुना तीरे

यह कदम्ब का पेड़ अगर मां होता यमुना तीरे
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे।
ले देती यदि मुझे बांसुरी तुम दो पैसे वाली,
किसी तरह नीची हो जाती यह कदंब की डाली।
तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं चुपके-चुपके आता,
उस नीची डाली से अम्मा ऊंचे पर चढ़ जाता।
वहीं बैठ फिर बड़े मजे से मैं बांसुरी बजाता,
अम्मा-अम्मा कह बंशी के स्वर में तुम्हें बुलाता।

वृक्ष ही वरदान

पेड़ जिंदगी, पेड़ बंदगी
राम रहीम रहमान
पेड़ साधना, पेड़ आराधना
पेड़ चलाये प्राण
परिंदों को दे आशियां
पर्यावरण की जान
पेड़ के सदके सांसे तेरी
पेड़ चलाये प्राण
पेड़ बिन न साजे धरती
जीवन है श्मशान
धर्म पुकारे ग्रन्थ पुकारे
पुकारे दिशाएं आसमान
पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ
पेड़ का भी अरमान
छांव मां के आंचल जैसी
पेड़ है मां के समान
बांटे सुगन्ध, फल फूल पाती
परोपकार का ज्ञान
रोजगार का अवसर देवे
रोटी कपड़ा मकान
जग ओ बंदे, तज वो धंधे
बेजुबान हरियाली परेशान
पर्यावरण पीड़ित प्रदूषण से
जिस तन लागे बाण
पेड़ ही मंदिर, पेड़ ही पूजा
पेड़ ही भगवान
पेड़ की महिमा, गाये रजनी
पेड़ महान वरदान

– **कुमारी रजनी,** बीकानेर

हिसार

जन्माष्टमी महोत्सव : एक झलक

बिश्नोई समाज एक उत्सव धर्मी समाज है। इस समाज में वर्ष भर में अनेक मेले एवं त्यौहार अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाये जाते हैं। परन्तु जन्माष्टमी महोत्सव की बात ही कुछ अलग है। देशभर में बिश्नोइयों द्वारा भगवान श्रीकृष्ण और भगवान जम्भेश्वर जी का यह अवतार दिवस विशेष चाव से मनाया जाता है। परन्तु बिश्नोई मन्दिर, हिसार में जन्माष्टमी के उत्सव पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम की शोभा अलग ही होती है। गत कई वर्षों की भांति इस वर्ष भी बिश्नोई मन्दिर, हिसार में जन्माष्टमी महापर्व 25 अगस्त, 2016 को अत्यन्त धूमधाम व उत्साह से मनाया गया। महीने भर पहले ही इस उत्सव की तैयारियां प्रारम्भ हो चुकी थी। मन्दिर में जहां रंग रोगन व सजावट का कार्य चल रहा था वहीं सभा के पदाधिकारी गाँव-गाँव घूमकर इस महापर्व का निमन्त्रण दे रहे थे। 24 अगस्त तक सभी तैयारियां अपने चरम पर थी और मन्दिर प्रांगण जन्माष्टमी महापर्व का साक्षी बनने के लिए सज धज कर तैयार था। सेवकों का आगमन और मेहमानों का स्वागत एक रमणीय वातावरण की सृजना कर रहा था। 25 अगस्त को प्रात: ही स्वामी रामानन्द जी आचार्य, मुकाम व स्वामी कृष्णानन्द जी आचार्य, ऋषिकेष के सान्निध्य में विशाल यज्ञ व पाहल का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। यज्ञ पश्चात् सभा प्रधान श्री प्रदीप बैनीवाल के नेतृत्व में ध्वज गान के साथ ध्वजारोहण किया गया। ठीक प्रात: 10 बजे मुख्य कार्यक्रम के लिए मंच तैयार था। मेहमानों का आगमन व मंच संचालक डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई द्वारा उनका स्वागत कार्यक्रम को जीवन्तता प्रदान कर रहा था। 11 बजे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई, संरक्षक अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने मन्दिर में पदार्पण किया जहां सभा प्रधान के नेतृत्व में बिश्नोई सभा, हिसार के कार्यकारिणी के सदस्यों ने उनका जोरदार स्वागत किया। मुख्य अतिथि महोदय ने यज्ञ में आहुति देकर पाहल ग्रहण कर ज्योति के दर्शन करके मंच पर पधारे जहां उपस्थित नेतागणों और गणमाण्य व्यक्तियों ने उनका अभिवादन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ 'तारणहार थलासिर आयो' की हजूरी साखी के साथ हुआ। तत्पश्चात् सभा प्रधान श्री प्रदीप बैनीवाल ने आए हुए सभी अतिथियों व महानुभावों का हार्दिक स्वागत करते हुए बिश्नोई सभा, हिसार की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। श्री बैनीवाल ने कहा कि आज बहुत ही खुशी का अवसर है क्योंकि इसी दिन भगवान श्री जम्भेश्वर जी और भगवान श्री कृष्ण जी ने अवतार लेकर इस धरा-धाम को पवित्र किया था।

आपने आगे कहा कि बिश्नोई सभा हिसार सदैव समाज की सेवा में तत्पर रहती है। सभा का आगे भी यह प्रयास रहेगा कि समाज की चहुंमुखी उन्नति में अपना सर्वस्व योगदान दे। बिश्नोई सभा, हिसार के पूर्व प्रधान श्री सुभाष देहडू ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि निवर्तमान कार्यकारिणी ने पूरे सामर्थ्य के साथ समाजसेवा की है तथा आगे भी समाज जहां भी आवश्यक समझेगा वे समाजसेवा हेतु तत्पर रहेंगे। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, जिला शाखा हिसार के प्रधान श्री सहदेव कालीराणा ने सेवकदल की अन्न-धन से मदद करने के लिए समाज का आभार व्यक्त किया। आपने मृत्युभोज को सीमित करने का आह्‌वान किया तथा समाज में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति पर चिंता प्रकट की। आपने बताया कि समाज के बिगड़ते रिश्तों और आपसी मन-मुटाव को दूर करने के लिए जिला शाखा प्रयासरत है। नव चयनित आई.पी. एस. श्री प्रेम सुख डेलू ने युवाओं से आह्‌वान किया कि वे पूर्ण सामर्थ्य व समर्पण से मेहनत करें तो ऐसा कोई लक्ष्य नहीं है जिसे प्राप्त न किया जा सके। आपने कहा कि माता-पिता को बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पूर्व संसदीय सचिव श्री दूड़ाराम जी ने सामाजिक एकता व संगठन पर बल देते हुए कहा कि कलयुग में संगठन ही एकमात्र शक्ति है। आज वही समाज उन्नति कर सकता है जो संगठित है और राजनीतिक रूप से

मजबूत है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री पब्बाराम बिश्नोई, विधायक, फलौदी ने कहा कि बिश्नोई समाज का बड़ा गौरवमयी इतिहास है। इस समाज के प्रवर्तक गुरु जम्भेश्वर महाराज ने अंधकार के युग में दुनिया को अपनी शिक्षाओं का प्रकाश देकर जीना सिखाया तथा वैदिक धर्म व संस्कृति को पुनर्जीवित करने का काम किया। सांचौर के पूर्व विधायक श्री हीरालाल बिश्नोई ने अपने संक्षिप्त सम्बोधन में कहा कि आज पर्यावरण की समस्या ने पूरे विश्व को चिंता में डाला हुआ है। यदि गुरु जम्भेश्वर भगवान के नियमों पर चलते तो आज यह समस्या उत्पन्न ही नहीं होती। आपने कहा कि गुरु जम्भेश्वर भगवान के नियमों को मानना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धा है।

समारोह के अति विशिष्ट अतिथि डॉ. एल.आर. बिश्नोई, आई.पी.एस., अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, आसाम ने अपने गूढ-गंभीर वक्तव्य में गुरु जम्भेश्वर भगवान के सिद्धांतों की वार्तमानिक प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गुरु जम्भेश्वर भगवान के सिद्धांत आज भी उतने की प्रासंगिक हैं जितने उनके समय में थे। आपने युवाओं से आह्वान किया कि आज प्रतियोगिता का युग है इसलिए वे कोई शार्टकट न अपनाकर केवल मेहनत पर भरोसा करें। आपने महासभा को सुझाव दिया कि समय की मांग को ध्यान में रखते हुए उच्च स्तर का कोचिंग सेंटर स्थापित करें। डॉ. बिश्नोई ने युवाओं से नशे से दूर रहने का आह्वान किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री मदन मोहन गुप्त, संपादक, दैनिक जागरण, मध्यप्रदेश ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज वे यहाँ आकर अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। आज पूरी दुनिया गुरु जम्भेश्वर भगवान के सिद्धांतों की ओर देख रही है। आज दुनिया में जितनी भी ज्वलंत समस्याएं हैं उनका समाधान केवल बिश्नोई समाज के पास है। आपने महासभा से आह्वान किया कि एक रथ यात्रा निकाल कर पूरे देश में गुरु जम्भेश्वर भगवान के सिद्धांतों का प्रचार करना चाहिए ताकि पूरी दुनिया के लोग गुरु जम्भेश्वर भगवान के सिद्धांतों का लाभ उठा सके। आपने कहा कि आज प्रचार-प्रसार का जमाना है और हमें इसमें पीछे नहीं रहना चाहिए। श्री गुप्त जी ने आगे कहा कि उन्होंने सभी धर्मों का अध्ययन किया है और 67 देशों की यात्राएं की हैं और वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि गुरु जम्भेश्वर जी ने बिश्नोई पंथ में सभी धर्मों का सार भर दिया है। आज यदि विश्व गुरु जांभोजी जी द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चले तो सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है।

समारोह को मुक्तिधाम मुकाम के पीठाधीश्वर स्वामी रामानन्द जी आचार्य ने भी सम्बोधित किया। आचार्य श्री ने अपने सम्बोधन में गुरु जम्भेश्वर भगवान की समकालीन परिस्थितियों और उनके अवतार के उद्देश्य पर विस्तार से प्रकाश डाला। आपने बताया कि 29 धर्म नियमों की आचार संहिता मानवता का कवच है। विश्व की कोई ऐसी समस्या नहीं है जिसका समाधान इन 29 धर्म नियमों में न हो। आपने उपस्थित जनसमूह से प्रार्थना की कि आज आवश्यकता इस बात की है कि हम दृढ़ता के साथ उस पथ के अनुयायी बनें जो गुरु जम्भेश्वर भगवान ने हमें दिखाया था। श्री हीराराम भंवाल, एडवोकेट, अध्यक्ष अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में जन्माष्टमी को एक विशिष्ट दिन बताते हुए कहा कि यह हमारे लिए संकल्प का दिन है। आज पूरा विश्व पर्यावरण की समस्या से जूझ रहा है। गुरु जम्भेश्वर जी ने 500 वर्ष पहले ही इस खतरे को भांप लिया था। इसलिए उन्होंने अपनी आचार-संहिता में अनेक ऐसे नियम बनाए जिनसे पर्यावरण की रक्षा होती है। आपने महासभा द्वारा गुरुग्राम में शीघ्र ही बिश्नोई धर्मशाला बनाने की घोषण भी की।

इसके बाद समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए श्री कुलदीप बिश्नोई ने समाज के लोगों से अपील की कि वे गुरु जम्भेश्वर महाराज के दिखाए रास्ते व नियमों पर चलें। उनकी शिक्षाओं व उपदेशों को अपने जीवन में उतारकर एक स्वच्छ समाज का निर्माण करने में अपना योगदान दें। उन्होंने कहा कि जब तक हम सब मिलकर गुरु जी की शिक्षाओं को आगे नहीं ले जाएंगे तब तक समाज उन्नति नहीं कर सकता। यही नहीं उनकी शिक्षाओं को दूसरे समाजों व संप्रदायों तक ले जाने की जरूरत है ताकि वो भी गुरु जी के दर्शन व विचारधारा के बारे में जानकर उन्हें अपना सकें। गुरु जी की शिक्षाएं दुनिया को अमन व शांति का रास्ता दिखाने वाली हैं। कार्यक्रम में समाज की प्रतिष्ठित पत्रिका अमर ज्योति के जन्माष्टमी विशेषांक का विमोचन श्री कुलदीप बिश्नोई ने किया तथा अतिथियों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों व महानुभावों को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर जाम्भा के महन्त भगवानदास जी, बिश्नोई सभा, हिसार के कोषाध्यक्ष श्री अनिल पूनिया, उपप्रधान श्री चौथराम जाणी, श्री पटेल पूनिया, संयुक्त सचिव, डॉ. मदन खिचड़, कार्यकारिणी सदस्य श्री रामकुमार भादू एडवोकेट, श्री रायसाहब डेलू एडवोकेट, श्री श्रवण सहारण, श्री रवीन्द्र खदाव, श्री हनुमान खिचड़, महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री रामस्वरूप मांझू, महासचिव श्री विनोद धारणीया, सचिव श्री देवेन्द्र बूड़िया, सोमप्रकाश सिगड़, सेवक दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामसिंह कस्वां, कर्मचारी कल्याण समिति के प्रधान श्री निहाल सिंह गोदारा, श्री रामेश्वर डेलू; अध्यक्ष, जीव रक्षा बिश्नोई सभा,

हरियाणा; श्री भूपसिंह गोदारा, प्रधान, बिश्नोई सभा, फतेहाबाद; श्री खेमचन्द बैनीवाल, प्रधान बिश्नोई सभा, सिरसा; श्री रामस्वरूप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, रतिया; श्री आसाराम लोमरोड़, प्रधान, बिश्नोई सभा, टोहाना; श्री अचिंत राम गोदारा, प्रधान बिश्नोई सभा पंचकूला, श्री रामस्वरूप जौहर, श्री हनुमान सिंह बिश्नोई, प्रधान, गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन, दिल्ली; श्री रामसिंह कालीराणा, पूर्व आई.पी.एस.; श्री बुलसिंह बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, आदमपुर; श्री पी.आर. बिश्नोई, आई.ए.एस. (से.नि.); श्री अशोक बिश्नोई, पूर्व ए.डी.सी.; श्री सुलतान धारणिया, अध्यक्ष, जगतगुरु जम्भेश्वर गौशाला, मुक्तिधाम, मुकाम; श्री राजाराम धारणिया, कार्यकारिणी सदस्य, अ.भा. बिश्नोई महासभा, मुकाम; कामरेड बनवारी लाल सहित समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन

24 अगस्त, 2016 की शाम को मंदिर परिसर में सर्व धर्म का सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री अश्विन शैणवी, आई.पी.एस. पुलिस अधीक्षक हिसार ने कहा कि खुदा की बनाई इस कायनात में इंसानियम ही सबसे बड़ा धर्म है। लेकिन इंसानों ने अपने स्वहितों के चलते इसके कई रूप बना दिए जो तर्कसंगत व मानवता के हित में नहीं हैं। ऐसी धारणा से न केवल इंसानी जीवन का विकास रूकता है

बल्कि समाज पिछड़ जाता है। सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी रामानन्द जी आचार्य ने कहा कि गुरु जंभेश्वर भगवान ने बिश्नोई धर्म में सभी पंथों के लोगों को शामिल कर एक नव मानव धर्म की स्थापना की थी। उनके बताए नियमों पर अगर मानव जाति चले तो दुनिया में निश्चित तौर पर प्रेम व सामंजस्य की भावना विकसित होगी। सम्मेलन में सनातन धर्म प्रतिनिधि श्री देव शर्मा, मुस्लिम धर्म प्रतिनिधि मौलाना शमीम अहमद, सिख धर्म प्रतिनिधि सरदार कलदीप सिंह, ईसाई धर्म प्रतिनिधि रेवरन पी. मान, बिश्नोई धर्म प्रतिनिधि कृष्णानंद आचार्य, बौद्ध धर्म प्रतिनिधि श्री मियां सिंह तथा आर्य समाज प्रतिनिधि डॉ. कमल नारायण आर्य, सारस्वत अतिथि आलोक स्वामी ने भी अपने विचार रखे।

महिला सम्मेलन

25 अगस्त, 2016 को सायं 5 बजे महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें पूर्व विधायिका श्रीमती जसमा देवी, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुई। इस सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ. सरस्वती बिश्नोई, संरक्षिका जांभाणी साहित्य

अकादमी, बीकानेर ने की। इस सम्मेलन में डॉ. वन्दना बिश्नोई ने सभी का स्वागत व अभिनन्दन किया। महिलाओं ने इस सम्मेलन में बढ़चढ़ कर भाग लिया। सम्मेलन को श्रीमती रूबी गोदारा, उपजिला शिक्षा अधिकारी श्रीमती संगीता बिश्नोई; श्रीमती सुशीला; श्रीमती सुमन बाला; श्रीमती अनिला बिश्नोई; सुश्री पूनम, ममता व नैन्सी ने सम्बोधित किया। डॉ. माया बिश्नोई ने मंच संचालन किया। सभी वक्त्रियों ने महिला शिक्षा पर विशेष बल देते हुए कहा कि समाज तब तक उन्नति नहीं कर सकता जब तक महिलाएं शिक्षित नहीं होंगी।

रात्रि जागरण व झांकी दर्शन

25 अगस्त की रात्रि को श्री बनवारी लाल सोढा, श्री भारमल जी गायणाचार्य, स्वामी बद्री प्रसाद संगीताचार्य द्वारा गुरु जम्भेश्वर भगवान की अवतार साखियों द्वारा भव्य जागरण लगाया गया। गुरु जम्भेश्वर स्कूल, आदमपुर के विद्यार्थियों द्वारा भगवान श्री कृष्ण और भगवान श्री जम्भेश्वर की लीलाओं से संबंधित झाकियां लगाई गई जिन्होंने आगन्तुकों को विशेष रूप से आकर्षित किया।

समापन बैठक

26 अगस्त, 2016 को प्रातः स्वामी कृष्णानन्द जी आचार्य द्वारा विराट यज्ञ किया गया। तत्पश्चात् समापन बैठक आयोजित हुई जिसमें सभा प्रधान श्री प्रदीप बैनीवाल द्वारा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सेवक दल व अन्य संस्थाओं का आभार प्रकट किया गया।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई,
सचिव, बिश्नोई सभा, हिसार

डबवाली

गुरु जम्भेश्वर मन्दिर का लोकार्पण सम्पन्न

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी बिश्नोई धर्मशाला, डबवाली में श्री गुरू जंभेश्वर भगवान का 566वां अवतार दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इससे पहले श्री जांभाणी हरि कथा के साथ-साथ मंदिर का लोकार्पण समारोह माननीय श्री कुलदीप जी बिश्नोई, सरंक्षक, अखिल भारतीय बिश्रोई महासभा, मुक्ति धाम मुकाम व विधायक आदमपुर के कर कमलों से 24 अगस्त 2016 को किया गया। 19 अगस्त से लेकर 25 अगस्त तक परम पूज्य स्वामी राजेंद्रानंद जी महाराज, बिश्रोई सेवा आश्रम हरिद्वार के शिष्य आचार्य स्वामी सत्य देवानंद जी ने सात दिनों तक श्री गुरू जंभेश्वर भगवान की वाणी पर प्रकाश डाला एवं संगीतमयी कथा की। डबवाली इलाके के सभी गांवों से सात दिन तक कथा में श्रोताओं का तांता लगा रहा।

सभी गांवों में सभा द्वारा बसों की सुविधा दी गई। इसके साथ नवनिर्मित मंदिर के लोकार्पण को लेकर खुशी का माहौल था। नवनिर्मित मंदिर में संभराथल धोरा से गुरू महाराज की अखंड ज्योति लाई गई। 24 अगस्त को प्रात: से ही दूर-दूर से मेहमान आने लगे। समाज के गौरव माननीय श्री कुलदीप जी बिश्रोई के आने का बेसब्री से इंतजार था। समाज के गणमान्य व्यक्ति, सभा के पदाधिकारी, प्रधान श्री कृष्ण जी जादूदा के नेतृत्व में हाथ में माला लिए इंतजार कर रहे थे। सबसे पहले पूर्व प्रधान श्री सही राम जी, स्वामी सत्यदेवानंद जी, पब्बाराम जी, हीरा लाल भंवाल, प्रधान अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा का स्वागत किया। इसके बाद कुलदीप जी के पहुंचने पर सभी ने उन्हें फूलमालाएं पहनाकर अभिनंदन किया। श्री दूड़ा राम जी का भी स्वागत किया गया। सब ने हवन में आहुति दी व पाहल ग्रहण किया। मुख्यातिथि ने ज्योति को मंदिर में ले जाकर स्थापित किया। ध्वजारोहण कर कलश स्थापना की, खेजड़ी का पौधा रोपित किया गया। उसके बाद मंदिर का लोकार्पण किया। मंच पर आसीन श्री कुलदीप जी बिश्नोई के साथ-साथ हीरालाल भंवाल, प्रधान, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, पूर्व प्रधान श्री सहीराम जी, श्री दूड़ा राम जी, स्वामी सत्यदेवानंद जी, पब्बाराम जी, महासचिव विनोद धारणिया, राजाराम जी, पंजाब सभा के अध्यक्ष गंगा बिशन भादू, हिसार से डा.मदन खीचड़ जी, सेवक दल के अध्यक्ष श्री रामसिंह जी कस्वां, जीव रक्षा सभा के अध्यक्ष साहब राम जी, शहीद स्मारक समिति के कुलदीप पूनिया, श्री प्रेम सुख डेलू आईपीएस, फतेहाबाद सभा से भूप सिंह गोदारा, श्री मनोहर लाल कड़वासरा जी, डॉ. के.वी. सिंह, राजीव गोदारा, महासभा सचिव सोमप्रकाश सीगड़ व रतिया सभा के प्रधान का डबवाली सभा प्रधान कृष्ण लाल जादूदा ने किया। कोषाध्यक्ष अनिल धारणियां ने बैज लगाकर सभी का सम्मान किया। सभा सचिव इंद्रजीत बिश्नोई ने धर्मशाला की नींव तत्कालीन मुख्यमंत्री हरियाणा चौ. भजन लाल बिश्नोई के कर कमलों द्वारा रखने से लेकर आज तक के इतिहास के बारे में अवगत करवाया। पब्बाराम जी ने जोधुपरी पत्थर से निर्मित मंदिर की भव्यता बारे चर्चा की। आईपीएस प्रेम सुख डेलू ने कहा कि वर्तमान दौर में आगे बढने के लिए पढ़ाई जरूरी है। बेटे-बेटियों को अवश्य पढ़ाएं। अध्यक्ष हीरा राम भंवाल ने कहा कि वे समाज के उत्थान के लिए महासभा द्वारा हर संभव प्रयास किए जाएंगे। आखिर में कुलदीप बिश्नोई जी ने संबोधित करते हुए समाज हित की बात की। बच्चों की पढ़ाई पर जोर दिया। जीव रक्षा का भी आह्वान किया एवं फिल्म अभिनेता सलमान खान को सजा दिलाने के लिए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर सजा दिलवाने की बात कही। समाज से कहा कि मैं हमेशा आपके साथ हूँ। आखिर में सभा द्वारा सभी का धन्यवाद किया। सभा सचिव इंद्रजीत बिश्नोई ने कहा कि मंदिर निर्माण में सभी गांवों के लोगों का योगदान रहा। मंदिर निर्माण में आर्थिक सहयोग करने वाले सभी लोगों का उन्होंने आभार जताया। अंत में सभी ने प्रसाद ग्रहण किया। तभी अतिथियों की विदाई बाद कथा प्रवचन हुए, सांय को नवनिर्मित मंदिर के प्रागंण में जागरण व जन्मोत्सव मनाया गया। उपस्थित लोगों को जन्मोत्सव की बधाई दी। 25 अगस्त को प्रात: स्वामी सत्यदेवानंद, सोमराज पुजारी ने हवन कर कार्यक्रम को किया।

प्रेषक: इंद्रजीत बिश्नोई, सचिव
बिश्नोई सभा, मंडी डबवाली मो. 94163-63802

अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति का चुनाव सम्पन्न

14 अगस्त, 2016 को श्री बिश्नोई मंदिर, हिसार में अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति की बैठक मुख्य सरंक्षक श्री प्यारे लाल कड़वासरा की अध्यक्षता में शुरू हुई, जिसमें 2014-2016 के आय-व्यय तथा कार्यो का विवरण दिया गया। तत्पश्चात् समिति के चुनाव करवाने के लिए सर्वसम्मति से वरिष्ठ सदस्य श्री विजय भाम्भू, जनरल मैनेजर कोऑपरेटिव बैंक सोनीपत को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया। श्री विजय भाम्भू की देखरेख में सर्वसम्मति से वर्ष 2016-2018 के लिए श्री निहाल सिंह गोदारा, जेडएमइओ हरियाणा मार्केटिंग बोर्ड को प्रधान, श्री सुभाष गोदारा एलवीओ को वरिष्ठ उपप्रधान, श्री सुभाष सिहाग को महासचिव, श्री बंसी लाल राहड़ को कोषाध्यक्ष तथा श्री संदीप गोदारा, भूमि विकास बैंक को आडिटर चुना गया। नवनियुक्त प्रधान श्री निहाल सिंह गोदारा ने बैठक में आये सभी सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि पूरी निष्ठा व ईमानदारी से समिति सभी को साथ लेकर समाज की भलाई के लिए कार्य करेंगे। बैठक में बिश्नोई सभा हिसार की तरफ से सभा के सयुंक्त सचिव व समिति के वरिष्ठ सदस्य डॉ. मदन खीचड़ ने नवनियुक्त प्रधान तथा पूरी कार्यकारिणी का स्वागत किया तथा विश्वास दिलाया कि सभा समिति के हर सामाजिक कार्य में सहयोग यथावत करती रहेगी । अंत में आये हुए सभी सदस्यों का धन्यवाद किया गया।

- डॉ. मदन खीचड़ वरिष्ठ सदस्य व सयुंक्त सचिव बिश्नोई सभा, हिसार।

मलाड़ में जन्माष्टमी पर बिश्नोई समाज का उमड़ा जन सैलाब

मुम्बई के मलाड में श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के 566 वें जन्म दिवस के उपलक्ष पर 24 अगस्त, 2016 की रात्रि में बिश्नोई समाज के जाने माने कलाकार संत राजूराम जी महाराज ने जागरण का अयोजन किया। संत राजूराम जी महाराज ने गुरु महाराज की पाँच आरती और साखी से जागरण की रूप रेखा बनाई। आपने भगवान जाम्भोजी के कई भजन कीर्तन व चेतावनी भजन सुनाकर भक्तों को भाव विभोर किया। आचार्य सुदेवानंन्द जी महाराज ने भगवान् जाम्भोजी की महिमा सुनाई। आचार्य जी ने कहा की गुरु महाराज ने जिया ने जुक्ति और मुआ ने मुक्ति के लिए हमें एक सूत्र केवल विष्णु-विष्णु का मंत्र दिया था । उन्होंने कहा कि आज बिश्नोई समाज (जीव दया पालनी रुंख लिलो नहीं घावै) का नियम बड़ी बखूबी से निभा रहा है, आचार्य जी ने बिश्नोई सामाज के जीवों और पेड़ों के लिए हुए शहीदों को याद किया। वालीवुड कलाकार सुजीत लटियाल ने सीताराम सीताराम रट रे.... का कीर्तन से अपनी जिभ्या से भक्ति रस की शुरुआत की। लटियाल ने एक से एक बढ़कर भजनों की प्रस्तुति देकर गुरु महाराज के जय घोष से पूरे हाल को मन्त्र मुग्ध कर दिया। हनुमान लटियाल,रवि लटियाल आदि कलाकारों ने अपनी अपनी प्रस्तुति दी। 25 अगस्त को प्रात: आचार्य सुदेवानन्द जी महाराज के मुख से गुरु महाराज की वेदवाणी से 120 शब्दों का पाठ व हवन पाहल का आयोजन हुआ। पाहल की स्थापना हीरालाल जी इराम ने की। हजारों की तादाद में समाज के बन्धुओ ने पवित्र पाहल ग्रहण किया। ठीक 11 बजे धर्म सभा आयोजित हुई। धर्म सभा के मुख्य अतिथि मुम्बई विश्वविद्यालय के प्रोफेसर करुणाशंकर उपध्याय ने कहा कि बिश्नोई समाज के संयम और धैर्य को मैं नमन करता हूँ। उन्होंने कहा कि बिश्नोई समाज का पूरा देश ही नहीं अपितु पूरा विश्व ऋणी है, वन्य जीवों व पेड़ों की रक्षा करते हैं और आप अपना कर्तव्य निभाते हैं। आपकी एकता ही शक्ति और निष्ठा से आप कार्य को सफल बनाते हैं। उन्होंने कहा कि बिश्नोई समाज की चर्चा विदेशी धरती पर भी होती है, आपने आर.के. बिश्नोई का जिक्र करते हुए कहा कि बिश्नोई जी ने दुबई में खेजड़ी का पौधा लगाकरके एक अच्छी पहल शुरू की है यह एक उज्ज्वल पक्ष है। संगीतकार शिवम् पांडे ने कहा कि मैं सौभाग्यशाली हूँ की बिश्नोई जैसै पवित्र समाज के साथ हूँ। उन्होंने जय जाम्भोजी जय महाराज का मधुर संगीत गाया। नरसीराम जी माझू ने शिक्षा पर जोर दिया और कहा कि जब समाज शिक्षित होगा तब पूर्ण रूप से तरक्की करेगा। हीरालाल जी इराम ने समाज की वेशभूषा पर चिन्ता प्रकट की और नियमित हवन करने का आह्वान किया। ओमप्रकाश ढाका ने विश्नोई समाज के पौधरोपण कर रहे हरीश गोदारा, सुरेश डूडी, पुखराज गोदारा व उनकी टीम को जांभाणी साहित्य भेंट करके सम्मनित किया। सीए किशोर जी साहू ने 20 नवम्बर को होने वाली जांभाणी ज्ञान परीक्षा की विस्तृत जानकारी दी और सभी को जम्भेश्वर जन्माष्टमी की शुभकामनाये दी।भामाशाह के रूप में कालूराम जी मांझू, पपुराम ढाका, पूनमचंद खीचड़,गणपत सारण, सुनील गोदारा दहिसर, बाबूजी सारण, बाबूजी जालानी,मोहन पवार आदि भामाशाहों का सम्मान किया। समाज ने प्रतिभा सम्मान समारोह रखा सभी प्रतिभाओ का सम्मान किया। प्रतिभा सम्मान समारोह में किशन जी गोदारा की सुपुत्री का महाराष्ट्रा MBBS का चयन होने पर सम्मान किया गया। इस मौके पर डॉ. भरतकुमार चौधरी,सब इंस्पेक्टर राजू जी कावा, हरीश भाम्भु, भारमल सारण, बाबुजी माझू, बक्साराम जी, सुनील गोदारा साकीनाका, वेदप्रकाश गोदारा, प्रकाश पुनिया, राजवीर इराम व बिश्नोई पर्यावरण शिक्षण संस्थान के सैकड़ो कार्यकर्ता ने भागीदार निभाई। अंत में बिश्नोई पर्यावरण शिक्षण संस्थान की तरफ से पीराराम खावा ने सबको धन्यवाद देते हुए कहा कि आप सब लोगो ने सहानुभूति दिखाई और एकता की मिशाल कायम की इसलिए मैं आप सब धन्यवाद देता हूँ और हापुजी सारण ने भी आये हुए सभी सज्जनो का आभार जताया। अंत में सभी समाज के लोगो ने महाप्रसादी का लाभ लिया।

-हरीश (हजारीराम) + सुखराम जी भाम्भू
मुम्बई. मो. 9833248581

20 नवम्बर को होगी जांभाणी परीक्षा

जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर द्वारा आयोजित होने वाली जांभाणी ज्ञान परीक्षा - रविवार, 20 नवम्बर, 2016 को आयोजित होगी। इस वर्ष इस परीक्षा में कक्षा नौवीं से बारहवीं तक अध्ययनरत विद्यार्थी भाग लेंगे, जिनका पंजीकरण किया जा चुका है। पंजीकृत विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे 10 नवम्बर, 2016 तक अपने केन्द्र प्रभारी से अपने रोल नं. ले लें। परीक्षा 2 घंटे की होगी जिसमें 100 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। परीक्षा ओएमआर शीट पर ली जाएगी जिसका समय प्रात: 11 बजे से अपराह्न 1 बजे तक का है।

डॉ. बनवारी लाल सहू, परीक्षा संयोजक
मो. 9414875029

जोधपुर रैली

जीव रक्षार्थ रैली आयोजित

वन व वन्य जीव सरंक्षण के ढीले-ढ़ाले कानूनों में संशोधन के लिए सरकार पर दबाव बनाने तथा फिल्म अभिनेता सलमान खान शिकार प्रकरण के परिपेक्ष्य में 12 अगस्त, 2016 को जोधपुर के रावण चबूतरा मैदान में महारैली व धर्मसभा का आयोजन हुआ। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के आह्वान पर आयोजित इस रैली का सफल आयोजन जिला सभा, जोधपुर ने किया। इस महारैली में देश भर के हजारों पर्यावरण प्रेमियों ने शिरकत की। राजस्थान के जोधपुर, बीकानेर, नागौर, जालोर, बाड़मेर, श्रीगंगानगर, पाली हनुमानगढ़, जिलों के अलावा हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश तथा दिल्ली के लोगों ने भी महारैली में भाग लिया।

कार्यक्रम के अनुसार धर्मसभा स्थल पर प्रात: 9.00 बजे विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। श्रीमहन्त शिवदासजी शास्त्री (रूड़कली) व रामेश्वरदास जी के सानिध्य में 120 सबदों के पाठ के साथ यज्ञ में आहुतियां दी गई। हवन- यज्ञ में समाज के लगभग सभी संतो ने शिरकत की। हवन-यज्ञ के उपरान्त 11.00 बजे धर्मसभा का विधिवत् आयोजन शुरू हुआ। धर्मसभा में विश्नोई समाज के अलावा अन्य समाजों के संतो, सामाजिक प्रतिनिधियों व गणमान्य लोगों ने भी शिरकत की। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य डॉ0 गोवर्धनराम जी शिक्षा शास्त्री ने कहा कि विश्नोई समाज सैंकड़ों वर्षो से प्राणियों व पेड़ों की रक्षा के लिए संघर्ष करता आया हैं तथा आगे भी करता रहेगा। समाज के लोग श्रद्धावश एवं भावावेश में शहादत दे देते है। आपने महासभा से सवाल किया कि शहीदों के परिवारों के लिए महासभा क्या सहयोग करती हैं?आपने समाज में अनुशासन की आवश्यक जरूरत बताई। आचार्य श्री रामानन्द जी ने कहा कि गुरू जम्भेश्वर भगवान के बताए जीव दया नियम के प्रति बिश्नोई समाज आज भी प्रतिबद्ध है। हमारी जीव दया की लड़ाई के आगे तो राजाओं को भी झुकना पड़ा। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री कुलदीप बिश्नोई (विधायक आदमपुर) ने वन्यजीव संरक्षण में नाकाम रहने पर राजस्थान सरकार व भारत सरकार की आलोचना की। सलमान शिकार प्रकरण की चर्चा करते हुए आपने इस प्रकरण की सुप्रीम कोर्ट में अपील करने का राजस्थान सरकार से अनुरोध किया। पैरवी के लिए आवश्यकता पड़ने पर आपने सुप्रीम कोर्ट में होने वाले सारे खर्चे को वहन करने की भी घोषणा की। दुनिया ने सलमान शिकार प्रकरण को गम्भीरता से लिया हैं व उस पर रोष प्रकट किया है।

जोधपुर के पूर्व सांसद व केन्द्रीय उन विकास बोर्ड के चैयरमेन श्री जसवन्त सिंह बिश्नोई ने विश्वास दिलाया कि सलमान शिकार प्रकरण में राजस्थान सरकार अवश्य सुप्रीम कोर्ट में अपील करेगी। इसके लिए जहां भी आवश्यकता पड़ेगी तन-मन-धन से सहयोग किया जायेगा। आपने वन्य जीवों व प्रकृति के दिनोदिन होते ह्रास पर चिंता व्यक्त की। गांवो में खेतों के चारों ओर लगाई जाने वाली जाली से हिरणों की ज्यादा मौते होती हैं, यह पापकर्म है। आपने महासभा को सुप्रीम कोर्ट में पैरवी के लिए वरिष्ठ वकील करने की सलाह दी। विधायक पब्बाराम विश्नोई ने कहा कि 36 कौम के लोगों का यह जमावड़ा निर्दोष जीवों की हत्या करने वालों को कड़ी सजा दिलाने के लिए इकट्ठा हुआ हैं। आपने विश्वास दिलाया कि इस विषय को लेकर सरकार गम्भीर हैं तथा निश्चित रूप से सुप्रीम कोर्ट में अपील करेगी। महासभा के अध्यक्ष हीरालाल भंवाल ने कहा कि विश्नोई समाज की यह पहली बड़ी रैली हैं, आपने जोधपुर जिला सभा को व्यवस्थाओं के लिए धन्यवाद दिया। आपने 1972 के वन्य जीव सरंक्षण कानून में सुधार की आवश्यकता बताई।

सांचौर विधायक श्री सुखराम विश्नोई ने कहा कि प्रदेश में दिनो दिन बढ़ती शिकार घटनायें दुर्भाग्यपूर्ण है। सरकार शिकार को रोकने में असफल रही है। विश्नोई समाज की जागरूकता से ही शिकार प्रकरण प्रकाश में आते है। सलमान प्रकरण में सरकार द्वारा कमजोर पैरवी करने का आरोप लगाया। पूर्व संसदीय सचिव श्रीमती विजयलक्ष्मी विश्नोई ने कहा कि दर्जनों हिरणों का एक साथ शिकार होना सुनियोजित ढ़ग से शिकार की ओर इशारा करता हैं। सरकार को शिकार प्रकरणों को गम्भीरता से लेकर कार्यवाही करनी चाहिए।

अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के जोधपुर जिलाध्यक्ष नारायणराम डाबड़ी ने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की हैं कि वनों व वन्य जीवों को कैसे बचाया जा सके। आपने कहा कि आम सभा के बाद राष्ट्रपति व राज्यपाल के नाम ज्ञापन दिया जायेगा। जिनमें केन्द्र सरकार से वन्य जीव कानूनों में संशोधन का तथा राज्य सरकार से सलमान शिकार प्रकरण में सर्वोच्च न्यायालय में अपील करने का निवेदन होगा। आपने रैली में सहयोग करने के लिए विभिन्न संगठनों तथा सम्पूर्ण समाज का धन्यवाद ज्ञापित किया।

अखिल भारतीय विश्नोई महासभा के राष्ट्रीय सचिव श्री

श्री कुलदीप बिश्नोई

श्री हीराराम भंवाल

श्री जसवंत सिंह बिश्नोई

श्री नारायण राम डाबड़ी

श्री पब्बाराम बिश्नोई

श्री देवेन्द्र बूडिया

मंचासीन अतिथिगण

रैली में भाग लेते जीव प्रेमी

देवेन्द्र बूड़िया ने कहा कि यह ऐतिहासिक रैली है। आपने सरकार से मांग की कि शिकार प्रकरणों की फास्ट ट्रैक कोर्ट में सुनवाई हो। अधिकारियों की कमजोर व लापरवाहीपूर्ण पैरवी के कारण शिकारी बच निकलते है। आपने सरकार को चेतावनी दी कि समय रहते शिकार घटनाओं पर अंकुश लगाए अन्यथा खेजड़ली बलिदान दोहराया जा सकता है। आपने सरकारों से वन विभाग में विश्नोइयों को विशेष आरक्षण देने की मांग की। भाजपा के बिहारीलाल नोखा ने कहा कि हाईकोर्ट के निर्णय से विश्नोई समाज की भावनायें आहत हुई हैं, दुनिया में एकमात्र विश्नोई समाज ही मूक प्राणियों की रक्षा की बात करता है। लोहावट प्रधान भागीरथ बैनीवाल ने कहा कि शिकार की सजा मानव हत्या के समकक्ष होनी चाहिये।

इस पर्यावरण सरंक्षण को समर्पित धर्मसभा को हरियाणा के पूर्व संसदीय सचिव दूड़ाराम, स्वामी कृपाचार्य जी बणीधाम, महेन्द्र खोखर, अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवक दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामसिंह कस्वा, महासभा कार्यकारिणी सदस्य अनुराग बिश्नोई, रामस्नेही संत अमृतरामजी, टाईगर फोर्स के अध्यक्ष रामपाल भवाद, महासचिव रामनिवास बुधनगर, जीव रक्षा सभा के प्रदेशाध्यक्ष शिवराज जाखड़, विश्नोई महासभा हिसार के जिलाध्यक्ष सहदेव कालीराणा, जालोर जिलाध्यक्ष सूरजनराम सोऊ, श्रीराम सोऊ, बलदेवराम सोऊ रामड़ावास, धर्मेन्द्र बेनीवाल, हनुमानसिंह दिल्ली, साहबराम रोज, श्याम खीचड़, राकेश माचरा, उम्मेदाराम सेवानिवृत आई0पी0एस0, राणाराम नैण, जोधपुर जाट सभा अध्यक्ष पूनाराम जाट, बीरबलराम ऐचरा, रामनिवास धोरू, रामरतन सींगड़, गंगाविशन भादू, रामस्वरूप मांजू, ओमप्रकाश लोल सहित कई वक्ताओं ने संबोधित किया।

धर्मसभा के बाद हजारों लोग रावण चबूतरा से 12 वी रोड़, शनिश्चर जी का थान, जालोरी गेट, सोजती गेट होते हुए कलेक्टर कार्यालय तक रैली के रूप में गए। कलेक्टर को राष्ट्रपति व राज्यपाल के नाम ज्ञापन दिया। रैली में लोग हाथों में पर्यावरण सरंक्षण, प्राणी सरंक्षण, जीव दया, 29 नियम व शहीदों के नाम लिखी तख्तियों लिए चल रहे थे। रैली में पधारे लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था देवेन्द्र बूड़िया के द्वारा की गई थी। धर्मसभा व रैली में व्यवस्था बनाये रखने के लिए अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवक दल के सेवकों के साथ-साथ राजेश बिश्नोई मानद् निदेशक आदर्श क्लासेज, ओमप्रकाश सिदाणी, जेताराम जगुवाणी, ओमप्रकाश जाणी डाबड़ी, खम्मूराम खीचड़, इत्यादि की सेवक दल टीमों ने भी सहयोग किया।

धर्मसभा व रैली शांतिपूर्ण व पूर्ण व्यवस्थित रूप से सम्पन्न हुई, जिसके लिए जिला सभा जोधपुर की टीम व सभी संस्थाओं के सदस्य बधाई के पात्र है। विशाल धर्मसभा व रैली के दबाव का ही परिणाम हैं कि पत्रिका प्रकाशित होने तक राजस्थान सरकार ने सलमान शिकार प्रकरण में सुप्रीम कोर्ट में अपील दायर करने का निर्णय ले लिया है।

– **मूलाराम लोळ,** जोधपुर

जोधपुर

शहीदों की याद में खेजड़ली मेला

राज्य के वन एवं पर्यावरण मंत्री राजकुमार रिणवा ने सलामन खान के हिरण शिकार की घटना पर कहा कि कुछ लोग इतने ताकतवर हो गए हैं कि जीव को कुछ नही समझते। इन लोगों को क्या हो गया? अब सरकार ऐसे व्यक्ति के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाएगी। वे 12 सितम्बर, 2016 को खेजड़ली राष्ट्रीय पर्यावरण संस्था एवं अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा की ओर से यहाँ खेजड़ली में 363 शहीदों की स्मृति में आयोजित मेले में संबोधित कर रहे थे। मंत्री ने दावा किया कि इस साल सरकार ने सवा चार करोड़ पौधे लगाने के लक्ष्य को छू लिया है। खेजड़ी को प्रदेश में पनपाने के लिए तीन करोड़ रुपये के बीज बीकानेर में तैयार किए गए हैं। इसका सभी जगह वितरण होगा। उन्होंने खेजड़ली शहीद स्मारक पर वन विभाग की एक नर्सरी खोलने की घोषणा भी की। साथ ही इस स्मारक को राष्ट्रीय धरोहर की श्रेणी में शामिल करने के लिए पुरजोर कोशिश का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर केंद्रीय ऊन विकास बोर्ड के अध्यक्ष जसवंतसिंह बिश्नोई ने कहा कि वन्यजीवों की रक्षार्थ प्राण त्यागने वाले शैतानसिंह को शौर्य पुरस्कार दिलाने की कवायद जारी है, लेकिन फाइल सरकार के स्तर पर अटकी है। उन्होंने वन्यजीवों के रक्षार्थ कांकाणी में सरकार द्वारा दी गई भूमि राजस्व रिकॉर्ड में लेकर वन विभाग को सौंपने की मांग की। संसदीय सचिव लादूराम बिश्नोई ने कहा कि संस्कारवान बच्चे समाज का उत्थान करते हैं। लूणी विधायक जोगाराम पटेल ने कहा कि सरकार जितना पैसा सालाना विकास पर खर्च करती है, उसका एक चौथाई हिस्सा अगर किसानों को दे दिया जाए तो प्रदेश में खेजड़ी बच जाएगी और इससे काश्तकार कमाई भी कर सकता है। उन्होंने खेजड़ली धाम के मेनगेट से मन्दिर परिसर तक डेढ़ किलोमीटर सड़क एमएलए फंड से बनवाने की घोषणा की।

स्वामी रामानंद ने 29 नियमों को जीवन उतारने और उप जिला प्रमुख गोपाराम बूड़िया ने नशा छोड़ने की अपील की। विधायक पब्बाराम बिश्नोई ने कहा कि जीवों को मारने वाले के खिलाफ सरकार को सर्वोच्च न्यायालय जाना चाहिए। सांचौर विधायक सुखराम बिश्नोई ने कहा कि वन विभाग की भर्ती में बिश्नोई समाज के लोगों को शामिल किया जाए। हीरालाल बिश्नोई ने वन और वन्यजीवों की रक्षा के लिए बूंद-बूंद पानी उपलब्ध करवाने, बिलाड़ा प्रधान सुमित्रा बिश्नोई ने कुरीतियों को मिटाने, लोहावट प्रधान भागीरथ बैनीवाल ने वन विभाग भर्ती में विश्नोई समाज का आरक्षण रखने और सेवानिवृत आर.ए.एस अधिकारी चूनाराम बिश्नोई ने शिक्षा पर जोर दिया। नगर निगम ने नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र सिंह सोलंकी ने कहा कि जवान देश की सीमा की रक्षा के लिए शहीद होते हैं और यहाँ वन और वन्यजीवों के लिए लोग बलिदान देते हैं। ऐसा राजस्थान में ही होता है। खेजड़ली पर्यावरण संस्था के महेन्द्र बिश्नोई ने रेस्क्यू सेंटर में डॉक्टर लगाने व पेड़ों को दीमक से बचाने सहित खेजड़ली शहीद स्मारक पर पार्क बनवाने की मांग की। कार्यक्रम में अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के राष्ट्रीय सचिव देवेन्द्र बुड़िया, महंत शंकरदास, साहबराम रोहज, शिवराज जाखड़, किशनाराम बिश्नोई, थानाराम बिश्नोई, राकेश माचरा, गुरविन्द्र बिश्नोई, सुनील बिश्नोई, अनिल बिश्नोई ने भी विचार रखे। संचालन जीव रक्षा सभा के संभाग अध्यक्ष श्याम खीचड़ ने किया।

हर पेड़ पर संदेश लिखा - खेजड़ली स्मारक परिसर में एक हजार से अधिक पेड़ों पर प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने, पानी बचाने, वन व वन्यजीवों की रक्षा करने, पौधे रोपने की अपील सहित विभिन्न श्लोकों की तख्तियाँ लगी हुई थी।

श्वानों से हिरणों को बचाने के उपाय पर जवाब नहीं दे पाए मंत्री - जिले में श्वानों द्वारा हिरणों का आए दिन किए जाने वाले शिकार के मामले में पूछने पर वन मंत्री जवाब ही नहीं दे सके। जब दैनिक भास्कर टीम द्वारा उनसे पूछा गया कि जिले में श्वानों द्वारा निरंतर हिरणों का शिकार किया जा रहा है और ग्रामीण क्षेत्रों में श्वानों की संख्या बढ़ गई है, इसे रोकने के क्या उपाय किए गए हैं? इस पर मंत्री रिणवा ने जवाब दिया कि प्रकृति में हर पशु को जीने का हक है। वह अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करता है, लेकिन उन्होंने जोधपुर का जवाब देने के बजाय तालछापर का हवाला देते हुए कहा कि वहाँ पर आठ-आठ फीट ऊँची फेंसिंग करवाई गई है, ताकि हिरणों का शिकार नहीं हो सके। जब उन्हें जोधपुर के लिए ऐसा करने के बारे में पूछा गया तो वे जवाब नहीं दे सके। उन्होंने शहर व मंडोर रेंज में वन भूमि पर हो रहे अतिक्रमण मामले में कहा कि ऐसा काफी समय से चल रहा है। इसकी शिकायत उनके पास भी आई है, वनभूमि पर अतिक्रमण करने और करवाने वाले दोनों खुश हो रहे हैं तो भले ही हों, लेकिन उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी और वन भूमि से अतिक्रमण हटाने के लिए अभियान चलाया जाएगा।

साभार - दैनिक भास्कर

सिरसा

बिश्नोई मंदिर स्थापना दिवस समारोह

श्री गुरु जम्भेश्वर मन्दिर व धर्मशाला, सिरसा के 42वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित सात-दिवसीय जाम्भाणी हरि कथा ज्ञान यज्ञ 13 सितम्बर, 2016 के मुख्य कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ। 7 सितम्बर से 12 सितम्बर तक प्रतिदिन दोपहर बाद 1 बजे से 4 बजे तक लालासर साथरी से आए कथा-वाचक आचार्य सच्चिदानन्द जी के मुखारविन्द से उपस्थित जन समूह जाम्भाणी हरि-कथा व प्रवचन सुनते रहे। स्वामी जी ने बिश्नोई जनों को 29 नियमों पर चलने व सबदवाणी अनुसार अपना जीवन यापन करने की नसीहत दी। 12 सितम्बर के खेजड़ली शहीदी दिवस के अवसर पर मन्दिर प्रांगण में वृक्षारोपण का कार्यक्रम रहा। सांय 5 से 8 बजे तक "जीव दया पालणी, रूंख लीला नहि घावै" विषय पर भाषण प्रतियोगिता व संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम 286 वर्ष पूर्व इसी दिन वृक्षों की रक्षार्थ शहीद होने वाले 363 नर-नारियों को दो मिनट का मौन रखा कर श्रद्धांजलि दी गई। प्रतियोगिता-संगोष्ठी में विभिन्न संस्थाओं में पढ़ने वाले नजदीक व दूर से आये समाज के विद्यार्थियों ने भाग लिया, इसमें ज्यादातर छात्र व छात्राएँ वो थीं जिन्होंने विगत वर्षों में जाम्भाणी संस्कार शिविरों में हिस्सा लिया था। प्रतियोगिता में सभी विद्यार्थियों ने विषय से सम्बन्धित सभी मुद्दों पर विचार रखे।

निर्णायक मण्डल में सभा सचिव ओ.पी. बिश्नोई के अतिरिक्त सेवा निवृत प्राचार्य इंद्रजीत व सेवा निवृत खण्ड शिक्षा अधिकारी मनुदत्त कड़वासरा थे। पूर्व छात्र मोहित ईशरवाल ने भी व्यवस्था सम्भालने में सहयोग किया। प्रतियोगिता में डॉ. सविता फुरसाणी प्रथम रहीं जबकि द्वितीय स्थान पर संयुक्त रूप से उज्ज्वल डूडी, मोहित गोदारा, कु. सुमन मांझू व कु. पूजा भादू रही, तृतीय स्थान पर शुभम काकड़ रहा। स्वामी कृष्णानंद जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी के अतिरिक्त संगोष्ठी में जाम्भाणी साहित्य अकादमी के कोषाध्यक्ष श्री आर.के. बिश्नोई व श्री संदीप धारणियां ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, मुकाम के सचिव श्री सोम प्रकाश सीगड़, जिला शाखा प्रधान श्री रिछपाल बैनीवाल, हरियाणा बिश्नोई जीव रक्षा समिति के सचिव व डबवाली सभा सचिव श्री इंद्रजीत धारणियां, कार्यकारिणी सदस्यों में श्री देशकमल सीगड़, श्री हनुमान गोदारा, सह सचिव श्री भूप सिंह कस्वां, श्री जगदीश खदाव, श्री कृष्ण लाल बैनीवाल, श्री पवन कुमार कड़वासरा, श्री हवा सिंह बैनीवाल तथा सैंकड़ों की संख्या में स्त्री-पुरुष व विद्यार्थी उपस्थित थे। डॉ. मनीराम सहारण ने संगोष्ठी का संचालन किया।

12 सितम्बर की ही रात्रि को जागरण का कार्यक्रम रहा जिसमें स्वामी सच्चिदानन्द जी ने व संगीत मण्डली ने आरती, साखी भजनों व प्रवचन द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध रखा। 13 सितम्बर को प्रात: सरसाईनाथ डेरे के महन्त बाबा सुन्दराईनाथ ने ध्वजारोहण किया। तदोपरान्त हवन-यज्ञ व पाहल का आयोजन हुआ। प्रात: 10 बजे से 12 बजे तक मुख्य कार्यक्रम रहा जिसमें ऋषिकेश से पधारे जाम्भाणी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष स्वामी कृष्णानंद जी मुख्य अतिथि थे। सरल व सहज स्वभाव के स्वामी कृष्णानंद जी ना केवल मुख्य समारोह में रहे बल्कि हर रोज वाली हरि कथा व प्रवचनों में भी शिरकत करते रहे तथा प्रतिदिन अपने आशीर्वचन श्रोताओं को देते रहे। मुख्य समारोह की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री खेम चन्द बैनीवाल ने की। मंच पर कथा-वाचक स्वामी सच्चिदानन्द के अतिरिक्त विशिष्ट अतिथि के रूप में हिसार सभा प्रधान श्री प्रदीप बैनीवाल, चौ. सुधीर गोदरा, नीमड़ी व हनुमानगढ़ की ए.एस.पी. श्रीमती निर्मला देवी थी। अन्य अतिथिजनों में अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवक दल प्रधान श्री राम सिंह कस्वां, जिला सेवक दल प्रधान श्री कृष्ण सीगड़, जिला जीव रक्षा समिति प्रधान श्री सुरेन्द्र गोदारा, जिला गऊशाला प्रधान श्री योगेश सीगड़ आदि महानुभाव थे। सर्वप्रथम बिश्नोई सभा, सिरसा की तरफ से पधारे संत-जनों व अतिथिजनों का स्वागत किया गया। सभा सचिव श्री ओ.पी. बिश्नोई ने मंच संचालन किया व सभा का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया व गतिविधियों की जानकारी दी। अतिथिजनों के अतिरिक्त नागपुर (फतेहाबाद) से छात्र कु. सुमन मांझू ने भी अपने विचार रखे तथा सभी ने उनकी मुक्त कण्ठ से प्रंशसा की। इस असवर पर सभा उपाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश पूनिया, कोषाध्यक्ष श्री राज कुमार बैनीवाल, सह सचिव श्री जगतपाल कड़वासरा अन्य पदाधिकारी व कार्यकारिणी सदस्यों के अतिरिक्त हिसार से डॉ. मदन लाल खीचड़, श्री कृष्ण लाल काकड़ तथा दूर नजदीक से आये संस्थाओं के पदाधिकारी अन्य महानुभाव उपस्थित थे।

समारोह में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त विद्यार्थियों व उल्लेखनीय

कार्य करने वाले प्रतिष्ठित जनों को सम्मानित किया गया। मैट्रिक स्तर पर अव्वल स्थान प्राप्त विद्यार्थियों में कु. ईशा लेघा, कु. पल्लवी, कु. शिक्षा बैनीवाल, कु. मनीषा रानी, हरसूल, कु. चेतना बैनीवाल, रोहित कुमार, कु. चेतना गोदारा, कु. प्रियंका, कु. मनीषा, कु. अंकिता व हर्ष थे। बारहवीं कक्षा वर्ग में अंकुर, कु. पूजा कड़वासरा, कनीष कुमार, पराग बिश्नोई, कु. रेणुका व विनीत थे। स्नातक वर्ग में कु. शिप्रा गोदरा व कु. सिलोचना थी। मोहित जोहर ने गेट में अव्वल स्थान प्राप्त किया जबकि कु. सविता फुरसाणी व कु. सुमन लता को डॉक्ट्रेट डिग्री प्राप्त करने पर सम्मानित किया गया। खेल-कूद व योगा में विनोद कुमार गोदारा सम्मानित हुए।

मुकाम शिविर में सर्वश्रेष्ठ रहे उज्ज्वल डूडी व सिरसा शिविर में सर्वश्रेष्ठ रही कु. गायत्री तथा संस्कार शिविर करने में कु. रविना धारणियां व कु. अन्जु बैनीवाल को सम्मानित किया गया। पूर्व संध्या में खेजड़ली शहीदी दिवस पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में अव्वल स्थान प्राप्त विद्यार्थी भी सम्मानित हुए। समाज सेवा व उल्लेखनीय कार्य के लिए सम्मानित होने वालों में डॉ. सुरेश बिश्नोई, सर्वश्री मदन लाल (एडवोकेट), पवन कुमार कड़वासरा (एडवोकेट), रामचन्द्र बैनीवाल, अशोक सिंगल (एडवोकेट), संजय गोयल (एडवोकेट), बजरंग दास, अमर सिंह (लार्ड शिवा कॉलेज), जनकराज (आर.पी. स्कूल) व श्री हनुमान गोदारा रूपाणा बिश्नोइयान। समारोह में उपरोक्त के अतिरिक्त सभा कार्यकारिणी से श्री भूपसिंह सीगड़, श्री हनुमान सिहाग, श्री गोपीराम देहडू, श्री रूली राम गोदारा, श्री अमर सिंह पूनियां, श्री अजमेर बैनीवाल, श्री सुशील बैनीवाल, सेवक दल से श्री पृथ्वी सिंह गोदारा, श्री सुआराम कड़वासरा, सेवा भारती, सुनहरी शाम, रेलवे, बनवासी कल्याण आश्रम जैसी संस्थाओं के प्रतिनिधि, शहर, गाँवों व ढाणियों से आये हजारों की संख्या में स्त्री-पुरुष व बच्चे उपस्थित थे। इस अवसर पर मन्दिर परिसर में एक नि:शुल्क चिकित्सा शिविर भी लगाया गया। डॉ. सुरेश बिश्नोई व उनकी टीम ने सेवाएं दीं। अन्त में सभा प्रधान श्री खेम चन्द बैनीवाल ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया। सहभोज ग्रहण के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

डॉ. मनीराम सहारण, सिरसा, मो. 98960-57532

चौधरीवाली में खेजड़ली शहीदी दिवस पर पौधारोपण

गांव चौधरीवाली, जिला हिसार में शहीद भगत सिंह युवा मंडल ने खेजड़ली शहीदी दिवस बड़ी धूम-धाम से मनाया, जिसमें बिश्नोई समाज के लोग एकत्रित हुए। प्रधान अशोक जंवर ने बताया कि इस मौके पर समाज के लोगों ने वृक्षारोपण कर शहीदों को श्रद्धांजली अर्पित की। संवत् 1787 भादो सुदी 10 वीं को खेजड़ली गांव में खेजड़ी के वृक्षों की रक्षा करते हुये अमृतादेवी के नेतृत्व में 363 बिश्नोई स्त्री पुरूष एवं बच्चो ने अपना बलिदान दिया जो कि विश्व में एक अनूठा उदाहरण है। उपप्रधान विष्णु मांझु ने बताया कि 10 सितंबर को रात की गुरु जंभेश्वर भगवान का एक विशाल जागरण का आयोजन किया गया जिसमें आस-पास के क्षेत्र के अनेक श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रदीप जी बैनीवाल प्रधान बिश्नोई सभा एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री राजेंद्र खिलेरी सरपंच खारा खेड़ी ने की। इस मौके पर स्वामी जी व मुख्य अतिथियो ने युवा मण्डल की वार्षिक पत्रिका का विमोचन किया। स्वामी जी ने कहा कि पर्यावरण की रक्षा के लिए हमें अधिक से अधिक पौधे लगाने चाहिए स्वच्छ पर्यावरण से ही मानव जीवन स्वस्थ रह सकता है मनुष्य को हर जीव पर दया भाव रखना चाहिए और किसी को मन वचन कर्म से दुखी नहीं करना चाहिए। समारोह के दौरान रात्रि जागरण में सुबह हवन के बाद गांव में पौधारोपण अभियान चलाया गया जिसका शुभारंभ स्वामी राजेंद्रानंद जी व स्वामी रामानंद जी ने कहा कि आज बड़े-बड़े वैज्ञानिक पर्यावरण की सुरक्षा के लिए पेड़ पौधों को जरूरी बता रहे हैं लेकिन यही बात गुरु जंभेश्वर भगवान ने लगभग 550 साल पहले बताई थी। शिक्षा मानव मात्र के कल्याण के लिए हैं और हमें उनका अनुसरण करना चाहिए। उन्होंने कहा कि खेजड़ली दिवस के उपलक्ष में शहीद भगत सिंह युवा मंडल चौधरी वाली द्वारा चलाया गया पौधारोपण अभियान सराहनीय है। युवा वर्ग को ऐसे सामाजिक एवं जन हित के काम करते रहना चाहिए। पर्यावरण एवम् जीव रक्षा के क्षेत्र मे सराहनीय कार्य करने वालो को युवा मण्डल की ओर से स्मृति चिन्ह दिए गए सराहनीय इसके लिए सभी युवा बधाई के पात्र हैं इससे पहले गांव पहुंचने पर शहीद भगत सिंह युवा मंडल के सलाहकार अनिल माझु, संदीप जंवर, आत्माराम, विनोद कुमार, कीमती लाल, जयप्रकाश, धर्मपाल, विष्णु झोदकरण, साहिल, मोहित, अजय, विकास कुमार, निशु, महेन्द्र भादू ने गुरुजी व आये हुए अतिथियों का स्वागत किया

आर.ए.एस प्रारम्भिक परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी जो आर्थिक रूप से कमजोर या प्रतिभावान हैं उनके लिए
'आदर्श क्लासेज' की तरफ से 100 विद्यार्थियों को आर.ए.एस. मुख्य परीक्षा की निःशुल्क कोचिंग की व्यवस्था

राजेश विश्नोई
(मानद् निदेशक)
आदर्श क्लासेज, जोधपुर

RAS
मुख्य परीक्षा

फॉर्म आवेदन की अंतिम तिथि : 26 सितम्बर
फॉर्म आदर्श क्लासेज, जोधपुर की वेब साईट (www.adarshclasses.in/.com) से डाउनलोड किये जा सकते हैं तथा सम्पूर्ण भरा हुआ फॉर्म स्केन करके rasadarshstudents@gmail.com पर मेल करें।

मुख्य परीक्षा तिथि-26 व 27 दिसम्बर, 2016

• दिल्ली व राजस्थान की सर्वाधिक प्रमाणित व अनुभवी विषय विशेषज्ञों की टीम द्वारा गहन अध्यापन • प्रत्येक अभ्यर्थी से विषय विशेषज्ञों का सीधा संवाद • प्रतिदिन 15, 50 व 200 शब्दों के उत्तर लेखन का मौलिक व विश्लेषणात्मक अभ्यास • चारों प्रश्न पत्रों की सर्वोत्कृष्ट तैयारी • गुणवत्तामूलक प्रिंटेड नोटस् • RPSC पैटर्न पर 18 टेस्ट सीरीज का आयोजन • उत्तर लेखन की जाँच चयनित विशेषज्ञों द्वारा एवं प्रत्येक प्रतियोगी के लेखन की निदानात्मक एवं उपचारात्मक जाँच

• 28 सितम्बर से भारतीय अर्थव्यवस्था द्वारा अरूण अरोड़ा सर की कक्षाओं से नया बैच प्रारम्भ
• प्रतिदिन 10 से 12 घण्टे वातानुकूलित कक्षाएँ • 800+ घण्टों का कक्षा कार्यक्रम • सीमित सीटें • छात्रावास सुविधा उपलब्ध

राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ परिणाम देने वाली टीम द्वारा अध्यापन अब जोधपुर में

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को 12 खण्डों में विभाजित किया गया हैं, अभ्यर्थी अपने चयनित खण्ड के लिए तिथि एवं समयानुसार प्रवेश लेकर अध्ययन कर सकते हैं।

1. भारतीय अर्थव्यवस्था (1st Paper) वैश्विक आर्थिक मुद्दे एवं प्रवृत्तियाँ (3rd Paper) (द्वारा: अरूण अरोड़ा सर (पतंजलि-दिल्ली)) 28 सितम्बर से 3 अक्टूबर तक (6 दिन x 10 घंटे = 60 घंटे) शुल्क : ₹ 4000	2. भारत व विश्व का भूगोल (1st Paper) (द्वारा: संजीव श्रीवास्तव (संधान IAS-दिल्ली)) 4 से 7 व 14 से 16 अक्टूबर तक (7 दिन x 10 घंटे = 70 घंटे) शुल्क : ₹ 4000	3. सामान्य एवं प्रशासनिक प्रबन्धन व प्रशासनिक नीति शास्त्र (3rd Paper) (द्वारा : राजीव रंजन सर) 8 से 13 अक्टूबर तक (6 दिन x 10 घंटे = 60 घंटे) शुल्क : ₹ 5000	4. भारत व विश्व का इतिहास (1st Paper) (द्वारा: सुजीत सर (समेध IAS, पतंजलि-दिल्ली)) 17 से 24 अक्टूबर तक (8 दिन x 10 घंटे = 80 घंटे) शुल्क : ₹ 4000
5. सामान्य विज्ञान व प्रौद्योगिकी (2nd Paper) (द्वारा: कीर्तिभूषण यादव सर (G.S. World-दिल्ली)) 25 से 28 अक्टूबर व 2 से 7 नवम्बर तक (10 दिन x 10 घंटे = 100 घंटे) शुल्क : ₹ 4000	6. भारतीय संविधान, राजनीतिक व्यवस्था एवं शासन (1st Paper) (द्वारा : वी.के. त्रिपाठी) 12 से 14 व 19 से 20 नवम्बर तक (5 दिन x 10 घंटे = 50 घंटे) शुल्क : ₹ 4000	7. वर्तमान संवेदनशील व सामाजिक मुद्दे, विदेश नीति, राष्ट्रीय एकता व आंतरिक सुरक्षा (3rd Paper) (द्वारा: जे.के. पूनीया सर (RPS)) 15 से 18 व 21 से 26 नवम्बर तक (10 दिन x 10 घंटे = 100 घंटे) शुल्क : ₹ 4000	8. राजस्थान का भूगोल, अर्थव्यवस्था, इतिहास, कला व संस्कृति (1st Paper) राजस्थान में विकास की संभावनाएं संसाधन एवं योजनाएं (3rd Paper) (द्वारा: जाकिर सर, रंगा सर, मोनी सर, मैनी सर, डॉ. मुकेश शर्मा व निर्भय सर) 26 नवम्बर से 1 दिसम्बर तक (7 दिन x 12 घंटे = 84 घंटे) शुल्क : ₹ 3000
9. भाषाएँ (Complete 4th Paper) अंग्रेजी, हिन्दी, राजस्थानी (द्वारा: गजेन्द्र दवे सर, ममता मैडम, डॉ. सतपाल जाँगिड़ सर) 2 से 7 दिसम्बर तक (6 दिन x 12 घंटे = 72 घंटे) शुल्क : ₹ 5000	10. रिजनिंग व गणित (2nd Paper) (द्वारा: इंजि. अजीत जाणी व महेन्द्र गोयल) 8 से 12 दिसम्बर तक (5 दिन x 12 घंटे = 60 घंटे) शुल्क : ₹ 4000	11. राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था (1st Paper) (द्वारा: डॉ. अभयसिंह राजपुरोहित) 13 से 14 दिसम्बर तक (2 दिन x 10 घंटे = 20 घंटे) शुल्क : ₹ 2000	12. समसामयिकी घटनाएं, योजनाएं व निबन्ध कौशल (3rd & 4th Paper) (द्वारा: पुनिया सर, रंगा सर, दवे सर, ममता मैडम) 15 से 18 दिसम्बर तक (4 दिन x 12 घंटे = 48 घंटे) शुल्क : ₹ 4000

सम्पूर्ण टेस्ट पेपर्स को 2 अलग-अलग भागो में विभाजित किया गया है (1) खण्ड के आधार पर 10 टेस्ट पेपर्स एवं (2) 8 मॉडल टेस्ट पेपर्स

11 खण्ड के आधार पर टेस्ट का आयोजन

1. भारतीय अर्थव्यवस्था एवं आर्थिक मुद्दे	04 अक्टूबर
2. सामान्य एवं प्रशासनिक प्रबन्धन एवं नीति शास्त्र	14 अक्टूबर
3. भारत एवं विश्व का भूगोल	17 अक्टूबर
4. भारत एवं विश्व का इतिहास	25 अक्टूबर
5. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	08 नवम्बर
6. भारतीय संविधान एवं राजनीतिक व्यवस्था	21 नवम्बर
7. वैश्विक परिदृश्य एवं भारत के अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध	27 नवम्बर
8. राजस्थान सामान्य ज्ञान	02 दिसम्बर
9. रिजनिंग व गणित	13 दिसम्बर
10. निबन्ध कौशल	19 दिसम्बर

8 मॉडल टेस्ट पेपर का आयोजन

1. सम्पूर्ण चतुर्थ प्रश्न-पत्र	08 दिसम्बर
2. सम्पूर्ण द्वितीय प्रश्न-पत्र	13 दिसम्बर
3. सम्पूर्ण प्रथम प्रश्न-पत्र	15 दिसम्बर
4. सम्पूर्ण तृतीय प्रश्न-पत्र	20 दिसम्बर
5. सम्पूर्ण तृतीय व चतुर्थ प्रश्न-पत्र	21 दिसम्बर
6. सम्पूर्ण प्रथम व द्वितीय प्रश्न-पत्र	22 दिसम्बर

3 या उससे अधिक खण्ड में अध्ययन करने वाले अभ्यर्थियों के लिए टेस्ट निःशुल्क एवं अन्य अभ्यर्थियों के लिए शुल्क ₹ 4000

आर्थिक रूप से कमजोर व प्रतिभावान 100 विद्यार्थियों के लिए **निःशुल्क**

101 से 200 विद्यार्थियों के लिए **25000/-**

201 से 300 विद्यार्थियों के लिए **35000/-**

AN ISO 9001:2008 CERTIFIED INSTITUTE
सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता तथा परिणाम को समर्पित संस्थान

आदर्श क्लासेज™

सिटी बस स्टेण्ड, जालोरी गेट
चौराहा, जोधपुर (राज.)
Ph.: 0291-2626226,
9828268309, 9828860121

e-mail:- adarashclasses@gmail.com • Web.:- adarshclasses.in

CreativePoint

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2014-2016
L/WPP/HSR/03/14-16

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

VIGYAN DHARA

A Modern Science Gurukul for IIT/NEET

NEET/IIT-JEE

11th & 12th

2 Yrs. Residential Program

HOSTEL FACILITY

TRANSPORT FACILITY

Result NEET-2016

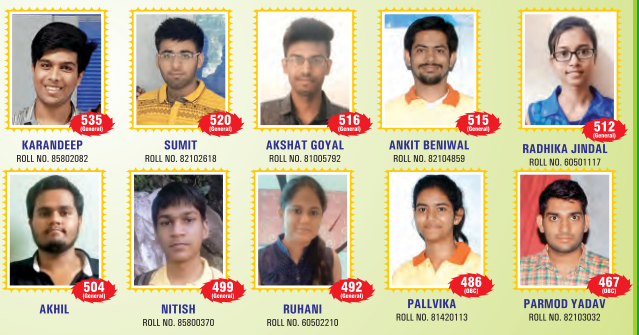

197-C, LAJPAT NAGAR, HISAR ✆ 9812073815-16

KRISHNA CLASSES

A Venture of VIGYAN DHARA

हरियाणा का सर्वश्रेष्ठ कोचिंग संस्थान

HSSC | HTET | VLDD | B.Sc.Agri. | AIPVT

RESULT-2016

PARMOD YADAV
Roll. No. 14663
B.Sc. Agri. (4Yr)

NEERU
Roll. No. 2503
B.Sc. Agri. (6Yr)

SUMIT
Roll. No. 1413
VLDD

DIRECTORS

Dr. Surender Poonia

Mr. N.S. Panghal

Mr. Raman Sharma

Rishi Nagar, Hisar.
Mob : 97280-82170-72

DOREX Printers 9896011117

मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 अक्तूबर, 2016 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।